thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 23 नवम्बर 2014

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 23 नवम्बर, 2014 से 29 नवम्बर, 2014

मा.शु. 01 – ● वि० सं० – 2070 ● वर्ष 78, अंक 132, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

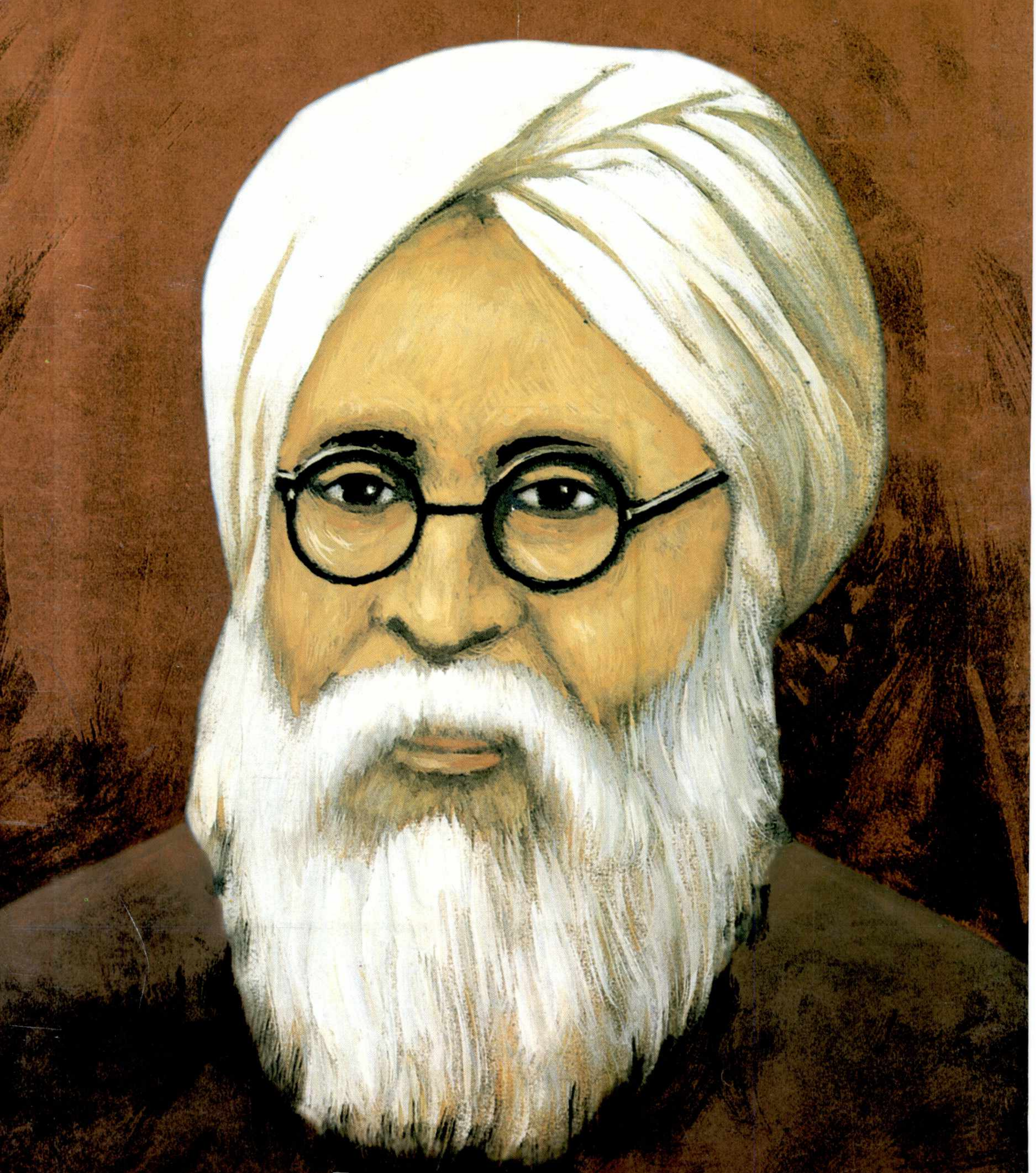

● त्याग तप व सेवा का संगम... 7 ● काल–पृष्ठ पर जगमगाता हस्ताक्षर... 12 ● ध्येयनिष्ठ तपोव्रती... 20

● स्थित–प्रज्ञ महात्मा... 28 ● स्मृति को एक श्रद्धांजलि... 32 ● त्यागमूर्ति महात्मा... 36 ● शिष्ट पंक्ति के व्यक्तित्व...44

thearyasamaj.org

DAV PUBLIC SCHOOL
SAHIBABAD

BRITISH COUNCIL | International School Award 2012-2015

In Collaboration with
UNIVERSITY of CAMBRIDGE International Examinations
CAMBRIDGE INTERNATIONAL CENTRE

Our Vision

- To impart spectacular & holistic education for a better tomorrow with affluent legacy of the orient in order to engender model Indian citizen for the transmission of global knowledge and attitudes having harmonious blend of Vedic trace & scientific approach.

Transforming Lives, Serving the Nation

Achievements

- Schools Green Award (Lotus Award) from Singapore Environment Council, Singapore.
- International Schools Award by British Council, New Delhi
- International School Award for implementing International Qualification through QAI
- Award for Best Performance in NCFE National Financial Literacy Test
- Sanitation Award (Blue Rating) by CBSE,New Delhi

Facilities

- Swimming Pool
- Lawn Tennis Court
- 2 ½ acres Playground
- Air Conditioned Classrooms
- Well Stocked Libraries
- Hi-tech Laboratries
- Trained full time Counselor

Sector-2, Rajender Nagar, Sahibabad, Tel. 91-120-2631202, 2631206, 4284206,4284208 Fax: 2631079

with best Compliments

thearyasamaj.org

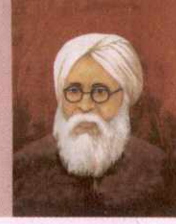

दिव्य वचन का रक्षा-कवच

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

त्वष्टा नो दैव्यं वचः, पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः।
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो, दुष्टरं त्रामणं वचः।।

साम 266

ऋषिः **वामदेवः गौतमः**। देवता **बह्वः (त्वष्टा, पर्जन्यः, ब्रह्मणस्पतिः, अदितिः)**। छन्दः **बृहती।**

● **(त्वष्टा)** शिल्पी परमेश्वर, **(पर्जन्यः)** सद्विचार–वर्षक मन (और) **(ब्रह्मणस्पतिः)** ज्ञान का अधिपति आत्मा **(नः)** हमारे प्रति **(दैव्यं वचः)** दिव्य वचन (प्रेरित करे)। **(अदितिः)** वाणी **(नु)** शीघ्र **(पुत्रैः)** पुत्रों सहित (और) **(भ्रातृभिः)** भ्राताओं सहित **(नः)** हमारी **(पातु)** (दिव्य वचन द्वारा) रक्षा करे। **(त्रामणं)** रक्षक **(वचः)** दिव्य वचन **(दुष्टरं)** दुस्तर कवच के समान होता है।

● दिव्य वचन द्वारा प्राप्त रक्षा सचमुच दुर्भेद्य कवच होती है। जब कोई महापुरुष निश्छल, सात्त्विक, दिव्य वचन बोलकर हमें सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं, तब हम अवश्य उनके वचनों से प्रभावित होते हैं। तो फिर हम अपने अन्दर से ही दिव्य वचनों को क्यों न सुनें? सर्वप्रथम हमारे हृदयों में बैठे हुए त्वष्टा प्रभु निरन्तर दिव्य वचन बोल रहे हैं, जो हमारा काया–पलट करने में समर्थ हैं। वे अनोखे शिल्पकार हैं। जैसे शिल्पी बेडौल लकड़ी को गढ़– छीलकर एक कलापूर्ण सुन्दर मंजूषा तैयार कर देता है जो हमारे स्वर्णालंकार रखने के काम आती है, वैसे ही त्वष्टा प्रभु अपने वचनों के बसूलों से हमारे दुर्गुण, दुष्कर्म, दुष्ट स्वभाव आदि को काट–छीलकर हमें सुन्दर बना देते हैं और हमारे अन्दर सद्गुणों के हिरण्यालंकार निहित कर देते हैं। हम चाहते हैं कि उन त्वष्टा देव के दिव्य वचन हमें सुन्दर बनाने में सदा सक्रिय रहें। हमारे अन्दर अवस्थित दूसरा देव 'ब्रह्मणस्पति' अर्थात् ज्ञान का अधिपति आत्मा है, जो हमारे प्रति दिव्य वचनों को प्रवाहित करता रहता है। पर हम उसके दिव्य वचनों को अनसुना करके बाह्य वचनों को सुनने में ही लगे रहते हैं। आत्मा के दिव्य वचनों को ही सन्त लोगों ने अन्तरात्मा की आवाज नाम दिया है। यह अन्तरात्मा की आवाज या आत्मा के दिव्य वचन भी हमें सदा सुनाई देते रहें। हमारे अन्दर स्थित तीसरा देव पर्जन्य अर्थात् मन है, वह भी हमें दिव्य वचन सुनाये। वह तो हमारे ऊपर दिव्य सन्देशों की झड़ी लगा सकता है। सात्त्विक मन में दिव्य सत्त्व–वृत्तियाँ प्रेरित करने की अद्भुत शक्ति है। वह दिव्य विचार–सरणि के द्वारा हमें देव बना सकता है। चौथी हमारे अन्दर वाणी–रूपिणी 'अदिति' देवी विराजमान है। वह भी दिव्य वचनों को ही बोले, जिससे समाज में दिव्यता का वातावरण बने। हमारी वाणी दिव्य होकर पुत्र, भ्राता आदि परिवार के सब सदस्यों सहित हमारी रक्षा करती रहे। अदिव्यवाणी परस्पर द्वेष उत्पन्न कर सुरक्षा का वरदान देती है। अतः आओ, अपने अन्दर विद्यमान इन चारों देवताओं के द्वारा हम दिव्य वचन के अभीष्ट वर प्राप्त कर पूर्ण सुरक्षित हो जाएँ। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

ओ३म्
आर्य जगत्

सप्ताह रविवार, 23 नवम्बर 2014 से 29 नवम्बर 2014

दो रास्ते

''दुःख आनी जानी परिस्थिति है'' यह बता रहे थे स्वामी जी। इस सन्दर्भ में कहा कि मनुष्य तो आत्मा है और नित्य सत्ता है। ऐसी सूरत में दुःख में घबराहट कैसी? निराशा किसलिए? और फिर दुःख, कष्ट, क्लेश सब के सब मनुष्य के भले के लिये है। यदि दुःख होता ही नहीं तो लोग विलास को ही अपना जीवन बना लेते। यह सारी चर्चा 'सूर्य' शब्द की व्याख्या में कही जा रही थी।

सूर्य की एक यह भी विशेषता है कि गंदगी के कीटाणुओं को नष्ट कर देता है। अतः मनुष्य को भी बुराई को दूर करना है उसमें लिप्त नही होना।

स्वामी जी ने कहा कि सूर्य के अनेक गुण है और इसका हमारे देश की संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है। वेदों से अनेकों मंत्र सुनाकर उन्होंने अपनी इस बात की पुष्टि की। 'सूर्य नमस्कार' नामक आसन का भी उल्लेख किया और इससे होने वाले लाभ भी गिनाये।

इसके बाद सूर्य के बारह नामों का उल्लेख करते हुए–मित्र, रवि, सूर्य, भानु और खग शब्दों पर चर्चा की–।

अब आगे........

परन्तु सब लोग तो जागते नहीं भाई! सूर्य के निकलने पर भी नहीं जागते। सूर्य की तो क्या, घरवालों की आवाज भी उन्हें सुनाई नहीं देती। माँ कहती है– "बेटा! उठ, सूर्य निकल आया है।" बेटा आँखे मूंदे–मूंदे उत्तर देता है– "सूर्य रात के बारह बजे निकल आए तो मैं क्या बारह बजे जाग उठूँगा?" पत्नी कहती है "श्रीमान् जी! उठिए, सवेरा हुआ, सूर्य निकल आया।" पति जी कहते हैं–"अरी! आज तो ऑफिस में छुट्टी है, सोने दे। सूर्य तो निकलता ही रहता है।"

छठा नाम है– 'पूषन' अर्थात् पालन करने वाला।

सातवाँ नाम है–'हिरण्यगर्भः' अर्थात् बल देनेवाला, शक्ति का भण्डार।

आठवाँ नाम है– 'मारीचि' अर्थात् रोगों को समाप्त करनेवाला। रोग उत्पन्न करने वाले कीटाणुओं को नष्ट करने वाला।

नवाँ नाम है– 'आदित्य' अर्थात् सबको अपनी ओर खींचने वाला।

दसवाँ नाम है– 'सविता', सबको जीवन और प्रेरणा देने वाला।

ग्यारहवाँ नाम है– 'अर्क' अर्थात् वह, जिसका आदर करना चाहिए, जिसे प्यार करना चाहिए।

और बारहवाँ नाम है– 'भास्कर' अर्थात् रोशनी देनेवाला। ये हैं सूर्य के बारह नाम और इनमें हर नाम एक संदेश देता है, सूर्य के एक–एक गुण को बतलाता है। ऐ इन्सान! तू यदि सूर्य की भाँति चमकना चाहता है, यदि श्रेय मार्ग पर चलता हुआ प्रेय मार्ग का सुख प्राप्त करना चाहता है तो सूर्य के गुणों को अपने अन्दर धारण कर।

इसमें एक नाम आया 'सविता'।

'सविता' परमात्मा की उस शक्ति को कहते हैं जिसकी प्रेरणा से यह सृष्टि अस्तित्व में आती है। कुछ नहीं था इस सृष्टि से पहले अंधेरा था सब ओर, घना अंधेरा था। कोई देखनेवाला नहीं था, दिखाई देनेवाला नहीं था। प्रकृति के परमाणुओं का अथाह समुद्र था और था परम ब्रह्म, परमपिता परमात्मा। तब परमात्मा की 'सविता' शक्ति से परमाणुओं के इस अथाह समुद्र में हलचल हुई। इस 'सविता' शक्ति से ही एक–के–बाद–एक सृष्टि के भिन्न–भिन्न भाग जाग उठे। 'महातत्त्व', 'अहंकार'–सूक्ष्म भूत, पंच भूत और तब दुनिया जाग उठी।

तुम्हारे अन्दर भी 'सविता' शक्ति है भाई, तो दूसरों को जगाओ, उन्हें ठीक रास्ते पर चलाओ।

मैं पिछले कई वर्षों में दुनिया के कई भागों में गया हूँ। दूर पूर्व–एशिया में गया, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, फ़िजी, मलयेशिया, हाँगकाँग, थाईलैण्ड, जापान आदि देशों में भी गया। हर स्थान पर मैंने देखा कि हमने चूंकि 'सविता' की भावना से काम नहीं लिया, उसका परिणाम कितना दुःखदायी हुआ है! मलयेशिया में बहुत बड़ी आबादी मुसलमानों की, परन्तु ये लोग सदा से ही मुसलमान नहीं थे। आज भी उनकी भाषा में अधिकतर शब्द संस्कृत के हैं। अपने नाम से पहले वे 'श्री'

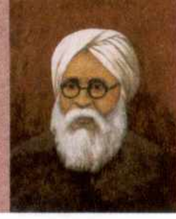

with best Compliments

The Biggest Women institution of North India,
Re-accredited A Grade with 3.83 (highest score in India) by NAAC,

HANS RAJ MAHILA MAHA VIDYALAYA, JALANDHAR

Declared Role Model College by NAAC Peer Team, Star College by GNDU
Recognized as College with Potential for Excellence by UGC

Courses Offered (2014-15)

Undergraduate Level

* B.M.M. (Bachelor of Multimedia)
* B.F.A. (Bachelor of Fine Arts)
* B.Sc. Fashion Designing
* B.D. (Bachelor of Design)
* B.Sc. Biotechnology
* B.Sc. (Med/Non-Med with Bio-Informatics)
* B.Sc. (Med/Non-Med with Food Sc. & Quality Control)
* B.Sc. (Med/Non-Med with Biotech)
* B.Sc. (Non-Medical)
* B.Sc. (Economics)
* B.Sc. (Computer Science)
* B.Sc. (I.T.)
* B.C.A.
* B.Com. (Prof.)
* B.Com. (Reg.)
* B.B.A.
* B.A.

Postgraduate Level

* M.A.
  English, Political Science, Hindi, Music Vocal, Music Instl.
* M.Com.
* M.Sc. Fashion Designing
* M.Sc. (Botany, Bioinformatics)
* M.Sc. (IT, Comp.Sc.)

PG Diplomas

* Cosmetology
* Garment Construction & Fashion Dsg.
* Computer Application
* Business Management
* Cyber Law and Information Security

UG Courses with Hons.

* English * Hindi * Sanskrit
* Pol. Sc. * Psychology * Music (Vocal)
* Commerce

ADD ON COURSES

Cosmetology, Fashion Designing, Interior Decoration, Office Automation & Web Designing, Applied Designing, Investment Management, Environment Protection, Computer Aided Accounting, Banking and Insurance, Bioinformatics, French Language, Aviation, Catering & Hospitality, Communication Skills, Anchoring, Reporting & News Reading

Vocational Subjects B.A/B.Sc.

Computer Application, Journalism & Mass Communication, Fashion Designing & Garment Construction, Cosmetology, Bioinformatics, Mass Communication & Video Production.

B.Vocational (UGC approved)

- Web Technology & Multimedia
- Banking and Financial Services

Community College (UGC approved)

- Advance Diploma in Fashion Designing

Highlights

Top positions in Univ. Results, **top positions in Sports**, Total free boarding and lodging for players, large number of **placements** for vocational courses, smart class rooms, Book Bank, Well equipped high tech library with **one lakh books** and **125 journals**, value based education & commendable discipline, state-of-art infrastructure, **Incentives** to the top players and to meritorious students, stipends & books, **550 Computers, International level Swimming Pool and Indoor Stadium**.

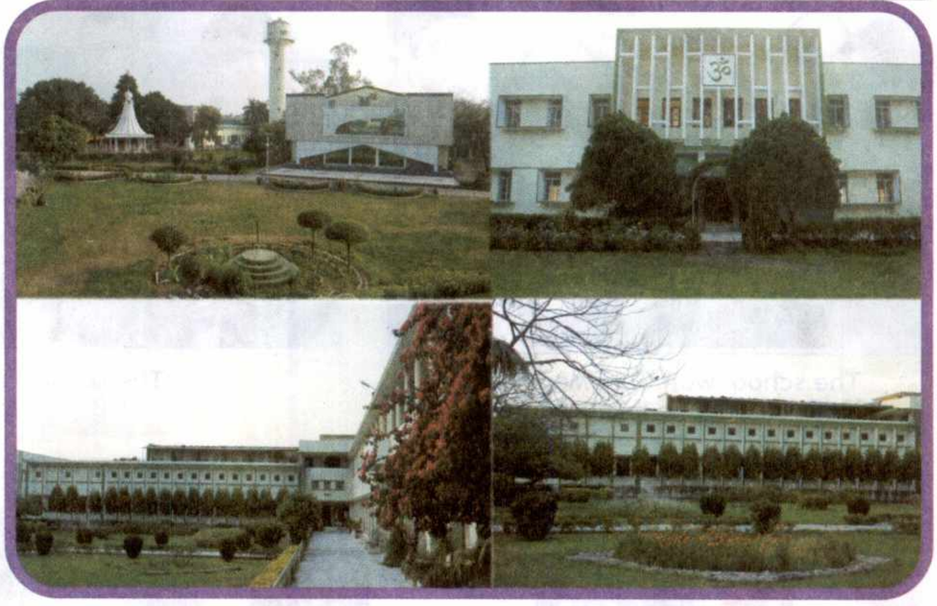

A fleet of Buses | Hostel with modern amenities | Hi-tech Labs & Auditorium | Wi-fi Campus | Video Conferencing facility | Heritage Village | HMV Campus TV

Dr. Rekha Kalia Bhardwaj
Principal

Ph: 0181-2253710, 2204198 Fax: 0181-2252436
E-mail: hmv_jal@yahoo.co.in Web:www.hrmmv.org

with best Compliments

ओ३म् DAV Public School

Lawrence Road, Amritsar 143001

Directly Managed by:
DAV CMC, Chitra Gupta Road, New Delhi

विद्या ददाति विनयम्

INSPIRING MENTORS

Arya Ratna Sh. Punam Suri
President, DAV CMC, New Delhi.
Chairman, DAV Public School

Sh. Ravinder Kumar
Secretary, DAV CMC, New Delhi
Vice-Chairman, DAV Public School

Sh. J.P. Shoor
Director, PS-I, Aided Schools, DAV CMC, New Delhi

Dr. Mrs. Neelam Kamra
Principal, BBK DAV College for Women, Amritsar.
Regional Director, Asr Zone

Dr. Sh. K. N. Kaul
Principal, DAV College, Amritsar
Manager, DAV Public School

Dr. Mrs. Neera Sharma
Principal

Revered Maharishi Dayanand Saraswati said that the main aim of education is to create human awareness so that to understand the difference between the truth and untruth. Seeded in the precepts of Arya Samaj our school aims to live this noble idea. **Arya Ratan Shri Punam Suri Ji**, the worthy President of DAV CMC, through his regular thought streams inspires us to explore the path of knowledge and to discover and follow the truths of life.

We envision an educational scenario empowered enough to edify the world by inspiring young learners. Shaping up happy, healthy and harmonious personalities with an all-embracing faith in peace, positivity and potency to evolve and expand is our Nobel privilege. Democracy, secularism, equality, patriotism and a responsible concern for environment form our pulsating edu-culture.

Chaitanya Arggarwal, Std XI winner Rs. 30000/- In an online CBSE Writing series competition based on the life of Sri Pingali Venkayya.

Another student Aaftab Singh, Std IX received a cash prize of Rs. 5000/- for his entry in English

The school was honoured for its volunteered efforts in hosting and organising CBSE Sporting Competitions and promoting Sports and games at the school level by Smt. Smriti Irani, the Union HRD Minister, Govt. of India. Principal Dr. Mrs. Neera Sharma receiving the honour.

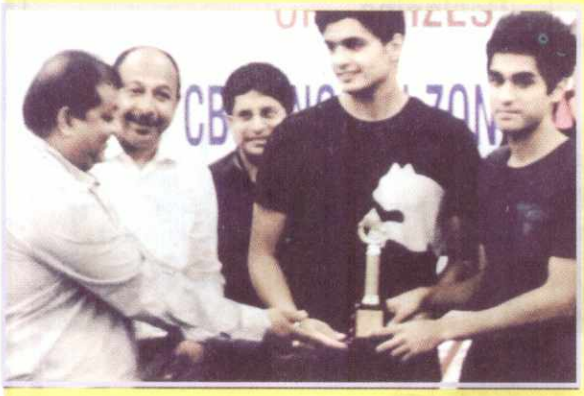

The school won Gold Medal in CBSE North Zone II Tournament organised by CBSE at Faridabad

The school teams were semifinalists in the prestigious ISB (Indian School Bahrain) Quiz held at Bahrain.

School's Food Production Unit in Action

Gauri Gupta of Std X got the District INSPIRE Award - 2013 by Ministry of Department of Science and Technology, New Delhi. She received a cash prize of Rs. 5000/- and her model has been selected for State Level Science exhibition

DAV Public School
Lawrence Road Amritsar

Phone: 0183-2224603, 2212793
Fax: 0183-2224414
E-Mail: davpublicasr@yahoo.com
Website: www.davpublicamritsar.com

NPSC

UNIVERSITY of CAMBRIDGE
ESOL Examinations
Authorised Centre
Supervised by Centre IN120

ISO 9001 : 2000 Certified from Det Norske Veritas (DNV)

BRITISH COUNCIL | International School Award 2012-2015

thearyasamaj.org

त्याग तप व सेवा का संगम महात्मा हंसराज

●आचार्य शिवनारायण शास्त्री

महात्मा हंसराज जी का जन्म 19 अप्रैल 1864 को प्रातः काल पंजाब के ग्राम बजवाड़ा में लाला चुन्नीलाल जी के घर में हुआ था। महात्मा जी की माता जी सेवा भाव से युक्त थीं। उनका जीवन सेवा व समर्पण तथा ईश्वर विश्वास से लबालब भरा था, गाँव की बूढी माँ ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा ''भाग्यवान गाय की सेवा करते हुए तुझे यह बालक मिला है। यह बड़ा सुलच्छना है। जैसे गाय सूखी घास खाकर अमृत जैसा दूध देती है, वैसे ही यह बालक भी निष्काम सेवा करेगा। गाय की तरह ही परोपकारी देश हितैषी व मानवता का रक्षक होगा''

पिता चुन्नीलाल के संस्कारों से प्रेरित होकर वे बाल्यकाल से ही सन्ध्यावन्दन तथा साधु–सन्तों की संगति में सुख पाते थे, वहीं से उनके मन में प्रभु भक्ति का बीज आरोपित हो गया था तथा पिताजी स्वतन्त्र विचारों के होने के कारण उन्होंने अंग्रेजों की दासता को त्याग कर अपील नवीसी करना आरम्भ कर दिया था, इन संस्कारों का भी बालक हसंराज पर प्रभाव पड़ा था।

अथर्ववेद की एक ऋचा में वर्णन आता है कि ''अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः''।। मन्त्रांश को अपने जीवन में चरितार्थ करते हुए महात्मा हंसराज जी ने पिताजी से त्याग का व्रत धारण किया और उसे अपने जीवन में अन्तिम श्वास तक दृढ़वर्ती बन निर्वहन किया। महात्मा जी के त्याग का अनुपम उदाहरण यहाँ पर दृश्टव्य है महर्षि दयानन्द के देहावसान के नौ दिन बाद 8.11.1883 को लाहौर में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें यह विचार होने लगा कि महर्षि की स्मृति में स्थाई स्मारक क्या हो? उसी सभा में निश्चय किया गया कि महर्षि की स्मृति में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज तथा स्कूल स्थापित किया जाए। उस सभा में ही सात हजार रुपया एकत्रित हो गया योजनापूर्ति के लिये आठ लाख रुपयों का अनुमान लगाया गया किन्तु दिसम्बर के अन्त तक दो हजार से अधिक रुपये एकत्रित नहीं हो सके।

महात्मा हंसराज को इससे बड़ा दुःख हुआ और वे अपनी व्यथा सुनाने अपने भाई की शरण में गये। उन्होंने उनके सम्मुख अपनी इच्छा व्यक्त की कि वे आजीवन निःशुल्क रुप से दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज की सेवा करना चाहते हैं, इसमें उनको भाई की सहायता की आवश्यकता है। बड़े भाई ने छोटे भाई की भावना का आदर किया और अस्सी रुपये मासिक वेतन में से आधा वेतन उनको देने का वचन दिया। इस प्रकार एक भाई ने अपना जीवन दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज और स्कूल के लिये अर्पण करने का प्रण किया तो दूसरे भाई ने अपनी कमाई का आधा भाग उसके लिये समर्पित कर दिया। त्याग का ऐसा अनन्य उदाहरण अन्यत्र देखने को कदाचित ही मिले।

महात्मा जी में जहाँ त्याग की पराकाष्ठा थी वही उनके जीवन में तप अर्थात् सहन शीलता भी विद्यमान थी, इस सन्दर्भ में भी एक उदाहरण प्रस्तुत है–महात्मा जी को 1890 में आर्य समाज अनारकली का प्रधान और फिर सन्1891 में आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब का प्रधान चुना गया। सन् 1892 तक कॉलेज निर्बाध गति से चलता रहा। किन्तु उसके बाद इस विषय में वाद–विवाद होने लगा कि कॉलेज में मुख्य तया क्या–क्या विषय पढाये जाएँ। संस्कृत–पुस्तकालय, वेद–शिक्षा आदि पर विवाद उठने लगें अन्ततः सन्1893 में कॉलेज कमेटी और आर्य समाज इस रूप में दो अलग–अलग दल बन गये बहुत झगड़ा हुआ और अन्त में आर्य समाज अनारकली और आर्य समाज बच्छोवाली के नाम से दो दल बन गये। किमी. किसी ने इसको मांसपार्टी और घासपार्टी का भी नाम दिया। सन् 1902 मे जब गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना हुई तो फिर इन दलों के नाम ''कॉलेज विभाग'' और गुरुकुल विभाग प्रसिद्ध हो गये।

महात्मा जी पर गालियों की बौछार होने लगी। उन्हें तथा कॉलेज विभाग को समाप्त करने के लिये ट्रैक्ट लिखे गये, स्थान–स्थान पर भाषण दिये गये, उसी समय स्वामी रामतीर्थ ने कालेज कमेटी को पत्र लिखा कि वे आजीवन सदस्य के रूप में केवल दस रुपया मासिक वेतन पर दयानन्द कॉलेज में काम करना चाहते हैं किन्तु पत्र लिखने के दूसरे ही दिन उन्होंने लाहौर के एक समाचार पत्र में महात्मा हसंराज का निन्दापरक एक लेख पढ़ा। उसे पढ़कर उनके ह्रदय को धक्का सा लगा और उन्होंने सोचा कि जिस आर्य समाज में अपने निष्काम सेवकों की इस प्रकार निन्दा और आलोचना होती है, उससे दूर ही रहना भला है, पर महात्मा जी के क्रिया कलाप पर इन घटनाओं से तनिक भी मन विचलित नहीं हुआ यही था उनका उच्चकोटि का तप।

महात्मा जी में जहाँ त्याग व तप पराकाष्ठा को प्राप्त था वहीं उनका जीवन सेवा के लिये भी समर्पित था।

एक समय की बात है कि महात्मा जी की पत्नी मृत्यु का शिकार हो चुकी थी पुत्र जेल के सींखचों में बन्द था, उसी समय भाई को भी आर्थिक संकट ने आ दबोचा। महात्मा जी के बड़े भाई उन दिनों पंजाब कोऑपरेटिव बैक के मैनेजिंग डायरेक्टर थे, समय के फेर से पीपल्ज बैंक टूटा तो को ऑपरेटिव बैंक को भी आर्थिक झटका लगा। तभी महात्मा जी के छोटे बेटे योधराज को निमोनिया हो गया इतना हाने पर भी महात्मा जी आर्य समाज तथा सभा कार्य नियमित रुप से करते रहे। चेहरे पर कभी शिकन भी नहीं आने दी, ऐसी स्थिति में एक बार उनकी पुत्री ने कहा ''पिताजी क्या आप अब भी मानते है कि परमात्मा है'' पिता को पुत्री के डगमगाते विश्वास को देखकर दुःख हुआ उन्होंने कहा 'बेटी' परमात्मा है और वह जो करता है ठीक ही करता है'' महात्मा जी अपने कार्य के प्रति समर्पित थे तथा ईश्वर विश्वासी थे। उनका तप–त्याग व सेवा सराहनीय थे।

वैदिक प्रवक्ता

महात्मा हंसराज

हे सर्वस्व त्याग की प्रतिमूर्ति
सेवा समर्पण के साकार रूप।

निष्काम कर्मयोगी, हे वीतराग
निष्ठा, नैतिकता के प्रतीक अनूप।

संस्थापक,सम्पोषक डी.ए.वी. के,
शैक्षिक क्रांति के तुम अग्रदूत।

ऋषि–भक्त; आर्यों के गौरव,
माँ आर्य समाज के अमर सपूत।

हंसराज, तुम्हारा अभिनन्दन
हे महात्मन् कोटिशः नमन।

कोटिशः नमन, हे महात्मन्
कृतज्ञ, श्रद्धानत हम आर्य जन।

करते तुम्हें कोटिशः नमन
प्रणम्यते हंसराजो महात्म–कोटिमुपागतः।।

प्रो. ओम कुमार आर्य
1607/7 जवाहर नगर पटियाला चौक
जीन्द 126102

" ईर्ष्या तथा द्वेष की प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं होती। अपने मन की शुद्धि, ज्ञान की प्राप्ति तथा शुभ कामनाओं के लिए परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए। "

– महात्मा हंसराज

thearyasamaj.org

भारत माता के अमर पुत्र : महात्मा हंसराज

● प्रो. महावीर

बाल्यकाल में गुरुकुल में अध्ययन करते हुए सुना करता था–हंस–हंस के हंसराज ने तन, मन व धन लुटा दिया। उस समय इस पंक्ति का रहस्यार्थ समझ नहीं आया था, किन्तु आज जब मैं उस युगपुरुष को इतिहास के वातायन से देखता हूं तो हृदय श्रद्धा से भर आता है। देश, समाज और मानवता की सेवा में अपना तन, मन और धन कैसे समर्पित किया जाता है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है– महात्मा हंसराज का अनुपम जीवन।

महर्षि दयानन्द द्वारा नवजागरण, मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये देशभक्तों का आह्वान, वैदिक शिक्षा पद्धति के प्रचार–प्रसार के लिये शंखनाद और वीर भूमि पंजाब को अपना प्रमुख कार्यक्षेत्र बनाना। इन सबका व्यापक प्रभाव पंजाब के अनेक युवकों पर हुआ। इन युवकों में प्रमुख थे–लाला लाजपतराय, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, प्रो. रूचिराम साहनी, महात्मा हंसराज तथा राजा नरेन्द्रनाथ जी आदि। ये सब सहपाठी थे। लाला हंसराज, आर्य समाज लाहौर के सभासद् बन गये। समाज द्वारा संचालित अंग्रेजी की पत्रिका 'रीजेनेरेटर ऑफ आर्यावर्त्त' के अवैतनिक सहायक सम्पादक का कार्य करते रहे। महर्षि के जीवन का इतना प्रभाव हुआ कि उनकी वेद विषयक, शिक्षा विषयक मान्यताओं को समझने के लिये ऋषि प्रणीत ग्रन्थों का गहन अध्ययन करने लगे।

ऋषिवर के निर्वाण के पश्चात् उनको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 08 नवम्बर, 1883 की सभा में निश्चय किया गया कि संस्कृत–संस्कृति और वैदिक ज्ञान–विज्ञान के साथ आधुनिक विषयों एवं अंग्रेजी की शिक्षा के विकास के लिये एक महाविद्यालय की स्थापना की जाए। निर्णय के पश्चात् आर्यों का संकल्प 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज' के रूप में साकार हुआ।

श्री हंसराज जी ने बिना वेतन के डी.ए.वी. का मुख्याध्यापक बनना स्वीकार कर लिया। डी.ए.वी. आन्दोलन को अपना समग्र जीवन, अपनी सारी इच्छायें, आकांक्षायें समर्पित कर दीं। उनके तप, त्याग और समर्पण से वह शिक्षण संस्थान देश का गौरवशाली संस्थान बन गया। डी.ए.वी. आन्दोलन संपूर्ण देश में फैल गया। डी.ए.वी. और महात्मा हंसराज एक दूसरे के पर्याय बन गये। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा प्रवर्तित गुरुकुल शिक्षा आन्दोलन उतना व्यापक रूप प्राप्त नहीं कर सका, जितना कि डी.ए.वी. संस्था ने देश–विदेश में शिक्षा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित कर दिया। वे शुभ्रवस्त्रों में एक सच्चे संन्यासी थे। अनेक बार परीक्षा के क्षण आये किन्तु वे कभी विचलित नहीं हुए, सर्वदा सफल ही रहे। श्रीमद् भगवद् गीता में वर्णित स्थित–प्रज्ञ अवस्था के वे प्रत्यक्ष मूर्तिमान् रूप थे।

जब भी राष्ट्र में कोई आपदा आई, महात्मा जी ने सबसे आगे बढ़कर आपदा निवारण में अपनी भूमिका निभाई।

1927 में जब दिल्ली में 'प्रथम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन' का आयोजन हुआ, आपको सर्वसम्मति से अध्यक्ष मनोनीत किया गया। उस सम्मेलन में आपने जो अध्यक्षीय भाषण किया था वह आज भी प्रासंगिक और स्मरण करने योग्य है।

आर्यसमाज के वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी ने महात्मा जी के विषय में कहा था–

'निर्द्वन्द्व तथा सभी प्रकार की सांसारिक ऐषणाओं से मुक्त महात्मा जी किसी भी कमण्डलधारी संन्यासी से कम नहीं हैं, कपड़े, रंगकर संन्यास का बाना पहनने की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं है।

48 वर्ष की आयु में महात्मा जी ने डी.ए.वी. कॉलेज के प्राचार्य पद से त्यागपत्र देकर स्वयं को पूर्णतः आर्य समाज की सेवा में समर्पित कर दिया था।

आपकी प्रेरणा से सैकड़ों आर्य समाजों का निर्माण हुआ। अनेक सुयोग्य समर्पित विद्वान उपदेशकों और भजनोपदेशकों ने अपने जीवन राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिये।

चौहत्तर वर्ष की आयु में 15 नवम्बर, 1938 को संसारयात्रा पूर्ण कर वे परमात्मा की गोद चले गये। वे राष्ट्र के लिये विशेषतः शिक्षा के लिये इतना कुछ दे गये हैं कि आज श्रद्धाञ्जलि के अवसर पर उनके अवदान को हम श्रद्धापूर्वक स्मरण करें और शुद्ध मन से वैदिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिये संकल्पित और संगठित होकर कर्त्तव्य पथ में बढ़ते चले जायें।

कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्व विद्यालय हरिद्वार

☞ *पृष्ठ 4 का शेष*

दो रास्ते

और फिर–

अजल लगाये हुए घात हर किसी पर है ।
व–होश–बाश कि आलम रवा–रवी पर है ।।

यह तो जगत् है भाई! चल रहा है निरन्तर। क्या पता कुछ समय पश्चात् हम यहाँ हों न हों । इसलिए जो भी समय मिले उससे लाभ उठाओ भाई! क्या जाने अन्त–समय पर भगवान् का नाम लेने की भी शक्ति रहे या न रहे!

परन्तु देखो! आज छः दिन हो गए मुझे कथा करते हुए। प्रतिदिन यहाँ आता हूँ, प्रतिदिन आपको ये बातें सुनाता हूँ तो मुझे कुछ दोगे नहीं? मैं तो साधु हूँ, भीख माँगना मेरा काम है। आपसे भी कुछ माँगूँ तो दोगे? बोलो! दोगे कि नहीं? मैं जब संन्यासी बना, पुराने कपड़े उतार दिए, सिर के बाल उतार दिए, स्नान किया, भगवे कपड़े, गुरु जी से संन्यास लिया, तो गुरु जी ने कहा–"अब भीख माँगो, इन लोगों से जो आस–पास खड़े हैं।"

मैंने कहा– "माँगता हूँ।"

उन्होंने एक झोली मेरे गले मे डाल दी, कमण्डल हाथ में दे दिया, बोले–"सबसे पहले उस देवी से भीख माँगो।"

मैने उस देवी को देखा– वह रणवीर की माता थीं। धीमे से मैंने कहा– "उनसे भीख माँगनी होगी?" गुरु जी बोले–"हाँ, उन्हीं से।"

मैं उनके पास गया; झोली फैलाकर बोला–"देवि! आज तक मैंने तुम्हारे सिवा सब स्त्रियों को माता समझा है, आज से तुम भी मेरी माता हो। माता! मैं फ़कीर हूँ, मुझे भीख दो!"

(और कितने ही लोग रो पड़े।)

परन्तु भीख माँगना तो मेरा काम है भाई! और फिर छः दिन मजदूरी की तुम्हारी, पारिश्रमिक माँगता हूँ। बोलो, दोगे?

देखो, मैं रुपया नहीं माँगता, सोना–चाँदी नहीं माँगता, मेरे लिए सब बेकार हैं। मकान और सम्पत्ति नहीं माँगता; अपने छोड़ दिए, आपके क्यों लूँगा? खाने–पीने की वस्तुएँ नहीं माँगता। जितना चाहिए उतना खाने को लोग दे ही देते हैं। कपड़े भी नहीं माँगता। अपना सामान मैं आप उठाता हूँ। बहुत कपड़े मुझसे उठाये नहीं जाते। कोई घर–घाट मेरा नहीं जहाँ कपड़े सँभालता फिरुँ, इसलिए कपड़ा भी नहीं चाहिऐ मुझे।

आपसे माँगता हूँ केवल एक वस्तु कि इन छः दिनों में जो बातें बतलाईं, उन्हें अपने जीवन में धारण करो! सुन लिया आपने? अब आचरण करो! 'श्रेय मार्ग' की ओर आगे बढ़ो! तुम्हारा कल्याण हो तो मुझे प्रसन्नता होगी। अपने लिए नहीं तो मेरी प्रसन्नता के लिए कल्याण के रास्ते पर आगे बढ़ो!

ओम् शम् !

'दो रास्ते' कथा इसी के साथ समाप्त हुई ईश्वर हम सभी को 'श्रेय मार्ग' पर चलने की प्रेरणा दे।

– सम्पादक

"जिस प्रकार मणियों का मूल्य पृथक् रहने पर कम होता है, माला के रूप में उनका मूल्य बढ़ जाता है, इसी प्रकार जाति जब एक होती है तो उसका विशेष आदर व महत्व होता है; परन्तु उसी जाति के पृथक्-पृथक् टुकड़े वह सम्मान तथा मूल्य नहीं पा सकते।"

- महात्मा हंसराज

with best Compliments

DAV College

Sector-10, Chandigarh

DAVC

- A Post-Graduate Co-Educational Institution, spread over 16 acres complex in heart of city
- Recognised College as Research Centre leading to Ph.D. Degree of the Panjab University in the subject of Zoology, Chemistry and Bio-Technology.
- Having been founded in 1958, when the city of Chandigarh was in its infancy, the college has grown with the city, becoming an integral part of the region's social-cultural milieu
- The College belongs to the family of the reputed D.A.V. institutions, founded by Mahatma Hans Raj, and inspired by the great visionary - **Swami Dayanand Saraswati-the doyen of the Arya Samaj**
- Blessed with a visionary leadership of the Management
- Qualified and dedicated staff
- Highly talented students drawn from different social, cultural and academic backgrounds
- Nurtured great administrators, jurists, academicians, artists and sports persons of international repute
- Focuses on holistic synthesis by imparting to the students the best of new world humanistic, scientific and technical knowledge with a sense of pride in their rich cultural heritage

Office : +91 0172 – 2743980, 2742609
Fax : +91 0172 – 2742854
Email : davchandigarh@gmail.com
davc_chd@redifmail.com
Website : www.davchd.com

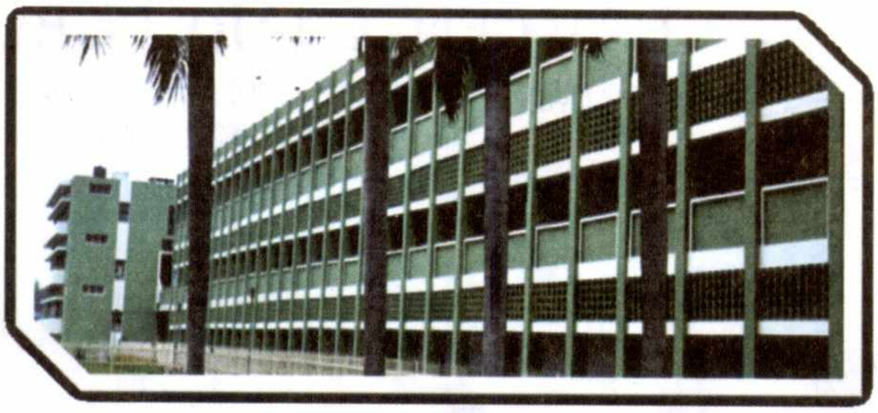

ACADEMIC PROGRAMMES

Bachelor's Degree Programmes

B.A. (General) & B.A. (Hons)	B.C.A.
B.Com and B.Com.(Hons)	B.B.A.
B.Sc. (Medical, Non-Medical)	B.Sc. (Computer Science, Biotech.)

B.Sc.(Hons) Biotechnology and Bio-Informatics
Advanced Diploma in Medical Lab Technology

Postgraduate Degree Programmes

Commerce

M.Com.	MBE

Humanities

M.A. (English)	M.A. (Psychology)
M.A. (Public Administration)	M.A. (Sociology)

Science and Technology

M.Sc. (IT)	M.Sc. Bioinformatics
M.Sc. Biotechnology	M.Sc. Chemistry
M.Sc. Maths	M.Sc. Zoology
M.Sc. Physics	

PG. Diploma Programmes

Postgraduate Diploma in Computer Applications
Postgraduate Diploma in Marketing Management
Postgraduate Diploma in Mass Communication

INFRASTRUCTURE AND LEARNING RESOURCES

Central Library	Computer Centre
Departmental Libraries	2 Museums (Botany and Zoology)
25 Laboratories	Health Centre
Guest House	Audio-Visual Centre for 150 persons
Nursery	College Hall for 1200 Persons
Canteen, Milk Bar	CCTV Cameras & Security System
Fruit Shop	Air-conditioned Conference Room
Coffee House	Air-conditioned Committee Room
Hostels for Boys & Girls	Grievances Redressal & Women Cell

Dr. B.C. Josan
Principal

with best Compliments

DAV CENTENARY PUBLIC SCHOOL-MANDI

Jawahar Nagar Mandi (HP) 175001, Ph: (O) 01905-236229, 224470, 236410 (M) 9418077636
Email: davmandi.hp@gmail.com, website: www.davmandi.com

Achievements of the school

- *34 students out of 145 scored CGPA between 9 to 10 in AISSE conducted by CBSE.*
- *8 students out of 87 got 90% & above marks in AISSCE conducted by CBSE.*
- *2 students got selected in Medical College.*
- *4 students got selected in professional Engineering College*
- *1 student is selected in NIFD.*
- *1 student got 3rd position in state level poster making competition organized by Ministry of Water Resources, Govt. of India*
- *Gold medal for Best participating school in Environmental Olympiad.*
- *1st & 3rd position in state level NSTS Examination, achieved by students of the school.*
- *1st position achieved in Quiz Competition organized by student Science Congress at Sr Level.*

Result Analysis of School

Class: AISSCE (12^{th}) 2013-14

Total Students Appeared	87
Total Students Passed	87
Pass Percentage	100%
School QPI	70.14
Science QPI	71
Commerce QPI	66.88

Class: AISSCE (10^{th}) 2013-14

Total Students Appeared	145
Total Students Passed	145
Pass Percentage	100%
School QPI	73.55

CGPA 10 Achievers

Name	CGPA
ABHISHEK THAKUR	10
KRITIKA	10
PREMJYOT KAUR	10
TANYA	10
VASUDHA KAPOOR	10
ABHISHEK KUMAR	10
DEVVRAT BHARDWAJ	10
NIKITA NARULA	10
PRANJAL THAKUR	10
SHIVAM SEHGAL	10
SIDDHARTH SINGH	10

Simran Vaidya
12th Science (94.2%)

Vipul Chauhan
12th Science 93.2%

Akshit Sharma
12th Science 93%

Nitish Kumar
12th Science (92.8%)

Charu Tandon
12th Science (92.6%)

Saumya Kapoor
12th Science (90.8%)

Kushaldeep Kaur
12th Com (93.4%)

Sukhleen Kaur
12th Com (91.4%)

Rishav Gupta
12th Com (87%)

Sh Punam Suri
President
DAV CMC New Delhi

Sh Prabodh Mahajan
Chairman of the School
V.P. DAV CMC New Delhi

Mrs J. Kackria
Director PS-III
DAV CMC, New Delhi

Prof SP Arora
Regional Director
HP Zone-III

Mr G.K. Bhatnagar
Manager

(Ks Guleria)
Principal

with best Compliments

DAV PUBLIC SCHOOL ,HUDCO BHILAI

The Regional Director for M.P./ C.G. Zone-1 and Principal of D.A.V. Public School Mr. Prashant Kumar was awarded the C.B.S.E. Mentor Award by Human Resource development Minister Mrs. Smriti Zubin Irani

The EDUCATION WORLD, the Human Development Magazine of India ,after exhaustive survey and analysis of data based on 14 different parameters has placed DAV Public School, Hudco, Bhilai at the 1 st Rank in Bhilai and 1 st in the State of Chhatisgarh, for the second time , D.A.V. public school has once again proved its supremacy in the Educational world for the second consecutive year

About us

Name of The School With Address	DAV PUBLIC SCHOOL AMDI NAGAR HUDCO,BHILAI (C.G.) 490009
E-Mail	davps.bhilai@rediffmail.com
Phone No.	0788-2241802
Fax-No.	0788-2346226
Web Site	davbhilai.org

Where there is freedom, there is no discipline, the child is confused or may even rebel. That is the reason social learning was always away from home amidst peer groups. D.A.V is not only a school but also a training ground for life. The child learns the foremost values of love , trust and truth etc from parents and later realizes the values of courage, ambition and discrimination for the larger society at school.

D.A.V has been established on this foundation to prepare the child for life. We are heading on towards our commitment that is perfection as we believe that we can achieve it through practice.

Our Salient Features

1. Highly qualified and trained teachers.
2. Spacious and fully furnished Smart classrooms.
3. Teaching with quality equipments.
4. Bus facility.
5. Development activities regarding sports.
6. Special classes for children who require more attention.
7. Special emphasis on personality development and spoken English.
8. Very reasonable school fees.
9. Well equipped computer lab.
10. Stress on personality development and character building.

Mission -Help the children grow into a useful citizen to society.

Goal-All round development of a child's personality.

Motto-Perfection.

Ethos- 1. Reverence to elders. 2. Building faith in one self to be a loyal citizen.

Our A grade Achievers (Class X)

Our Achievers (more than 90% marks in class XII)

thearyasamaj.org

76वीं पुण्यतिथि पर विशेष (15.11.2014)

काल–पृष्ठ पर जगमगाता हस्ताक्षर–महात्मा हंसराज

● प्रो. ओमकुमार आर्य, उपमंत्री, प्रतिनिधि (सभा), हरियाणा

इतिहास साक्षी है कि जब भी किसी महापुरुष ने कोई आंदोलन खड़ा किया अथवा किसी संस्था/मिशन की स्थापना की तो उनको अपने जीवन–काल में या देहावसान के उपरांत ऐसे अनेक निष्ठावान, शिष्य अनुयायी मिलते रहे जिन्होंने पूरी लग्न और प्राणपण से उस आंदोलन को आगे बढ़ाया, उससे जुड़ी विचारधारा को जन–2 तक पहुँचाया। यदि ऐसे किसी एक आंदोलन का उदाहरण लें तो धर्मरक्षक पूज्य दशमेश गुरु गोविन्द सिंह के खालसा–पंथ का उल्लेख कर सकते हैं। जब पुज्य गुरु साहब ने धर्म और मानवता की रक्षा के लिए आह्वान किया था कि मुझे मात्र ऐसे पाँच बहादुर शिष्य चाहिए जो देश के लिए, धर्म के लिए और समूची मानवता के लिए अपने को समर्पित कर दें और इनकी रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर दें। सन् 1699 का वैशाखी का दिन (13.4.1699) तथा आनन्दपुर साहब स्थित केसगढ़ साहब गवाह है कि गुरु जी को वे पाँच शिष्य उसी दिन तुरंत वहीं मिल गए थे–

1. दयाराम (लाहौर) 2. धर्मदास (दिल्ली)
3. मोहकम (द्वारिकापुरी–गुजरात)
4. हिम्मतराय (जगन्नाथपुरी–उड़ीसा)
तथा 5. साहिबचंद (बीदर–कर्नाटक)

जिन्हें गुरु जी ने अमृत चखाया, 'सिंह' नाम दिया और 'पञ्जप्यारे' घोषित किया। 'पञ्जप्यारे' की तर्ज पर ही महर्षि दयानन्द के पश्चात यदि उनके पाँच सर्वाधिक समर्पित, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय अनुयायियों की गणना करें तो इस लेख के चरित–नायक महात्मा हंसराज उनमें एक होंगे जो काल–पृष्ठ पर एक चमकते दमकते जाज्वल्यमान हस्ताक्षर हैं। वे पाँच हैं–

1. स्वामी श्रद्धानंद 1856–1926
2. महात्मा हसंराज 1864–1938
3. लाला लाजपत राय 1865–1928
4. पं. गुरुदत्त 1864–1890 एवं
5. धर्मवीर पं. लेखराम आर्य मुसाफिर 1858–1897

आगे बढ़ने से पूर्व स्पष्ट कर दूँ कि उक्त इन पाँचों के अतिरिक्त अन्य भी, उसी काल खण्ड में, अनेक ऐसे कृत संकल्प, दृढ़ निश्चयी ऋषि के अनुयायी थे जिन्होंने 'वैदिक धर्म के लिए अपना सर्वस्व आहूत कर दिया। वे सभी हम सबके लिए उतने ही (जितने कि उपर्युक्त पाँच) आदरणीय वन्दनीय एवं अनुकरणीय हैं। किन्तु उक्त पाँच तो मैंने उनमें से उदाहरणार्थ चुने हैं ताकि अपने विषय को ठीक से प्रस्तुत कर सकूँ।

महात्मा हंसराज या यूँ कहिए 22–वर्षीय युवक हंसराज आर्य समाज को तब मिले थे जब एक उच्च शिक्षा प्राप्त सुयोग्य, संस्कारी युवक की महती आवश्यकता थी जो 'अवैतनिक सेवाएँ' देकर ऋषि के स्मारक रूप में स्थापित डी.ए.वी. उच्च विद्यालय (सन् 1886) और बाद में डी.ए.वी. महाविद्यालय (सन् 1889) को आदर्श संस्था के रूप में चलाकर, शिक्षा–दीप को अधिक और अधिक प्रखर करके महर्षि के "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए" के स्वप्न को साकार कर सके। इतिहास सगर्व साक्षी है कि युवक हंसराज अपनी 'अवैतनिक सेवा' की प्रतिज्ञा पर न केवल खरे उतरे बल्कि 'अवैतनिक' शब्द की गरिमा उन्होंने बढ़ाई, अवैतनिक सेवा को नए आयाम दिए और धीरे–धीरे आगे बढ़ वे महात्मा हंसराज बन गए जिनका डी.ए.वी. के बाद का जीवन भी समाज, राष्ट्र, वैदिक धर्म के लिए अवैतनिक सेवा का ही अद्वितीय उदाहरण है। कभी बाढ़–पीड़ितों के लिए, कभी भूकम्प–पीड़ितों के लिए, महामारी से ग्रस्त त्रस्त दुःखी जनों के लिए, दंगों की चपेट में आकर बर्बादी का कहर झेलते बेसहारा लोगों के लिए वे किसी मसीहा या देवदूत से कम नहीं थे। इस प्रकार के उज्ज्वल कार्यों ने उनको इतिहास के पन्नों पर एक दिव्य व्यक्तित्व के रूप में अंकित कर दिया, उनके तप, त्याग और परोपकार के निःस्वार्थ कार्यों को इतिहास की दुर्लभतम धरोहर में परिवर्तित कर दिया। आज महात्मा हंसराज एक नाम नहीं प्रेरणा हैं, एक दीपस्तम्भ हैं जिनसे प्रकाश पाकर आने वाली पीढ़ियाँ देश, धर्म, शिक्षादि के क्षेत्र में निःस्वार्थ सेवा एवं निष्काम कर्मयोग का मार्ग आसानी से ढूँढ सकेंगी। सम्भवतः अंग्रेजी के महाकवि हैनरी लाँगफैलो (Henry Longfellow) ने महात्मा जी सरीखे महापुरुषों के लिए ही कहा था वे संसार से विदा होते वक्त अपने पीछे– Foot prints on the Sands of Time समय की रेत पर अपने उज्ज्वल पदचिन्ह छोड़ जाते हैं जो सदियों–2 तक मानवता का पथ–प्रदर्शन किया करते हैं। वे निर्मम और क्रूर काल को चुनौती देते हुए काल की छाती पर अपनी अमिट निशानी छोड़ जाते हैं जिन्हें काल–प्रवाह अपने साथ बहाकर नहीं ले जा सकता, समय की धूल, गर्द व गुबार कभी उनकी चमक को फीकी या धूमिल नहीं कर पाता। वे एक उज्ज्वल, पुरनूर, रोशनी से जगमगाता हस्ताक्षर बन कर काल–पृष्ठ पर अपना एक स्थान बना लेते हैं। वे वास्तव में कालजयी, मृत्युजंयी बन जाते हैं। कवि की अग्रलिखित पंक्तियाँ महात्मा जी जैसे महापुरुषों पर सटीक चरितार्थ होती हैं–

रात बीती कि सितारे डूब जाते हैं
लहरें मचलीं कि किनारे डूब जाते हैं
कुछ ही नाम तैरते समय की सतह पर,
बाकी तो धीरे–2 सारे डूब जाते हैं।

तैरने वाले नाम, देश के विदेश के भी, अगणित हो सकते हैं, महात्मा हंसराज भी उन्हीं नामों में से एक हैं जिनको समय ने सादर सहेज कर रखा है जो इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में सदा अंकित रहेगा।

महात्मा जी का व्यक्तित्व कष्टों की भट्टी में तप कर निखरा था। उन्होंने बचपन से ही अभावों का जीवन जीया था, अभावों ने उनको चट्टान जैसी दृढ़ता और अडिगता दी और वे जीवन के उतार–चढ़ावों, अपने–परायों के तीव्र विरोध, अन्य आध्यात्मिक, आधिभौतिक ताप–सन्ताप के क्षणों में कभी विचलित नहीं हुए। अपने निकट के साथियों, पं. गुरुदत्त, पंजाब केसरी, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द आदि से सैद्धान्तिक मतभेद हुआ, 'घास पार्टी बनाम मांस पार्टी का विवाद खड़ा हुआ, असहयोग आंदोलन के अवसर पर डी.ए.वी. की सरकार से मान्यता, विश्वविद्यालय से संबद्धता आदि का मसला विवाद का विषय बना, बड़े सुपुत्र बलराज पर राजद्रोह का अभियोग चला, आदि–2 अनेक ऐसे अवसर आए जो महात्मा जी के लिए किसी अग्नि–परीक्षा से कम नहीं थे, किन्तु वे सदा अविचल रहे, अग्नि–परीक्षा में आन, बान, शान, से उत्तीर्ण हुए।

वैदिक धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा, ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास उनके रक्त के कण–2 में रचा बसा था। वे उच्च कोटि के धार्मिक एवं ईश्वरभक्त व्यक्ति थे। महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति विद्वान तो नहीं बन सकता किन्तु धर्मात्मा अवश्य बन सकता है। महर्षि ने धर्मात्मा को विद्वान से बड़ा माना है, उसको वरीयता दी है। महात्मा हंसराज के देदीप्यमान व्यक्तित्व होने में उनके सूर्य की तरह चमक युक्त हस्ताक्षर होने में विद्वता और धर्मात्मा–वृत्ति दोनों का समान योगदान है। 'विद्या विनयेन शोभते' की झलक उनके चेहरे पर स्पष्ट देखी जा सकती है, यतो धर्मस्ततो जयः' के कितने ही प्रसंग उनके जीवन में मिलते हैं, जो उनके धर्मात्मा' होने, उनके आदर्श धार्मिक आचरण का मुँह बोलता उदाहरण है।

वे चाहते थे कि डी.ए.वी. के माध्यम से वे पौरस्त्य और पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली में सार्थक समन्वय स्थापित करके आधुनिक प्रगति, वैज्ञानिक शोधादि के साथ कदम से कदम मिलाकर भी चले तथा प्रगति, परिवर्तनादि की अंधी दौड़ में अपनी प्राचीन परम्पराओं, आर्य शिक्षा पद्धति, अपने पूर्वजों की विरासत को भी न भूले। उन्होंने एक बहुत सुन्दर और सबको सुखी बनाने का सपना देखा था, हमने किस हद तक उनके सपने को साकार किया या नहीं किया, इसका मूल्यांकन तो इतिहास करेगा। किंतु इतना हम कह सकते हैं कि वे अपनी मान्यताओं, अपने सिद्धान्त, अपने ईश्वर, अपने वेद अपने ऋषि के प्रति सदा ईमानदार रहे, वफादार रहे। सत्य, सिद्धान्त और सेवा के पथ पर पूरी निष्ठा के साथ चलकर वे यश और कीर्ति के पर्यायवाची बन गए। 'कीर्तिर्यस्य स जीवति' उन पर पूरी तरह घटित होता है। उन्होंने वैदिक आदर्शों को जीवन में उतारा, श्रुति सुधा–संजीवनी का पान किया देव के काव्य (वेद) को देखा, इसके मर्म को समझा इससे भगवती श्रुति से उनको 'न ममार न जीर्यति' का वरदान मिला। 'न ममार न जीर्यति' ही अमिट उज्ज्वल हस्ताक्षर होने का वैदिक सोपान है। अंग्रेजी के महाकवि जेम्सशर्ले (Jemes Shirley) ने जो इन पंक्तियों में कहा है–

But the Actions of the Just Small
Sweet and blossom in the dust

अर्थात् दिव्य गुण–युक्त व्यक्तियों के उज्ज्वल कार्य ही उनका यश बनते हैं, उनका दिव्य कृतित्व धूल में फूल की तरह खिलता है। अर्थात् ऐसे महापुरुष आते तो हैं पर कभी जाते नहीं।

वे कालपृष्ठ पर एक जगमगाता हस्ताक्षर बनकर सदा चमकते रहते हैं, उनका आलोक आने वाली पीढ़ियों का पथ प्रदर्शन करता रहता है। महात्मा हंसराज एक ऐसे ही समुज्ज्वल हस्ताक्षर हैं।

अमर तुम्हारा नाम महात्मा,
अमर तुम्हारा कदम महात्मा।।
तुम शिक्षा दीक्षा के दीप प्रखर,
वैदिक आदर्शों के उच्च शिखर।।
हे डी.ए.वी. के पोषक पूज्य गुरुवर,
तुम अमरता के उज्ज्वल हस्ताक्षर।।
हमें शक्ति, सामर्थ्य देवें परमेश्वर,
कि हम चल सकें, तेरे पथ पर
हम चल सकें तेरे पथ पर।।

1607/7 जवाहरनगर
पटियाला चौक
जीन्द (हरियाणा) 126102
मो. 094162 94347

with best Compliments

BBK DAV COLLEGE FOR WOMEN

A Multi Faculty Post Graduate College
LAWRENCE ROAD, AMRITSAR [PUNJAB] – INDIA
An Institution that works with Vision, Passion & Compassion for Quality & Excellence
Re-accredited A BY NAAC, BANGALORE
COLLEGE WITH POTENTIAL FOR EXCELLENCE -STATUS CONFERRED BY UGC, NEW DELHI
Star College Status conferred by Dept. of Bio Technology, Govt. of India
Managed by DAV College Managing Committee, New Delhi & Affiliated to Guru Nanak Dev University, Amritsar

NEW UGC SPONSORED COURSES

i) Bachelor Degree in Vocation in Theatre and Stage Craft ii) Bachelor Degree in Vocation in Entertainment Technology

UNDER GRADUATE COURSES

BA BA (Hons School in English) B.Sc (Medical/Non Medical/Economics/Computer Sc.) B.Sc Biotechnology B.Sc IT B Com Regular B Com Professional BBA BCA BA. Journalism &Mass Communication Bachelors of Design Bachelors Of Multimedia Bachelors Of Fine Arts Diploma in Cosmetology

POST GRADUATE COURSES

M.Sc Fashion Designing & Merchandising, M.Sc Computer Science MA Journalism &Mass Communication,M.Com., MA Commercial Art, MA Fine Arts, MA English, MA Punjabi, Masters in Tourism &Travel Mgmt., Masters in Multimedia M.Sc in Internet Studies, PGDCA, PG Dip. in Garment Const.&Fashion Designing, PG Dip. in Financial Services (Banking & Insurance) & Number of Add On Courses

BEST MERIT POSITIONS IN GNDU RESULTS (2013-14) TOTAL MERITS 290.
WON SHAHEED-E-AZAM BHAGAT SINGH CHAMPIONSHIP TROPHY (MEN & WOMEN).
GENERAL SPORTS CHAMPIONSHIP TROPHY IN WOMEN SECTION AND ALSO AWARDED
REPLICA OF MAKA TROPHY BY GNDU FOR BEING THE MOST CONTRIBUTING COLLEGE IN UNIVERSITY.
WON OVERALL CHAMPIONSHIP IN ZONAL YOUTH FESTIVAL.

BBK DAV celebrating its victory in Youth festival

Star players of BBK DAV holding overall combined trophy (Men & Women colleges)of GNDU, overallChampions Trophy, and other Sports Trophies along with Principal and Staff.

Liberal Freeships & Scholarships to Toppers & Deserving Students in Academic, Cultural & Sports

Excellent infrastructure & A.C. Hostel Facility Available

Telephones: 0183-2221757, 5095263,
97797-79720, 9463516400, 9878699667, Fax 0183-2229937
Email: bbkdavcw@yahoo.com . Website: www.bbkdav.org
Principal Dr. (Mrs.) Neelam Kamra

thearyasamaj.org

with best Compliments

DAV PUBLIC SCHOOL, GANDHI NAGAR – CCL

(in collaboration with Central Coalfields Limited)
KANKE ROAD, RANCHI – 834 008 (JHARKHAND)
Managed by DAV College Managing Committee, New Delhi
Affiliated to Central Board of Secondary Education, New Delhi

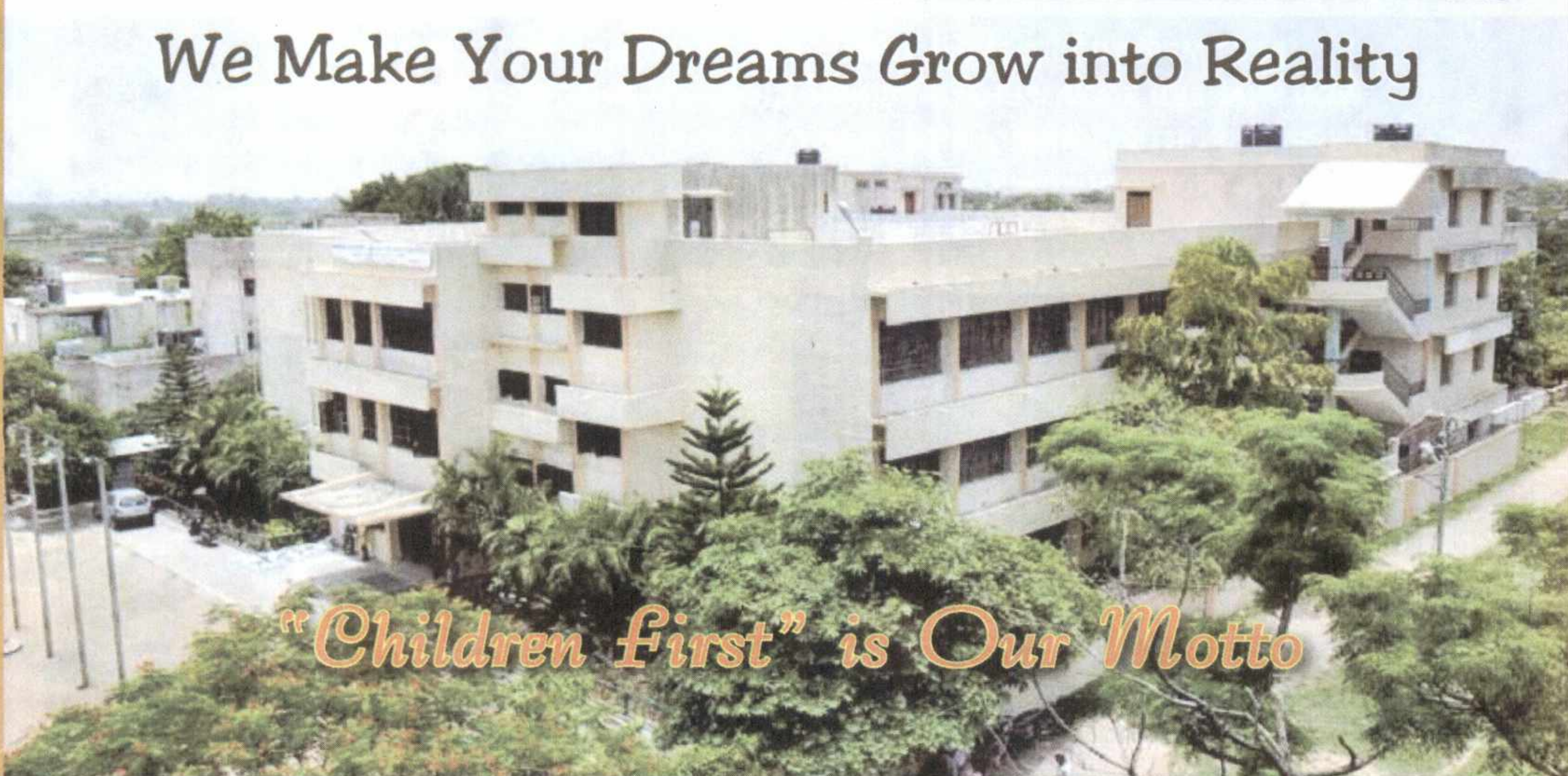

- Courses Offered at +2 level – Science & Commerce
- Available All Infrastructures of High Standards (Computer Lab, Physics Lab, Chemistry Lab, Biology Lab, Maths Lab, Art Gallery and Very Rich Library
- For Health Fitness GYM of every facility are available

Highlights of Achievements

- Master Shashank Shubhankar got 60th rank in UPSC Civil Services Examination – 2014
- Subi Roy scored 2376 marks out of 2400 in SAT and 118 out of 120 in TOEFEL. Further, she has been got selected in world class engineering college MIT, USA in Mechanical Engineering
- Our 23 students got selected in JEE-MAINS and 13 students in JEE –ADVACNE
- Our 3 students got selected in AIPMT
- Our student Deepak Bahadur represented our country at Bali (Indonesia) in 2008 in Wushu Championship;again he represented India at Singapore in 2010. He has been selected for 6thAsian Wushu Championship –2011 at Shanghai (China). He won GOLD MEDAL in State Wushu Championship held at Deoghar in 2011.

thearyasamaj.org

with best Compliments

DAV Centenary Public School

Vaishali Nagar, Jaipur (Raj.) 302021

(Under The Direct Control of DAV College Managing Committee, New Delhi)

An English Medium Co-Educational Sr. Sec. School, Affiliated to CBSE, Affiliation No. 1730059
Visit us : www.davjaipur.com, Email : omdavjpr@yahoo.com, omdavjpr@gmail.com
Ph.: 0141- 2351248, 2350342, Fax : 0141-2356361

27 YEARS of Excellence

Selections
IITJEE - 06
AIPMT - 01
CLAT - 01
BITS-SAT - 03

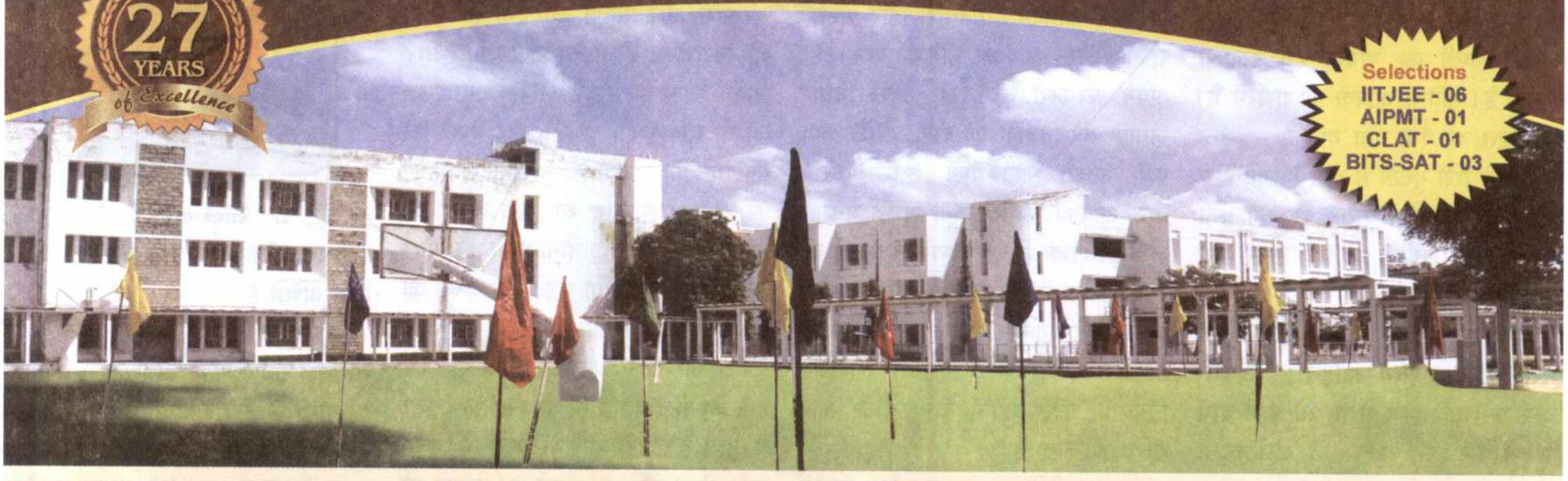

Prominent Features

- Completed 27 Years of Excellence.
- A Blend of Ethical Values & Modernity.
- Total thrust on Well- Rounded Development.
- Sprawling Campus of 6.23 Acres with a vast Sports Complex.
- Dedicated & Competent Staff.
- Smart Digital Class Rooms.
- Big Auditorium with a capacity of 600 persons.
- Well equipped Science, Computer, English & Maths Labs.
- An Air-cooled Library with separate reading areas for Students & Teachers.
- Glorious Performance by Students in Boards & Competitive Exams.
- X Results : 2013-14 | 16 Students Scored CGPA - 10
- XII Results : 2013-14 | Top Scorers | Non-Medical - 96.00% Commerce - 95.20% | Medical - 92.20%

Heartiest Congratulations on Mahatma Hans Raj Day !

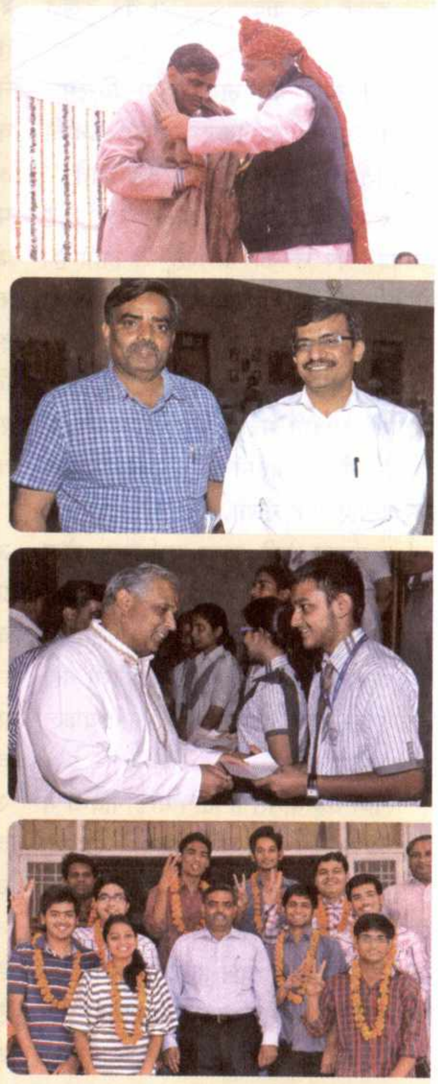

A.K. Sharma
Principal

Dr. (Ms.) Indoo Taneja
Manager

Dr. Rajesh Kumar
Regional Director

Shri Punam Suri
Chairman

उत्कृष्ट शंका-समाधान

● स्वामी विवेकानंद परिव्राजक

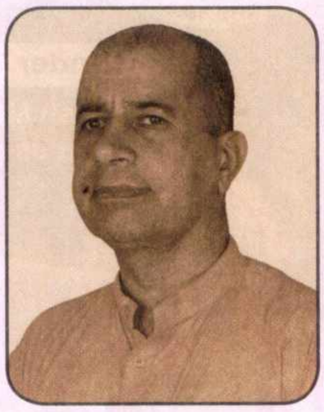

शंका – पंचाग-पत्रा, ज्योतिष विद्या को मानने से क्या हानियाँ होती हैं? क्या यह वेद अनुसार है?

समाधान– हस्तरेखा, भविष्य फल यह सब झूठ है। हस्तरेखाओं में कुछ नहीं लिखा। किसी का भविष्य इन रेखाओं में नहीं है। भविष्य आपके पुरुषार्थ में है। देशभक्ति का एक गीत याद है – 'नन्हें मुन्हें बच्चे तेरी मुठ्ठी में क्या है, मुठ्ठी में है तकदीर हमारी'। 'मुठ्ठी में' का क्या मतलब? इन लकीरों से नहीं, हमारे हाथ के पुरुषार्थ में है।

वेद कहता है– **''कृतं में दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः।''** अर्थात् **'कर्म मेरे दायें हाथ में है, तो फल बायें हाथ में।** पर लोग आलसी हैं, कर्म करना नहीं चाहते। वे केवल लकीरों को देखते रहते हैं।

''ऐ हाथ की लकीरों में किस्मत देखने वालो...... किस्मत तो उनकी भी होती है, जिनके हाथ नहीं होते।'' जब हाथ ही नहीं, तो लकीरें कहाँ है उनकी? पर उनकी भी किस्मत होती हैं। किस्मत तो हमारे पुरुषार्थ में है। इसलिए इन लकीरों में कुछ नहीं रखा।

एक विमान दुर्घटना (प्लेन क्रैश) हुई, डेढ़ सौ आदमी मर गए। उनमें बच्चे भी थे, बूढ़े भी थे, जवान भी थे। क्या सबकी हस्तरेखाएं एक जैसी थीं? रेल दुर्घटना, ट्रक दुर्घटना ऐसी बहुत दुर्घटनाएं रोज होती हैं। कितने ही लोग मरते हैं। क्या सबकी हस्त रेखाएं एक जैसी होती हैं? एक जैसी होनी चाहिए, पर एक जैसी नहीं होती। इसलिए हस्तरेखा में भविष्यफल कुछ नहीं लिखा।

लोग यह मानते हैं कि हमारे भविष्य में ऐसा-ऐसा लिखा है, इतनी उम्र में यह यह होगा इत्यादि। मान लीजिए– किसी व्यक्ति के भविष्यफल में लिखा है कि उसे चार मर्डर करने हैं। वो चार हत्याएं करेगा, यह किसने लिखा? भविष्यफल ज्योतिषी नहीं लिखता है। ज्योतिषी तो भविष्य बताता है। वो तो कहता है कि–''भविष्यफल भगवान ने लिखा है, मैं तो बता रहा हूँ कि आपका भविष्य ऐसा लिखा है।'' तो लिखने वाला भगवान है।

जब भगवान ने हमारी किस्मत में लिखा है कि हमें चार हत्याएं करनी हैं और हम उतनी-उतनी उम्र में चार हत्या करेंगे तो हम अपराधी तो नहीं हुए न? ईश्वर की आज्ञा का पालन अपराध नहीं है। ईश्वर ने लिखा है कि–तुम बत्तीस साल की उम्र में चांर मर्डर करोगे और हम कर डालेंगे तो हमने कोई अपराध नहीं किया। क्या हमें सरकार छोड़ देगी? नहीं न। इसलिए भविष्यफल झूठ है।

आपकी बुद्धि, आपके परिश्रम, आपके पुरुषार्थ, आपकी ईमानदारी और आपके संस्कारों से आपका भविष्य बनता है। अपने संस्कारों को देखें, अच्छे विचार जगाएं, बुरे विचारों को रोकें, अच्छे काम करें, अच्छी भाषा बालें, अच्छा चिंतन करें, आपका भविष्य बहुत अच्छा बनेगा। कोई हस्तरेखा और भविष्यफल देखने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए पंचांग-पत्रा आदि भविष्यकथन, ये सब वेद विरुद्ध हैं। इसको मानने से व्यक्ति आलसी, निकम्मा, पुरुषार्थहीन, दीन, दुःखी और दरिद्र हो जाता है।

शंका-''ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते'' अर्थात् वेद के ज्ञान-प्राप्ति का साधन ज्योतिष नेत्र (आँख) रूप से है, और ज्योतिष वेद का अंग है, तो ज्योतिष का उपयोग आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक पापों से छुड़ाने में क्या हो सकता है? वेद के ज्योतिष को कृपया समझाएँ।

समाधान– ''ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते''– इसका अर्थ होता है कि वेद को समझने के लिए, सृष्टि को समझने के लिए 'ज्योतिष शास्त्र' को जानना आवश्यक है। ज्योतिष का मतलब जानिए–

'ज्योति' का अर्थ होता है–'प्रकाश' और ज्योतिष शास्त्र का अर्थ होता है– प्रकाशवाले पिण्डों की गतिविधियों को बताने वाला शास्त्र। जैसे सूर्य, ज्योति-पिण्ड है, प्रकाश का पिण्ड है। यह प्रकाश फेंकता है। इसी तरह से एक सूर्य, दो सूर्य, तीन सूर्य, हजारों सूर्य, ग्रह और उपग्रह आदि चीजों की गतिविधियों को बताने वाला शास्त्र है– 'ज्योतिष शास्त्र'। जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है, सूर्य नक्षत्र आदि की गतिविधियों को जानता है, भूगोल-खगोल-शास्त्र को जानता है, वो व्यक्ति वेद को ठीक-ठीक समझ सकता है। ''ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते''इसका तात्पर्य इस तरह से है।

एक और ज्योतिष, जो फलित ज्योतिष के नाम से आजकल प्रचलित है-जैसे हस्त-रेखा विज्ञान, भविष्य -फल, राशि-फल, जन्म-कुण्डली, इनसे हम किसी का भविष्य नहीं बता सकते। कोई किसी का भविष्य जानता ही नहीं।

जन्म-कुंडली मिलाते हैं, कुंडली मिलाकर के विवाह करते हैं। अच्छा तो भई, कुण्डली मिलाकर विवाह किया तो, शादी के बाद झगड़ा क्यों हुआ, तलाक क्यों हुआ? भविष्यफल बताकर वो बेकार जनता की बुद्धि खराब करते हैं। उनकी इन बातों में कुछ भी नहीं रखा है, सब व्यर्थ की बातें हैं।

राम और रावण की एक ही राशि थी, पर देखो दोनों का हाल क्या हुआ? लाखों साल हो गए हैं लेकिन लोग एक को तो दीप जला रहे हैं, और दूसरे को गालियां मिल रही हैं। कंस और कृष्ण की भी एक ही राशि थी। अब उनका भी इतिहास देख लो कि दोनों में कितना फर्क है? कंस को गालियाँ पड़ती है, कृष्ण जी के गीत गा रहे हैं लोग।

ये जो जन्म कुंडली बनाते हैं और ग्रहों का फल बताते हैं, यह सब भी बेकार है, झूठ है। जैसे राशियाँ बारह हैं, इसी तरह से ये नौं ग्रह मानते हैं। इनको तो ग्रहों का भी पता नहीं। नौं ग्रहों की गिनती में भी नौं में से पांच गलती करते हैं। कैसे?

ये नौं ग्रह ऐसे गिनाते है, एक ग्रह मानतें है, सूर्य। अब बताइए, सूर्य भी कोई ग्रह है क्या? वो तो नक्षत्र है। जो स्वयं प्रकाश फेंकता है, जिसका अपना प्रकाश हो, उसे कहते है 'नक्षत्र'। सूर्य तो स्वयं अपना प्रकाश फेंकता है, तो सूर्य नक्षत्र है,ग्रह नहीं हैं। यह है एक गलती।

दूसरी भूल **चन्द्रमा को ये ग्रह बताते हैं। चन्द्रमा ग्रह नहीं, उपग्रह है।** जो नक्षत्र के चारों ओर चक्कर लगाए, उसको बोलते हैं 'ग्रह' और ग्रह के चारों चक्कर लगाए, उसको कहते हैं 'उपग्रह'। तो सूर्य नक्षत्र है, हमारी पृथ्वी ग्रह है, चन्द्र हमारी पृथ्वी का उपग्रह है। जो हमारी पृथ्वी के चारों तरफ चक्कर लगाता है। दो भूल हो गईं।

तीसरी भूल-पृथ्वी ग्रह है, जिसका हम पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। लेकिन **नौं ग्रहों मे से पृथ्वी का नाम ही गायब है।** एक आदमी बारह फीट की ऊँचाई से गिरे तो हड्डी टूटेगी कि नहीं टूटेगी? तुरंत प्रभाव पड़ेगा पृथ्वी का। लेकिन उसका नाम ही गायब है।

चौथी और पांचवीं गलती है– ज्योतिष वाले राहु और केतु नामक दो ग्रह बताते हैं। और इन्हीं से सबसे अधिक डराते हैं। वस्तुतः राहु-केतु नाम का कोई ग्रह है ही नहीं दुनिया में। इसलिए ग्रहों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

पुरुषार्थ से सारी चीजें सिद्ध हो जाती हैं। पुरुषार्थ ही दुनिया में सब कामना पूरी करता है। पुरुषार्थ करो, भविष्य अच्छा है। तीन बातें सीख लेनी चाहिए पुरुषार्थ, बुद्धिमता और ईमानदारी। आपका भविष्य बहुत अच्छा है।

भाग्य तो एक बार जन्म से मिल गया, सो मिल गया। बाकी तो पुरुषार्थ बलवान है। भाग्य से भी बलवान है पुरुषार्थ अच्छा है, तो भविष्य भी अच्छा है। और पुरुषार्थ खराब है, तो भाग्य भी सो जाएगा। भविष्य जानने के लिए किसी से पूछने की जरूरत नहीं है। देखो, हम किसी से अपना भविष्य पूछते नहीं।

लोग पता नहीं क्या-क्या अंगूठियां पहनते हैं– लाल, पीली, नीली। हमने आज तक कोई अंगूठी नहीं पहनी। हम कोई हार गले में नहीं पहनते। तीन सौ पैंसठ दिन हमारा धंधा (समाज सेवा कार्य) खूब चलता है। इतना चलता है, कि हमको हाथ जोड़कर माफी माँगनी पड़ती है। कि साहब, टाइम नहीं है।

किसी ने प्रश्न किया– ''हमने सुना है, कि ईश्वर का नाम भी राहु और केतु है। क्या यह सच है?'' तो मैने उत्तर दिया हाँ, राहु-केतु ईश्वर के दो नाम है, पर ज्योतिषियों ने लोगों को डराने के लिए दो ग्रह कल्पित कर रखे हैं। ऐसे कोई ग्रह नहीं होते।

संपादकीय टिप्पणी– समाज की सुख-शांति में बाधा पहुँचाने वाले लोग 'लोक कण्टक' कहलाते हैं। लोक कण्टक' यानी काँटे की तरह चुभकर पीड़ा देने वाले। 'मनुस्मृति' (नवम अध्याय के श्लोक 258 से 261 में लिखा है कि– ''मंगलादेश वृत्ताः'' यानी तुम्हें पुत्र या धन की प्राप्ति होगी, जो ऐसा कहने वाले हैं, 'ईक्षणिकेः सह' यानी जो हाथ आदि देखकर भविष्य बताकर धन ठगने वाले हैं, उनको 'लोक कण्टक यानी प्रजाओं को पीड़ित करने वाले चोर समझें। फिर 'प्रोत्साद्य' यानी उन्हें पकड़कर (वशमानयेत) यानी उन्हें कारागृह में रखें।

दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन
रोजड़ सागपुर, जिला साबरकाँठा, (गुजरात)

thearyasamaj.org

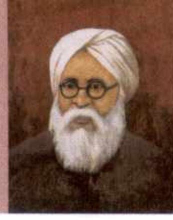

with best Compliments

DAV COLLEGE JALANDHAR

DAV College Jalandhar traces its roots to the legacy that has been reforming and redefining India's educational scenario for 127 years. As part of a movement for providing quality nationalist education, the College was established by Pt. Mehr Chand, Mahatma Hans Raj, Pt. Lakhpat Rai and Lala Radha Ram in 1918 in the sacred memory of Maharishi Dayanand Saraswati with the objective to impart scientific knowledge alongwith the Vedic traditions. As one amongst 780 educational institutions under DAV Managing Committee, New Delhi, this college has grown into a "Leading Academic Centre" of this region, in the last 96 years. Guided by the missionary zeal and visionary approach of its founding fathers, the college is, in fact, consistently evolving, improving and updating itself to be one-up against the challenges of a swiftly changing world environment. As one of the largest academic centres of North India, it is imparting instructions in Arts, Science, Commerce, Computer Science, Food Science & Technology and Media Studies. Besides a host of courses at the Under-Graduate level, the College provides instructions in 14 disciplines at the Post-Graduate level.

The list of illustrious alumni also makes it a proud institution. The renowned Ghazal Maestro Jagjit Singh, noted Bollywood singer Sukhwinder, famous Sufi singer Hans Raj Hans, Sharat Sabharwal, former Indian Ambassador to Pakistan and presenting Information Commissioner, Govt. of India, present Vice-Chancellors of Guru Nanak Dev University Amritsar Professor A. S. Brar and Punjab University Professor Arun Kumar Grover, 20 Olympians, 8 Arjuna Awardee, 2 Dronacharya Awardee and thousands of other distinguished Indians are the proud products of this institution.

Post-Graduate Programmes

MA (Eng., Hindi, Punjabi, Sanskrit, Pol. Sci., Eco., History)
M.Sc. (Maths, Physics, Zoology, Chemistry, Comp. Sci., IT
Commerce : **M.Com** (Finance and Accounts)
PG Diploma : Computer Application (**PGDCA**)
PG Diploma : Financial Services (**Banking & Insurance**)

Under-Graduate Programmes

B.Sc. (Bio-Technology, Medical, Non-Medl)
B.Sc. (Food Science & Technology (Hons.),
B.Sc. (Computer Science), **B.Sc.** (IT),
B.Sc. (Economics), **BA, BCA, BBA**
B.Com (Regular), **B.Com.** (Professional)
BA in **Journalism & Mass Communication**

Career Oriented Courses Under UGC Scheme

* Internet and Web Designing * Data Care Management * Corporate and Legal Environment * Communication Skills in English * Food Science & Quality Control * Insurance Management * Mass Communication and Video Production

Mahatma Hans Raj Marg,Jalandhar, Punjab - 144 008 (India)
Phone : +91-181-2255641-43, Fax : +91-181-2203120
Website : www.davjalandhar.com, E-mail : contact@davjalandhar.com

(Dr. B B Sharma)
Principal

thearyasamaj.org

With Best Compliments from :-

Kulachi Hansraj Model School

Ashok Vihar, Delhi-110052

43 Years : Legacy for the Future

Igniting passion, Empowering minds

ESTD.

1972

Ph : 011-47091581, 011-27143364, 011-27110012

Website : www.khms.ac.in. Email : kulachihansraj@yahoo.co.in

thearyasamaj.org

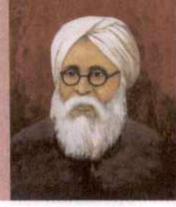

thearyasamaj.org

ध्येयनिष्ठ तपोव्रती महात्मा हंसराज

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक तथा आर्य सभा के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य, अनुयायी तथा ऋषि के मिशन के प्रति अपने को सर्वात्मना समर्पित करने वाले महात्मा हंसराज जी के शुभ जन्म का 150वाँ (2014ई.) वर्ष चल रहा है तथा साथ ही 15 नवम्बर 2014 ई. को उनकी 63वी पुण्यतिथि भी मनाई जायेगी। इस अवसर पर हमें महात्मा जी के कतिपय प्रेरणाप्रद प्रसंगों का पुनः-पुनः स्मरण हमारे जीवन को भी आलोकित करेगा, इसी भावना से हम महात्मा हंसराज जी के जीवन-पथ के पावन पाथेय को आर्य-जगत्' के पाठकों के साथ साझा कर रहे हैं।

विद्यार्थीजीवन-प्रसिद्ध संगीतज्ञ 'बैजू वावरा' की ख्याति से प्रसिद्ध 'बजवाड़ा' गाँव में पिता महाशय चून्नी लाल और माता गणेशदेवी की कोख से जन्मे थे महात्मा हंसराज जनपद होशियारपुर के इस ग्राम में 19 अप्रैल 1864 ई. को महात्मा हंसराजजी का जन्म हुआ था। यह वह समय था गुरुवर विरजानन्द दण्डी को दी गई गुरुदक्षिणा की पूर्ति हेतु ऋषिवर दयानन्द दण्डी को दी गई गुरुदक्षिणा की पूर्ति हेतु ऋषिवर दयानन्द तैयारी कर रहे थे और उन्होंने अपने वैदिक प्रचार के अभियान का प्रारम्भ कर दिया था। हंसराज ने प्राइमरी शिक्षा तो अपने गाँव में ही प्राप्त की परन्तु आगे की शिक्षा के लिए होशियारपुर जाना पड़ा। बालक हंसराज की शिक्षा-काल में ही कष्ट सहन की प्रवृत्ति और तपस्यापूर्ण जीवन का चित्र 'महात्मा आनन्द स्वामी ने अपनी पुस्तक 'महात्मा हंसराज के पृष्ठ 39 पर ऐसे खींचा है – विद्यालय से घर लौटते समय ''भरी दोपहरी की जलती धूप में, तपती रेत नंगे बालक के कोमल पाँव जला-जला डालती। तब हंसराज लकड़ी की तख्ती पाँव-तले रखकर खड़ा हो जाता। इससे जलन कुछ कम होती और वह फिर बढ़ने लगता। इस तरह जब-जब सेंक असह्य हो उठता, वह यों ही 'सुस्ता' लेता।''

इस तपस्या की दृढ़ नींव पर महात्मा जी के भावी जीवन का भव्य निर्माण हुआ। विद्यार्थी जीवन से उन्होंने **'कसिसे-हिन्द'** पुस्तक पढ़ी थी और परमेश्वर के सम्बन्ध में सनातनधर्म के विचार से वे अवगत थे। अतः मिशन स्कूल के हैडमास्टर साहब के इस कथा का प्रतिवाद किया था कि प्राचीन हिन्दुओं को ईश्वर का ज्ञान नहीं था। उन्होंने अपने मुख्याध्यापक महोदय को बताया कि परमेश्वर बिना पाँव के सर्वत्र पहुँचता है, बिना हाथ के सब-कुछ ग्रहण करता है। ''अपाणिपादी जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स श्रणोव्यकर्णः'' उपनिषद् की इस उक्ति को ही उन्होंने अपने शब्दों में कहा। उस समय तक उन्होंने स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ नहीं पढ़े थे। आर्य समाज के सम्पर्क में नहीं आये थे अतः धार्मिक विचारों में सैद्धान्तिक परिपक्वता नहीं थी। उनके संस्कृत के अपने अध्यापक तेजमान से स्वामी दयानन्द का नाम तो सुन रखा था। पंडित जी ने उन्हें यह बताया था कि स्वामी जी ने भूतप्रेतों को सिद्ध किया हुआ है, अतः उनके विरोधी उनके सम्मुख शास्त्रचर्चा में पराजित हो जाते हैं। कालान्तर में स्वामीजी के ग्रन्थों के स्वाध्याय से और आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में नियत्रित उपस्थित होने और व्याख्यानों के श्रवण से उनकी वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की गहरी जानकारी और उसमें दृढ़ महात्मा हंसराज जी आर्य समाज लाहौर के प्रधान पूज्य लाला साईंदास जी के आजीवन आभारी रहे, जिन्होंने उन्हें आर्यसमाज का सदस्य बनाया और प्रेरणा दी कि 'सन्ध्या' कण्ठस्थ करके उन्हें सुनायेगें वे पुरस्कार के भागी होंगें।'' विद्यार्थी हंसराज ने उन्हें संन्ध्या सुनाई और दो रुपये पुरस्कार स्वरूप प्राप्त किये। लाला साईदास ऐसे महापुरुष हैं जिन्हें आर्यसमाज के निर्माताओं की पड्क्ति खड़ी करने का श्रेय है। इन्होंने ही लाला लाजपतराय को भी आर्य समाज का सदस्य बनाया था। इन्होंने ही पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला जीवनदास को स्वामी जी की जीवन की सान्ध्य वेला में उनसे मिलने लाहौर से अजमेर भेजा था। महात्मा हंसराज ने लिखा है कि 'आर्यसमाज में आनेवाले नये व्यक्तियों पर लाला साईंदास की दृष्टि अति शीघ्र पड़ती थी।' लाला लाजपतराय लिखते हैं- ''लाला साईंदास मेरे साथ बाते करते हुए मेरे चेहरे को देखते और प्यार से मेरी पीठ को थपथपाते जाते। उन्होंने आर्यसमाज की सदस्यता का प्रवेशपत्र मँगवाया और मेरे सम्मुख रख दिया और कहा 'हस्ताक्षर करवाये विना जाने नहीं देंगें।' जब मैने प्रवेशपत्र पर हस्ताक्षर कर दिया तब जो प्रसन्नता उस क्षण लाला साईंदास के मुख-मण्डल पर देखी गई, उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो लालाजी आज भारत के मुकुटधारी सम्राट बन गये हैं महात्मा हंसराज और लाला लाजपतराय सरीखी विभूतियों को आर्यसमाज में खींचने वाले लाला साईदास के अदभुत व्यक्तित्व के विषय में स्वामी श्रद्धानन्दजी का कथन है- ''शिर पर लुधियाने की सादी लुंगी, जिसके नीचे तीक्ष्ण,मर्मभेधक आँखों को समझ लेती।''

महात्मा जी के निर्माता लाला साईदास के व्यक्तित्व का थोड़ा भी अंश आज हमारे आर्य समाज के कर्णधारों में यदि आ जाए तो हमारे पास भी युवकों और विद्यार्थियों की अच्छी संख्या हो जाए। हमें भी पुरस्कारादि की योजनाओं और सरस प्यार और स्नेह से विद्यार्थियों को सन्ध्या-हवन के मन्त्र कण्ठस्थ कराने चाहिए तथा वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी देकर उनकी दृढ़ निष्ठा आर्य समाज के प्रति करनी चाहिए। महात्मा हंसराज ने लिखा है कि इतनी धुन थी कि मैं समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों से अपनी एण्ट्रेंस (दसवीं) की परीक्षा के दिनों में भी अनुपस्थित नहीं रहा।'' महात्मा हंसराज जी बचपन से ही प्रतिभाशाली छात्र रहे थे। उन्होंने न केवल बी.ए. की परीक्षा में पूरे विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया (प्रथम स्थान पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने प्राप्त किया था।) अपितु मिशन स्कूल में 16 सत्रह विद्यार्थियों में से मात्र हंसराज ही दसवीं परीक्षा में उत्तीर्ण हो सके थे।

डी.ए.वी. कॉलेज को जीवनदान

30 अक्तूबर 1883 ई को दीपावली की सान्ध्यवेला में अजमेर में ऋषिवर दयानन्द रूपी वैदिक रवि अस्त हुआ। लाहौर से पहुँचे पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला जीवनदास ने अपनी आँखो से ऋषि-जीवन-नाटक का पटाक्षेप होते देखा था। 5 नवम्बर को लाहौर आर्य समाज की सभा में इन लोगों ने ऋषिवर की मृत्यु के अद्भुत दृश्य का ऐसा वर्णन किया कि लोगों की आँखें सजल हो उठीं। पं. गुरुदत्त ने ऋषि की स्मृति में 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक' स्कूल तथा कॉलेज खोलने का आह्वान किया। एतदर्थ चन्दे की अभ्यर्थना में लोगों के उत्साह के कारण (8000) आठ हजार रुपये का दान प्राप्त हुआ। दान-दाताओं की सूची में स्त्रियों और बच्चों के नाम भी थे। यह अभियान जोर पकड़ता गया और अन्त में वह दिन भी (25 फरवरी 1886 ई.) आया जब आर्य समाज लाहौर के वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन रविवार को उपस्थित जन-सैलाब में भजन गाया गया। माई भगवती (ऋषि दयानन्द द्वारा उपदेश प्राप्त प्रथम महिला उपदेशिका) ने सुन्दर साहित्यिक भाषण में कहा कि तुम्हारी संख्या 20 बीस करोड़ है। क्या तुम एक कॉलेज भी ऋषि दयानन्द की स्मृति में स्थापित नहीं कर सकते। तुम्हारे दूसरे भाई (ईसाई-मुस्लिम) केवल 4-5 (चार-पाँच) करोड़ है परन्तु उन लोगों ने दो-दो कॉलेज स्थापित किये हैं। तदनन्तर लाला लाजपतराय ने अपने धारा-प्रवाह ओजस्वी भाषण में आधुनिक शिक्षा के दोष दर्शाते हुए एक राष्ट्रीय वैदिक शिक्षा से सम्पूरित 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज' की आवश्यकता बताते हुए जनता-जनार्दन से सहायता की अभ्यर्थना की। दैनिक 'ट्रिव्यून' क सम्पादक बाबू जादूनाथ ने प्राचीन आर्यशास्त्रों में भरी हुई ब्रह्मविद्या की चर्चा करते हुए दयानन्द वैदिक कॉलेज में इस प्रकार की पढ़ाई की आवश्यकता पर बल दिया। इसके पश्चात पं. गुरुदत्त एम.ए. ने जातीय की रक्षा और ऋषियों की आध्यात्मिक भौतिक विचार से समन्वित 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज' की स्थापना के लिए जनता को सभी प्रकार की सहायता के लिए प्रेरित किया। अन्त में लाला हंसराज खड़े हुए। उन्होंने ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए, जाति एवं देश के हित में सहस्रों कष्ट झेलने वाले विषपान तक करके दुनिया को अमृत पिलाने वाले प्यारे ऋषि के उपकार को कभी न भूलने की चर्चा की।

अपने को ऋषि-सन्तान कहने वाले लोगों को अपने पूर्वजों का गुण-गौरव और स्वाभिमान की खातिर अपने जीवन को जाति के लिए अर्पण करने का उद्घोष किया। इस यज्ञ में अपनी आहुति देते हुए महात्मा हंसराज ने श्रोताओं के सम्मुख गुरु-गम्भीर वाणी में कहा कि ''अपना सम्पूर्ण जीवन विना वेतन के 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज' को समर्पित करता हूँ।

उर्दू के मासिक पत्र 'आर्य समाचार' (मेरठ) ने आर्य समाज लाहौर के इस वार्षिकोत्सव का वृत्तान्त सविस्तार आठ पृष्ठों में प्रकाशित किया और सबसे अधिक पड्क्तियाँ महात्मा जी के इस तयाग और समर्पण को लक्ष्य में रखकर लिखी। ''लाला हंसराज की इस वीरता, उत्साह, जीवन-भेंट, जातीय सहानुभूति ने लोगों के हृदयों में ऐसा जोश भर दिया कि जिसका वर्णन करने में लेखनी अक्षम है। लोगों ने फूलों की वर्षा लाला जी पर की। हम प्रशंसित लालाजी की अत्यन्त प्रशंसा करते हैं और उनकी पवित्र सेवा में यह निवेदन करते हैं कि जाति आपके वीरोचित

thearyasamaj.org

साहस की अत्यन्त प्रशंसा करती हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा सर्वान्तर्यामी आपके शिवसंकल्प और हार्दिक उत्साह में प्रत्येक अवस्था में सहायता हो। पंजाब केसरी राष्ट्र–प्रहरी लाला लाजपतराय जी ने लिखा है– ''दूसरों के जीवन में अन्य प्रकार की रुचियाँ थी– व्यावसायिक, सामाजिक, राजनीतिक या औद्योगिक, परन्तु उसको तो एकमात्र दयानन्द कॉलेज तथा आर्यसमाज की सेवा ही सूझती थी। कुछ सज्जन ऐसे हो सकते हैं जिन्होंने अपने जीवन में जो कुछ उत्तम है, कालेज को दिया हो परन्तु यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसने अपना सर्वस्व इसके अर्पण कर दिया– But he alone stands as one who has given his all for it (The Arya samaj, by Lala Lajpat Rai Page187)

पीड़ितों की सेवा

महात्मा हंसराज जी के जीवन का सबसे उज्ज्वल स्वर्णिम पृष्ठ है –पीड़ितों की सेवा। सन् 1899 ई. में राजस्थान में भीषण अकाल पड़ा। इससे पूर्व 1895–96 के अकाल में तथा 1897 में मध्यभारत में भी सर्वत्र अकाल पीड़ितों की सेवा में महात्मा हंसराज जी सर्वथा आगे रहे। कांगड़ा के भूकम्प में पीड़ितों की सेवा का जो उदाहरण महात्मा जी ने प्रस्तुत किया उसकी प्रशंसा में मुसलमान संवाददाता ने अखबारों में भूरि–भूरि प्रशंसा की। पादरी भी अपनी पत्नी और तीन बच्चों सहित उस भूकम्प में दब गया था, ईश्वर कृपा से उसे बचा लिया गया। उसने आर्यसमाजियों की सेवा का शतमुख से गुणगान किया। 1906–08 ई. में अवध में भयंकर दुष्काल पड़ा, तब भी पीड़ितों की सेवा और सहायता में आर्यसमाज आ खड़ा हुआ। अवध के पीड़ितों की सेवा से अभी आर्यवीर निपटे ही थे कि मुल्तान–क्षेत्र में प्लेग की महामारी फैल गई। रोगियों की दुर्दशा का तो कहना ही क्या, शव भी सड़ने लगे। वहाँ महात्माजी के सहपाठी राजा नरेन्द्रनाथ डिप्टी कमिश्नर थे। उनकी सूचना से महात्मा हंसराज जी ने रूलिया राम जी को भेजा। उनके सेवा–कार्यों में सहयोगी महाशय खुशहालचन्द जी (महात्मा आनन्द स्वामी) ने लिखा है– रोगी उन पर वमन कर देते, मूत्र कर देते परन्तु अपने जीवन की चिन्ता छोड़कर उन्होंने जो रात–दिन रोगियों की वह सेवा की जिसे देखकर पादरी स्टोक्स ने कहा कि अब हमारी आवश्यकता नहीं रही। यही पादरी स्टोक्स पं. रुलियाराम की सेवा भावना से प्रभावित होकर स्वामी सत्यानन्द बन गए। महात्मा हंसराज जी ने लिखा है – ''प्लेग में आर्यसमाज का एक वृद्ध उपदेशक आगे निकलता है और प्लेग के फोड़े तक को चूस लेने का साहस करता है।'' पं. रुलियाराम जी के इस आदर्श सेवा–भाव की बहुत चर्चा महात्मा आनन्द स्वामी ने अपने प्रवचनों और ग्रन्थों में की है। 1911ई में रावलपिण्डी मे प्लेग फैली, देहली में भी प्लेग फैलने पर सर्वत्र महात्मा हंसराज तन–मन–धन से सेवामानी आर्यवीरों को भेजते रहे। लाहौर में महामारी फैली हो चाहे मुलतान और कोहाट में मदान्ध और क्रूर मुसलमानों द्वारा किए गए दंगे हों, जिसमें हिन्दुओं का धन–धाम लूट लिया गया। घर–बार और दुकानें जला दी गईं। महात्मा हंसराज ने इन पीड़ितों की पुकार सुनी। विस्थापितों को पुनः स्थापित करने के लिए हंसराज जी ने भिक्षा की झोली पसारी। भक्तों ने शिष्यों ने धन दिया और पीड़ितों को सभी प्रकार की सहायता की गई। छत्तीसगढ़ का भयंकर अकाल और 1936 ई में राजस्थान के भील भाइयों की पुकार सुनकर हंसराजजी ने 'आर्यजगत्' में हृदयस्पर्शी अपील की ''भूख एवं ईसाइयत के पंजे में फँसे हुए भीलों की सहायता कीजिए।'' महात्मा जी के सत्प्रयत्नों एवं सेवाभाव का यह परिणाम रहा कि छः सहस्र ईसाई बनाए गए भील बन्धु पुनः जाति का अंग बना लिए गए। भारत को इतिहास का एक काला और घिनौना पृष्ठ है केरल के मालाबार क्षेत्र के मोपले मुसलमानों द्वारा दो हजार हिन्दू मौत के घाट उतार दिए गए और ढ़ाई हजार हिन्दू बलपूर्वक मुसलमान बनाए गए। मन्दिर नष्ट–भ्रष्ट किए गए और देवियों का सतीत्व लूटा गया। कांग्रेस और हिन्दुओं पर गाँधी जी की अहिंसा का प्रभाव था। महात्मा हंसराज को तार देकर वहाँ की स्थिति से अवगत कराया गया। महात्मा आनन्द स्वामी ने लिखा है– इस तार को पाकर महात्मा हंसराज जी बोले ''आर्य समाज के होते यह अत्याचार सहन नहीं हो सकता।'' इस तार को पढ़कर धर्मरक्षक दीनबन्धु महात्मा हंसराज जी रात भर रोते रहे, रो –रोकर उनकी आँखे सूज गई। अगले दिन आर्य प्रादेशिक सभा की बैठक बुलाई गई। महात्मा जी ने कहा कि जागृति के इस समय में किसी को बलपूर्वक मुसलमान बनाना हमारे लिए, आर्यसमाज के लिए एक ललकार है। मालाबार में हिन्दुओं को हर प्रकार की सहायता पहुँचाई जाएगी।'' पुनः आर्यवीरों ने अपने जीवन संकट में डाले। लाला खुशहालचन्द (महात्मा आनन्द स्वामी) मुसलमानी वेष में वहाँ गए।.... आर्य समाजी तो पाताल में भी जाने के लिए तैयार हैं। यह जोश की अग्नि आर्य समाज को ऋषि दयानन्द से बपौती में मिली है।'' (आर्य जगत्' में प्रकाशित 'मथुरा जन्म शताब्दी' पर महात्मा हंसराज जी का व्याख्यान, 16 फाल्गुन 1981 विक्रमी)

वैदिकधर्म प्रचार

महात्मा जी का वेदादि आर्षग्रंथों का बहुत गहरा स्वाध्याय था। उन्होंने वेदान्त पढ़कर आकाश और वायु शब्दों का भी परमेश्वर के अर्थ में प्रयोग किए जाने का प्रमाण दिया है। आचार्य विश्वश्रवा जी ने मुझे बताया कि जब मैं महात्मा हंसराज जी से पहली बार लाहौर में मिला तब उनके हाथ में अष्टाध्यायी थी। उन्होंने ''क्या निरुक्तकार यास्क वेद में इतिहास मानते थे'' इस विषय पर आर्य समाज के दिग्गज विद्वानों के शास्त्रार्थ का आयोजन और सभापतित्व भी सँभाला था। आचार्य विश्वबन्धु लिखित 'दशप्रश्नी' की समीक्षा लिखकर बँटवाई थी। 1921 ई. तक आर्य–उपदेशकों की दक्षिणा कॉलेज कमेटी देती रही। 1922 ई में यह दायित्व आर्य प्रादेशिक सभा ने ले लिया। पं. जगत् सिंह जी, पं. रामचन्द्र शास्त्री आदि पुराने उपदेशकों को दयानन्द कॉलेज का उपदेशक कहा और लिखा जाता था 1921 में सभा की सेवा में 14 उपदेशक 9 भजनीक थे। पं. भगवद्दत्त जी वैद्य रामगोपाल शास्त्री, ठाकुर अमरसिंह जी. पं. बुद्धदेव मीरपुरी जैसे ख्याति–प्राप्त विद्वानों के कारण सभा की शोभा थी। 14 जून1905 ई. को दयानन्द कॉलेज के इतिहास के प्रोफेसर भाई परमानंद को दक्षिण–अफ्रीका में वेद प्रचारार्थ विदाई के अवसर पर कॉलेज के प्राध्यापकों , छात्रों तथा आर्यसमाज के सेवकों ने भारी भीड़ के साथ उन्हें विदाई दी थी। यह महात्मा जी की एक बड़ी देन समझनी चाहिए। महात्मा हंसराज जी ने स्वयं एक ओजस्वी भाषण में कहा था– इसका प्रभाव यह हुआ कि मस्जिदों में विवाह कराने वाले हिन्दुओं को अपने हिन्दुपन का विचार आया।

डॉ. दीवानचन्द जी ने लिखा है–महात्मा हंसराज का जीवन में तो आरम्भ से अन्त तक त्याग ही त्याग था। एक विशाल सभा में डॉ. गोकुलचन्द ने कहा था–''यह कहना ठीक नहीं कि महात्मा हंसराज आर्य समाज के महात्मा गाँधी थे; त्याग के दृष्टिकोण से देखें तो यह कहना अधिक उचित है कि महात्मा गाँधी राजनीति के हंसराज हैं।''

इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि बड़ा लड़का जेल में है, फाँसी की सजा हो चुकी है, पत्नी मृत्यु शैय्या पर है। जेल से देखने के लिए भी माँ के पास आने की अनुमति नहीं मिली, अन्ततः पत्नी चल बसी। गाय मर गई, घर में चोरी हो गई, छोटे लड़के को निमोनिया हो गया, बड़े भाई के बैंक फ़ेल हो गये, परन्तु महात्मा हंसराज जी का माथा वैसा ही रहता था, मानो कुछ उनका अनिष्ट नहीं हो रहा हो। 'ईश्वर तेरी इच्छा' में उनका अटल विश्वास था। ऐसे घोर कष्ट में भी मन को पूर्णतः स्थिर रखना सहज नहीं है, पर उनकी शान्ति में कोई अन्तर नहीं आया। इससे बढ़कर निश्चलता और महात्मता क्या होगी?

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग रणञय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी

"मनुष्य के भीतर एक प्रकार की आवाज़ है, जिसे धर्म अथवा ईश्वर की आवाज़ कहना चाहिए। इस धर्म की आवाज़ को सुनना, और सुनकर उसके अनुसार आचरण करना और उस साँचे में अपने-आपको ढालना, जिस साँचे में वह ढलने का आदेश दे यह शिक्षा का तृतीय आदर्श है।"

- महात्मा हंसराज

thearyasamaj.org

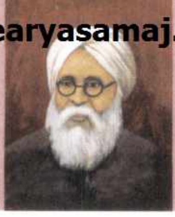

with best Compliments

MCM DAV COLLEGE
FOR WOMEN

Sector 36 - A, Chandigarh. Phone: 0172 2603355 Fax: 2613047

Scholarship for students seeking admission with 90% marks or above

AC FOOD PLAZA | MULTI MEDIA HALL | MEDICAL /DENTAL CLINIC | CYBER CAFÉ | PERFORMERS GALLERY

ADMISSION NOTICE

POST-GRADUATE DEGREE PROGRAMMES

M.A.: Economics, English, Sociology, Psychology
M.Com.

POST-GRADUATE DIPLOMA PROGRAMMES

Mass Communication, Computer Applications, Cosmetology & Beauty Care

BACHELOR DEGREE PROGRAMMES

B.A. : General, Vocational (Office Mgmt. & Secretarial Practice, Functional English)

Honours : English, Economics, Psychology, Pub. Admn., Sociology, Pol. Sc, History, Hindi.

B.Sc. : Non Medical, Medical, Computer Applications, Microbial & Food Technology

B.Com, BCA, BBA, B.Com (Honours)

ADD-ON COURSES

Communicative English, Cosmetology & Beauty Care, Video Reporting, Interior Designing & Decoration, French.

HIGHLIGHTS

• Rated Topmost Women's College in the region based on a survey made by India Today • 27 Top 3 positions in Panjab University, Chandigarh • 100% results in 99% courses • Winner of Women's General Efficiency Sports Shield 37 times in 44 years • Holistic Development of its stake-holders.

Well Furnished Hostel with all modern amenities (Hostel with 6 blocks for around 950 students) & Multipurpose hall)

• Health care room • Students lounge • Celebration ground • Hostel library • Common rooms with home theater system • Value added facilities like: Evening cafeteria, Fruit cum juice shop, Book-cum-tuck shop, Chemist shop, STD PCO kiosk, Beauty Parlour • RO purified water facility.

www.mcmdavcw-chd.edu

Dr. Puneet Bedi
(Principal)

with best Compliments

॥ ओ३म् ॥

DAV Cent. Public School

An English Medium, Co-educational Sr. Secondary School, Affiliated to CBSE, Delhi

L-BLOCK, SHASTRI NAGAR, MEERUT

Ph.: 0121-2708712, 2709119

email : davmeerut123@gmail.com | www.davmeerut.org

BRITISH COUNCIL INTERNATIONAL SCHOOL AWARD 2014–2017

Holistic Education with Global Outlook

28 Years of Excellence

Teaching. Learning. Sharing. Caring

You can not teach people anything, you can only help them Discover it within themselves

Our Torch Bearer

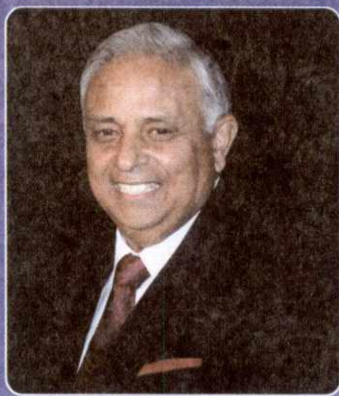

Our torch bearer **Shri Punam Suri Ji,** President, DAV CMC, New Delhi, Chairman School LMC, is a versatile visionary with magnetic personality and modern approach. His broad minded legendary outlook gives us momentous growth. He is a philanthropist at heart and has always been a constant source of inspiration.

Shri Punam Suri
Honourable President, DAV CMC, New Delhi
Chairman, School LMC

Re-Discover

Saurabh Gautam
97% (Sc. Stream)
School Topper 2013-14
Selected in IIT, BHU

Ms. Juhi Malik
Miss India Elite-2014 (Runner-up)
DAV Meerut, Alumni

Our Attractions

- Highly experienced, dedicated & caring teachers.
- Attractively designed Smart Classes.
- Well-equipped Library and Labs.
- Facility of almost all sports and games.
- Special emphasis on co-curricular activities.
- Excellent Board and Professional Results.

Our Objectives:

- Compete with yourself~Yes, I CAN!!
- To prepare young minds to act as leaders tomorrow.
- To stimulate learning environment.
- To enlighten and empower.
- To imbibe confidence, adventure, creativity, tolerance and integrity in our students.

Dr. V. Singh
Manager School LMC

Dr. Alpna Sharma
Principal

thearyasamaj.org

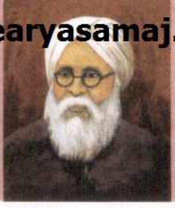

आत्मा और परमात्मा दोनों दृष्टिगोचर नहीं होते

● श्री हरिश्चन्द्रवर्मा 'वैदिक'

किन्तु जब परमेश्वर विभिन्न प्रकार की दृष्टियों को उत्पन्न कर देता है तो उसके सारे वैभव को देखकर उसका ज्ञान होने लगता है। इसी प्रकार आत्मा भी जब शरीर को धारण करता है तब उसके सम्बन्ध से ज्ञान, कर्म और सुख दुखों को देखकर उसका भी ज्ञान होने लगता है और यह सिद्ध हो जाता है कि शरीर से परे भी एक शक्ति अवश्य है।

शरीर–साधनों के सम्बन्ध से सुख दुःखादि का ज्ञान करने वाला, देखने वाला, सुनने वाला, बोलने वाला, श्वास प्रश्वास लेने वाला और स्पर्श का बोध करने वाला, तथा प्रेम, अनुभव विचार और स्मरण करने वाला, यह सब जड़ का धर्म नहीं है, 'आत्मा' का है जो सूक्ष्म शरीर के माध्यम से उपरोक्त गुणों को स्थूल शरीर से सब भोग करता है। और जब जीवात्मा का स्थूल शरीर से (रोगादि अथवा किसी दुर्घटना से) वियोग हो जाता है, तब सब लीला, यह मेरा है वह तेरा है, समाप्त हो जाता है। केवल वह अपने जीवन में जो कुछ भला बुरा न्यूनाधिक किया था और कर रहा था उन सब का सूक्ष्म संस्कार उसके साथ हो जाता है। यह बात लोक प्रसिद्ध भी है, पड़ोस के लोग भी जान जाते हैं कि वह किस प्रकृति का व्यक्ति था। यही उनके कर्मानुसार स्वभाव संस्कार के अनुसार उसकी योनि ईश्वरीय नियमानुसार, तो हो जाती है और उसी प्रकृति की योनि में पुनः प्राण के माध्यम से नए शरीर को धारण करने के लिए भ्रूण में प्रवेश कर जाता है। जिसे विज्ञान भी नहीं देखपाता ।

यदि स्वभाव संस्कार अच्छे हैं तो मानव योनि उसके लिए खुली रहती है। वह मृतात्मा पुनः जब माता के गर्भ में प्रवेश कर जाता है तब (रज) अणु और वीर्य के योग से बना सूक्ष्म अंगहीन के शरीर में धड़कन की गति आरंभ हो जाती है। उसके पश्चात गति का स्थान हृदय बन जाता है। फिर माता के रस, रक्तादि से उसका सर्वांग बनने और भ्रूण में पल रहे शिशु के पुष्ट होने में नौ मास लग जाते हैं। उसके पश्चात ईश्वरीय नियमानुसार शिशु का जन्म हो जाता है और वह प्राण वायु (ऑक्सीजन) से जुड़ जाता है और श्वास–प्रश्वास द्वारा शरीर को जीवन प्राप्त होने लगता है।

जब तक इस शरीर में आत्मा के रहने से प्राण क्रियाशील था तब तक देखना, सुनना, बोलना, प्राणापान और स्पर्श क्रिया का बोध आत्मा को सूक्ष्म शरीर के संबंध से होता रहता था। परन्तु जब आत्मा के साथ प्राण, शरीर से निकल गया तब यह शरीर मुर्दा (मृत) हो गया, अब वह उसके भीतर बाहर सभी साधन एवं जीवन उपयोगी तत्त्वों के रहने से भी न देख सकता, न सुन सकता, न बोल सकता और न हाथ–पैरों को चला सकता। इस विषय को लिखने का मेरा तात्पर्य यह है कि इसी प्रकार सृष्टि रचने की सामग्री के सभी परमाणु–सृष्टि के पूर्व अन्धकार में आच्छादित मुर्दे के समान थे, जब परमेश्वर की ओर से उनमें विज्ञान सम्बंधी नियम शक्ति प्रवेश कर गई, तब सभी कण सक्रिय होने लगे। उसके पश्चात एक विशेष कण के संबंध से परमाणुओं का समूह द्रव्यमान होकर सारे विश्वादि की सृष्टि ईश्वरीय नियमानुकूल होने लगी। आज जो कुछ हम देख रहे हैं जैसे–भूमि, जल, वायु अग्नि और अन्तरिक्ष, इन्हें जीवन उपयोगी बना देना इन सब तत्त्वों का आविष्कार और उन्हें भिन्न भिन्न रूपों एवं गुणों से युक्त कर देना यह सब बिना विद्या विचार के स्वयं नहीं बन सकते थे।

परमेश्वर इस धरती को सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् बनाना चाहते थे, वनस्पतियों तथा कर्मों के फल भोग के लिए शरीर धारी प्राणियों एवं उनसे सर्वश्रेष्ठ मनुष्यों को उत्पन्न करना चाहते थे इसलिए पंच तत्त्वों को विधि पूर्वक उत्पन्न कर दिया।

यदि स्वभाव संस्कार अच्छे हैं तो मानव योनि उसके लिए खुली रहती है। वह मृतात्मा पुनः जब माता के गर्भ में प्रवेश कर जाता है तब (रज) अणु और वीर्य के योग से बना सूक्ष्म अंगहीन के शरीर में धड़कन की गति आरंभ हो जाती है। उसके पश्चात गति का स्थान हृदय बन जाता है। फिर माता के रस, रक्तादि से उसका सर्वांग बनने और भ्रूण में पल रहे शिशु के पुष्ट होने में नौ मास लग जाते हैं। उसके पश्चात ईश्वरीय नियमानुसार शिशु का जन्म हो जाता है और वह प्राण वायु (ऑक्सीजन) से जुड़ जाता है और श्वास–प्रश्वास द्वारा शरीर को जीवन प्राप्त होने लगता है।

अतः इन सब तत्त्वों की रचना स्वयं नहीं बनी, इन सबके जोड़ को विद्या विज्ञान की शक्तियों से बनाया गया है। तभी ये सूक्ष्म से विराट पर्यन्त की सारी अर्थात तृण से लेकर सूर्य पर्यन्त की सृष्टि ईश्वरीय महान शक्तियों के घेरे में अपने अपने गुणानुसार क्रियाशील है।

देखिए 206 प्रकार के मानव हड्डियों के जोड़ों को किस बुद्धिमानी से बनाया गया है। उसके पश्चात सारे शरीर में रक्त संचालन के लिए स्नायुओं का विस्तार बुद्धिपर्वक हुआ है और यह सब भोजन से बन रहे रस, रक्त आदि सप्त धातुओं से ईश्वरीय साँचा के अनुसार 'आत्मा और प्राण से संबंध बनता है। उसके पश्चात शरीर के उपकरणों से बन रहे सारे उत्पादन को चर्म से ढक दिया गया है। और बाह्य व्यवहार के लिए पाँच कर्मेन्द्रियों का ग्यारहवीं इन्द्रिय मन को मंत्री बना दिया गया। इस शरीर में जितनी क्रियाएँ हो रहीं हैं, वे सब प्राण और जठराग्नि के द्वारा ही हो रहीं हैं। जिसे वेद ने 'वैश्वानरअग्नि' कहा है, यह अग्नि सूक्ष्म शरीर से उत्पन्न होती है। यह बाहर की अग्नि नहीं है, उससे अलग न जलाने वाली है।

प्राणिविज्ञान के रचियता ने मानव शरीर में कितनी मात्रा कोलेस्ट्रोल (चर्बी) शुगर (चीनी) और रक्त का दबाव (प्रेसर) आदि सब होनी चाहिए, ये निर्धारित कर दिया है। यदि किसी कारणवश सर्दी ज्वरादि हो जाए तो ताप 98 से 100 डिग्री हो जाए तो शरीर अस्वस्थ हो जाता है, व्याधि के कारण उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता और जब चिकित्सक द्वारा शरीर ठीक हो जाता है तब वह स्वस्थ और प्रसन्न होकर सारे कर्मों को करने लगता है। यह शरीर पाप–पुण्य अर्थात सुख–दुख की गठरी है जब तक शरीर स्वस्थ है तब तक सब ठीक है और जब बिगड़ जाता है, रोग से अतिक्षीण हो जाता है तब आत्मा आयु की समाप्ति पर शरीर छोड़ देता है।

पंच तत्त्व के गुण और क्रिया–सर्वप्रथम पंचतत्त्व से पाँचगुण–गंध, रस, स्पर्श, रूप और शब्द। फिर उन्हीं तत्त्वों से पाँच–प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान प्राणियों को प्राप्त होता है। इसके अलावा

1. भूमि माता धारक और पालक है। इसी भूमि से हम सबको अन्न फल, फूल, सुगन्ध, वनस्पति से औषधियाँ प्राप्त हो रहीं हैं। इसके अतिरिक्त खनिज पदार्थों कोयला, धातु गैस एवं तेल आदि प्राप्त होता रहता है।

2. जल से रस बन रहे हैं, प्राप्त हो रहे हैं, उससे पिपासा भी मिटती है और सफाई भी हो रही है, पौधों और प्राणियों को जीवन मिल रहा है। सागर के जल सूर्य के ताप से वाष्प होकर वायु के योग से ऊपर बादल बन जाते है, इन काले बादलों में जल फिल्टर होकर धरती पर बरसने लगते हैं। साथ ही वायु प्रवाह से जब दो विरोधी बादल आपस में टकराते हैं तब बिजली के साथ–साथ गरजना की तड़तड़ाती हुई ध्वनि भी साथ उत्पन्न होती है, किन्तु प्रकाश की गति तीव्र हाने से वह पहले दिखती है और ध्वनि की गति उससे कम होने से बाद में सुनाई देती है। अतः ये पाँचों तत्त्व परस्पर के संबंध से छठे की उत्पत्ति के कार्य–कारण बनते रहते हैं।

3. वायु में अनेक प्रकार के उत्पादन मिले हुए होते हैं। वायु में प्रवाह और स्पर्श की क्रिया है। उससे प्राणी को ऑक्सीजन और वनस्पतियों को कार्बनडायऑक्साइड प्राप्त होता है। और उनके तरंग कणों से माध्यम से हम लोग परस्पर बातों और ध्वनियों को सुन पाते हैं। वायु में बहुत गुण हैं वर्षा का हेतु भी वायु है।

4. अग्नि में रूप का गुण है। सूर्यादि से दर्शन शक्ति नेत्र को प्राप्त हुई है।, इसलिए नेत्र उसके संबंध के रूपों को देखता है। अग्नि चार प्रकार की है जिनसे मानव को लाभ होता है वेद कहता है– **रक्षन्तु त्वग्नयो मे अप्स्वन्ता रक्षतु त्वामनुष्यायमिन्धते। वैश्वानरो रक्षतु जातवेदादिव्यस्त्वीमाप्रधाग् विद्युता सह।।** (अथर्व. 8–1–11) जो अग्नि जलों में है, तेरी रक्षा करें। जिस (अग्नि) को मनुष्य प्रज्वलित करते हैं, वह तेरी रक्षा करे (जातवेद, वैश्वानरः) मनुष्य शरीर में रहने वाले अग्नि तुझे न जलाएँ। सूर्य अग्नि के किरणों से सारे प्राणियों को ऊर्जा प्राप्त हो रहा है। यदि सूर्य से ऊर्जा प्राप्त न हो तो पौधों को फल–फूल एवं उन्हें रंग प्राप्त न हों। अतः विद्युत से सारे वैज्ञानिक यथा क्रियाशील हो रहे हैं।

5. अन्तरिक्ष (दिशाओं) में शब्द का गुण है उसे सुनने के लिए कान का निर्माण हुआ। मानव को जितने प्रकार के शब्दादि सुनाई देते हैं, वे सब अंतरिक्ष में विद्यमान परमाणुओं के प्रकाश तरंगों के माध्यम से ही सुनाई दे रहे हैं। अन्तरिक्ष त्रसरेणु अणु और परमाणुओं का भण्डार है। और उन्हीं का समूह विभिन्न प्रकार की सृष्टि के कार्य कारण बनते हैं। अतः अन्तरिक्ष में विभिन्न प्रकार की शक्तियों के कण होते हैं।

मु. पो. मुरारई जिला बीरभूम (प. बंगाल)
73129
मो. 815807811

thearyasamaj.org

with best Compliments

D.A.V. COLLEGE (Lahore), Ambala City

♦ NAAC Accredited Grade 'A' ♦ College with Potential for Excellence

0171: 2444826, 2443121 Fax: 2444188 E-mail davcambala@yahoo.com

First D.A.V. COLLEGE established by:

DAV COLLEGE MANAGING COMMITTEE, NEW DELHI

FOUNDER PRINCIPAL : MAHATMA HANS RAJ

COURSES OFFERED:

- B.Sc. (Medical, Non-Med., Electronics, Computer Science)
- B.Sc. (Bio-Technology)
- B.Sc. (Fashion Designing)
- BCA
- BBA
- B.Com. (General)
- B.Com. (Vocational)
- B.A.
- M.A. (English)
- M.A. (Hindi)
- M.Com.
- M.Sc. (Computer Science)
- M.Sc. (Mathematics)

"A Research Journal of Humanities, Commerce and Science of DAV College, Ambala" with ISSN: 2348-0300 published.

(Dr. M.R. Gupta)
Principal

thearyasamaj.org

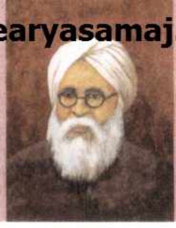

with best Compliments

KB DAV SENIOR SECONDARY PUBLIC SCHOOL , SECTOR 7, CHANDIGARH

Shri Punam Suri Ji, President DAV College Managing Committee, New Delhi visits KB DAV Senior Secondary Public School, Chandigarh.

GRAND 67th INDEPENDENCE DAY CELEBRATIONS AT KBDAV

Shobha Yatra 2014 : KBDAV wins First Prize for the third consecutive year.

SCHOOL HOSTS CBSE NORTH ZONE ROLLER SKATING CHAMPIONSHIP 2014
More than 1006 Students participated in Speed Skating Events.

SCHOOL ALSO HOSTED NET BALL CHAMPIONSHIP - 2014
Players from all over India participated in the Mega Event

School has two Skating Rinks of International Standards & Specifications.

The success of any school is determined by the success of its students. And KBDAV-7 students are high achievers!

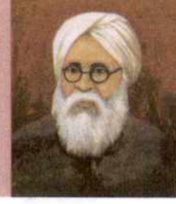

with best Compliments

D.A.V. Centenary Public School

Jagjeetpur, Laksar Road, Kankhal, Hardwar
(Affiliated to CBSE, New Delhi up to +2 level)
Phone: 01334-245042 / 241742
Website www.davhardwar.org E-mail-davhardwar@rediffmail.com

President DAV CMC Shri Punam Suri Ji, being welcomed in the school campus

SALIENT FEATURES
* Excellent Board Results
* Experienced, well qualified diligent staff
* Well equipped labs, well stocked & air conditioned Library
* Transport facility available
* Hostel Facility for Boys from class V–XII
* Stress free & congenial environment
* School, a plethora of co-curricular activities
* Excellent sports facilities for both indoor & outdoor games.

OUR VISION

D.A. V. Centenary Public School, Hardwar envisions a robust, vibrant and holistic education that will engender excellence in every sphere of human endeavor. The institution is committed to provide quality education to promote intellectual, social and cultural vivacity among the students. The school endeavors towards evolving a deductive environment that empowers the tender hearts to become global leaders. The institution claims to provide a congenial ambiance to nurture future leaders with unparallel COMPETENCE, CONFIDENCE and ENTERPRISE.......

OUR MISSION

To motivate students to develop their passion for learning; Encourage creativity & logical thinking; Quality Education & character building; Explore & scale new horizons with futuristic vision; Provide perfect academic ambience rooted in ethical values of DAV culture; All round & integrated development of personality.

Shri Punam Suri Ji
Chairman

Shri M.K. Dhar
Manager

Dr. V. Singh
Regional Director

Sh. P.C. Purohit
Principal

स्थित-प्रज्ञ महात्मा हंसराज

(स्व.क्षितीश वेदालंकार जी की एक रचना)

संसार में ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो सुख की कामना नहीं करता और दुःख को दूर नहीं रखना चाहता सच तो यह है कि हमारी सारी चेष्टाएँ और क्रियाएँ केवल इसीलिए होती हैं कि किसी तरह सुख मिले और हम दुःख से बचे रहें। सुख पाने और दुःख से बचने की यह लालसा जन्मजात है, स्वाभाविक है। इसीलिए सुख पाकर प्रसन्न होना और दुःख पाकर विचलित हो उठना भी उतना ही स्वाभाविक है। बचपन से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण तक यही प्रवृत्ति मनुष्य के प्रत्येक कर्म को संचालित करती है। इसी प्रयोजन से मनुष्य कर्म करता है और यदि यह प्रयोजन न हो तो शायद मनुष्य कर्म करना भी छोड़ देता।

हम विद्या क्यों पढ़ते हैं? धन क्यों कमाते हैं? मकान क्यों बनाते है? परिवार क्यों जोड़ते हैं? इष्टमित्रों की संगति में क्यों रहना चाहते हैं? हमसे वैरभाव रखने वालों को हम क्यों अपने पास भी फटकते नहीं देना चाहते? इसलिए न कि हमें उनसे अशुभ की आशंका रहती है? इतना ही नहीं अपने आलोचकों के प्रति हमारे मन में द्वेष भी जड़ जमाकर बैठ जाता है और वे हमारा अशुभ कर पाएँ, इससे पहले ही, हम अपनी ओर से उनका अशुभ करने की मन ही मन योजना बनाते रहते हैं। सुख के प्रति सुखदायक वस्तुओं के प्रति हमारा राग तथा दुःखदायक वस्तुओं के प्रति द्वेष भी उतना ही स्वाभाविक है।

पर यह बात सामान्य पुरुषों के लिए ही ठीक है। विशिष्ट पुरुषों के लिए नहीं। तभी तो हम उन्हें असामान्य समझकर महापुरुष कहने लगते हैं। इस जन्म-जात स्वाभाविक राग-द्वेष से, सुख-दुःख की भावना से छुटकारा पाना आसान है? भले ही आसान न हो पर इसके बिना मानव में वह विशिष्टता भी उत्पन्न नहीं हो सकती जो उसे सामान्य पुरुषों से कहीं अधिक ऊँचाई पर बिठाकर महापुरुष की संज्ञा से अभिषिक्त करती है। हरेक मनुष्य के अन्दर कहीं न कहीं पशुत्व छिपा होता है। जिस प्रकार पशु अपनी जन्मजात प्रवृत्ति (इस्टिंक्ट) से अलग नहीं हो सकता, उसी प्रकार सामान्य पुरुष भी राग-द्वेष की जन्मजात प्रवृत्ति से अछूता नहीं रह सकता। पर यदि यही सर्वकालीन सत्य हो तो 'मनुष्य' कहाँ टिकेगा, वह 'पशु' ही नहीं बना रहेगा? तब तो मनुष्य जन्म पाकर उसके लिए जो धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष ये चार पुरुषार्थ नियत हैं, उनका क्या होगा? आहार, निद्रा, भय, प्रजनन आदि तो मनुष्य और पशु में समान ही होते हैं-जो त्याग मनुष्य को पशु से पृथक् करता है, वही तो धर्म है। उसके बिना मोक्ष की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

थोड़ी गम्भीरता से सोचें तो दुःख और उनके कारण-भूत राग-द्वेष भी आखिर क्या हैं? क्या वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं? क्या जन्म का अर्थ मृत्यु भी नहीं है-क्योंकि जन्म है तो मरण भी अवश्यम्भावी है। इसी तरह सुख का अर्थ भी तो दुःख ही है, क्योंकि सुख की लालसा में ही दुखः छिपा हुआ है। जिस तरह दिन है, तो रात भी है और ये दिन और रात दोनों बारी-बारी से आते रहते हैं, उसी तरह सुख है तो दुःख भी अवश्य है और वे भी दिन और रात की तरह बारी-बारी से आते रहते हैं। दिन के बाद रात, रात के बाद दिन। सुख के बाद दुःख, दुःख के बाद सुख। ये दोनों क्रमशः परिवर्तित होते रहते हैं। महाकवि कालिदास ने इसलिए कहा है-

चक्रवत् परिवर्तन्ते सुखानि च दुःखानि च।

सुख और दुःख दोनों चक्र की तरह घूमते रहते हैं-चक्र का कभी एक हिस्सा ऊपर आ जाता है, कभी दूसरा।

वास्तव में सुख और दुःख दोनों सापेक्ष शब्द हैं। एक नहीं, तो दूसरा भी नहीं। एक है तो दूसरा भी अवश्य है। अपने आप में दोनों अलग-अलग अस्तित्वशून्य है। गर्मियों में ठंडा शरबत अच्छा लगता है। पर वही ठंडा शरबत कोई आपको भरी सर्दियों में पेश करे, तो आपको कैसा लगेगा? कहीं आप उसे मन ही मन पागल तो नहीं कहने लगेंगे? एक छोटा-सा परीक्षण करके ही क्यों न लें। गरम पानी में से हाथ निकालकर सादे पानी में डालिए तो ठंडा लगेगा। फिर ठंडे पानी में से दूसरा हाथ निकालकर सादे पानी में डालिए, तो वह गरम लगेगा। पर सादा पानी तो निरा सादा पानी है, वह न ठण्डा है, न गरम आपको वह परिस्थिति विशेष में ठण्डा भी लगा और गरम भी। यही बात सुख और दुःख के साथ भी है। जिसे आप सुख समझते हैं, वही परिस्थिति-विशेष में दुःख लग सकता है और जिसे आप दुःख समझते हैं, स्थिति बदलने पर वही आपको दुःख लग सकता है। फिर जो आपके लिए दुःख है, वह औरों के लिए सुख हो सकता है। आज भी दुनियां में अपने दुःख से दुखी होने वाले उतने नहीं हैं जितने दूसरों के सुख से दुःखी होने वाले हैं। फिर दुहराते हैं-औरों के सुख से दुःखी। और इसी का अर्थ-दूसरों के दुःख से सुखी। औरों को कष्ट में देख कर, उनका शोषण करके, अपने सुख के साधनों का सरंक्षण करने वालों की भी आज कमी थोड़े ही है।

कहने का भाव यह है कि सुख के प्रति राग और दुःख के प्रति द्वेष कितना ही स्वाभाविक क्यों न हो, पर वह मानव-जीवन को उच्चतर स्तर पर स्थापित करने वाला नहीं है। इसीलिए स्थित-प्रज्ञ महापुरुष सुख और दुःख समानभाव से व्यवहार करते हैं, क्योंकि उनके सामने जीवन का कोई उच्च लक्ष्य होता है। महात्मा हंसराज इसी कोटि के स्थितप्रज्ञ महापुरुष थे-दुःख में अनुद्विग्न और सुख में विगतस्पृह । स्थितप्रज्ञ की यही तो पहली परिभाषा है। (सुभाषित देखें)। उदाहरण लीजिए-

महात्मा हंसराज के पुत्र बलराज पर सन् 1611 में लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने के षड्यंत्र में शामिल होने के आरोप में मुकदमा चला और अन्त में काले पानी की सजा हुई। जिस दिन अदालत में निर्णय सुनाया जाना था उसी दिन महात्मा जी को जालन्धर में आर्यसमाज उत्सव पर जाना था। महात्मा जी अदालत में गए, फैसला सुना और वहाँ से सीधा स्टेशन पहुँच कर जालन्धर रवाना हो गए। जालन्धर में उन्होंने किसी से उस सजा की चर्चा तक नहीं की, सारा आर्यजगत् इस अभियोग के परिणाम की बड़ी उत्सुकता और चिन्ता से प्रतीक्षा कर रहा था। अगले दिन लोगों ने जब अखबारों में क्रान्तिकारी बलराज को काले पानी की सजा का समाचार पढ़ा, तब सभी हतप्रभ रह गए। हतप्रभ केवल सजा की भयंकरता पर ही नहीं बल्कि महात्मा जी की अद्भुत स्थितप्रज्ञता पर भी।

इस प्रकार की घटनाएँ महात्मा जी के जीवन में भरी पड़ी हैं। उनका वर्णन करने से लेख इतना बढ़ जाएगा कि स्थान उसकी अनुमति नहीं देता इसलिए अन्त में केवल एक ही घटना का उल्लेख कर प्रसंग समाप्त करते हैं।

सन्1633 में अजमेर में ऋषि निर्वाण अर्ध-शताब्दी के अवसर पर कुछ आर्यबन्धु वीतरात स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज की सेवा में उपस्थित होकर बोले-''आप महात्मा हंसराज जी को परामर्श दीजिए कि वे संन्यास लेकर आश्रमों की मर्यादा का पालन करें।'' स्वामी सर्वदानन्द जी ने कहा पगलो! वह तो सफेद कपड़ों में भी संन्यासियों से अधिक त्यागी, तपस्वी और सुख-दुःख की भावना से ऊपर हैं केवल कपड़े रंगने से होगा?''

त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज की स्थितप्रज्ञता का इससे बढ़कर प्रमाण और क्या होगा?

"छोटी-छोटी बातों में मानव का चरित्र भली प्रकार से जाना व जाँचा जाता है। अन्तरात्मा (Conscience) बनाने के बाद आप में निर्मलता आ जाएगी, जो सबसे प्रथम बात है। वचन के सच्चे बनो!"

- महात्मा हंसराज

with best Compliments

DAV COLLEGE AMRITSAR

Rated Star College in Life Sciences by Ministry of Science & Technology, Govt. of India
Accredited A+ By NAAC, Bangalore, College with Potential for Excellence

This Institution on the strength of its State-of-Art infrastructure, sublimated Academic Excellence, high parameters of success in NCC, NSS, Co-curricular activities and Sports is moving on a trail from excellence to perfection.

OUR STRENGTHS

- Innovative Skilled and Knowledgeable Faculty with large number of Ph.Ds
- Web-based Teaching-cum-Learning Methodologies.
- AC & Sound Proof Cyber and fully automated Library
- Fully Acoustic College Auditorium & Seminar Room.
- Eight Hi-tech Computer Labs with Internet, ISDN, PSDN, Dial-up Connections.
- Two Bio-technology Labs with incubator.
- Mass Communication & Video Production Department with Audio/Video Labs & Studio
- Hi-tech Communication lab with latest English Language Software & Talk-back System
- Excellent Facilities for Sports, State of Art Gymnasium and Boxing Ring
- Multinational companies like Infosys, Wipro,

COURSES OFFERED

Post Graduate Programmes

MA (English) MA (Economics) MSc (Comp Sc)
MA (History) MA (Hindi) MA (Punjabi)
MSc (Maths) M.Com MSc (Physics)
Post Graduate Diploma in Computer Application

Under Graduate Programmes (Professional)

Bachelor of Computer Application (BCA)
Bachelor of Journalism & Mass Comm (BJMC)
Bachelor of Business Administration (BBA)
Bachelor of Commerce (Professional)
Bachelor of Science (Information Technology)
Bachelor of Science (Biotechnology)
Bachelor of Multimedia (BMM)

Under Graduate Programmes (Regular)

Bachelor of Commerce (Regular)
Bachelor of Science (Computer Science)
Bachelor of Science (Medical)
Bachelor of Science (Non-Medical)
Bachelor of Science (Economics)
Bachelor of Arts

Vocational Subject

Biotechnology, Functional English
Mass Communication & Video Production
Computer Application

Evening Shift Programmes

Bachelor of Arts
Elective Subject: Economics, Pol. Sc. Philosophy, History, Computer Science, MCVP

Elective Subject in Arts

History, Philosophy, Political Science, Physical Education, Economics, Computer Science, Travel & Tourism
Elective Hindi / English / Punjabi / Sanskrit

Ring : 0183-2553377, 2534971,
E-mail: davasr@yahoo.com, website: www.davindia-asr.org

Dr K N Kaul
Principal

thearyasamaj.org

ओ३म्

DAV PUBLIC SCHOOL

THERMAL COLONY PANIPAT

Ph.0180-2566159 Web Site-www.davpanipat.in e-mail-dav@davpanipat.in

PRIDE OF DAV

हीरो हैं हम वतन के – सारा जहाँ हमारा!!

RECORD HOLDERS

Divyanshu XII
Youngest Author of World
Written 18 Books at the age of 15 Year
Guinness Book of world Recoord

Navraj
Limca Book of World Record
Guinness Book of World Record

Ram Kishan
Limca Book of World Records

Major Dharmjot Singh
Ist Haryanavi Mount Everest Winner

Simran
National Winner
State Record Setter in Swimming

Principal Dr.D.Vidyarthi National CBSE Awardee, Sahitya Academy Awardee, Red & White Bravery Awardee and 35 other awards winner with Sh. Punam Suri, President, DAVCMC, New Delhi

SCHOOL WITH A DIFFERENCE

- International School Award
- National Green School Award
- National Avantika School Award
- National Sports School Award
- ISO Certified School

SCHOOL WITH SPECIALITIES

- CBSE International Classes
- State Sports Nursery For Judo
- State Sports Nursery for Swimming
- Hostel Facilities from 2015

SCHOOL WITH HONOUR

* Produced Guinness Book of World Record Holder
* Limca Book of World Record Holder
* International Winner in Sports
* International Winner in Science
* CBSE X Topper
* National Winners in Different Fields of Life

Arsh Shah Dilbagi XII
Google Global Science Awardee

Vipul Gupta X
CBSE National Topper
Class X 2006

Prerak Sachdeva X
Winner of I-Genius Scholarship

Sukriti XI
State Literary Awardee 2009

Sakshi Gulati
Winner Kaun Banega Crorepati

Er.V.B.Bansal
CHAIRMAN

Sh.Nanak Chand
MANAGER

with best Compliments

thearyasamaj.org

with best Compliments

ASPIRE ACT ACHIEVE

Giving wind to the wings of hopes and dreams

The school aspires to be an institution of excellence bringing out global and national leaders in all fields. The students of the school are guided to develop values such as – excellence, integrity, empathy, citizenship, responsibility towards self, society and country. Knowledge with wisdom, eternal human values and skills to excel with a global perception reverberate in the school. The school motto ASPIRE, ACT, ACHIEVE is sincerely adopted with cross curricular, activity based and highly interactive teaching-learning systems.

- **Excellent** category for the class **XII CBSE Board results** among the DAV schools, a position we have been sustaining proudly
- With clear and common focus to impart 21st century skills, administrators, teachers, students, and parents have set high standards of academic and co-curricular performance
- An excellent sports culture with students winning national and international trophies
- A robust and one of the best I.T. systems to support the excellent classroom teaching
- Alumni of the school are excellent professionals and global leaders

With the aim to develop our students holistically, DAV Public School, Sreshtha Vihar bestows flexibility, adaptability of mind and preparedness to face all challenges with wisdom, courage, creative, critical and analytical thinking.

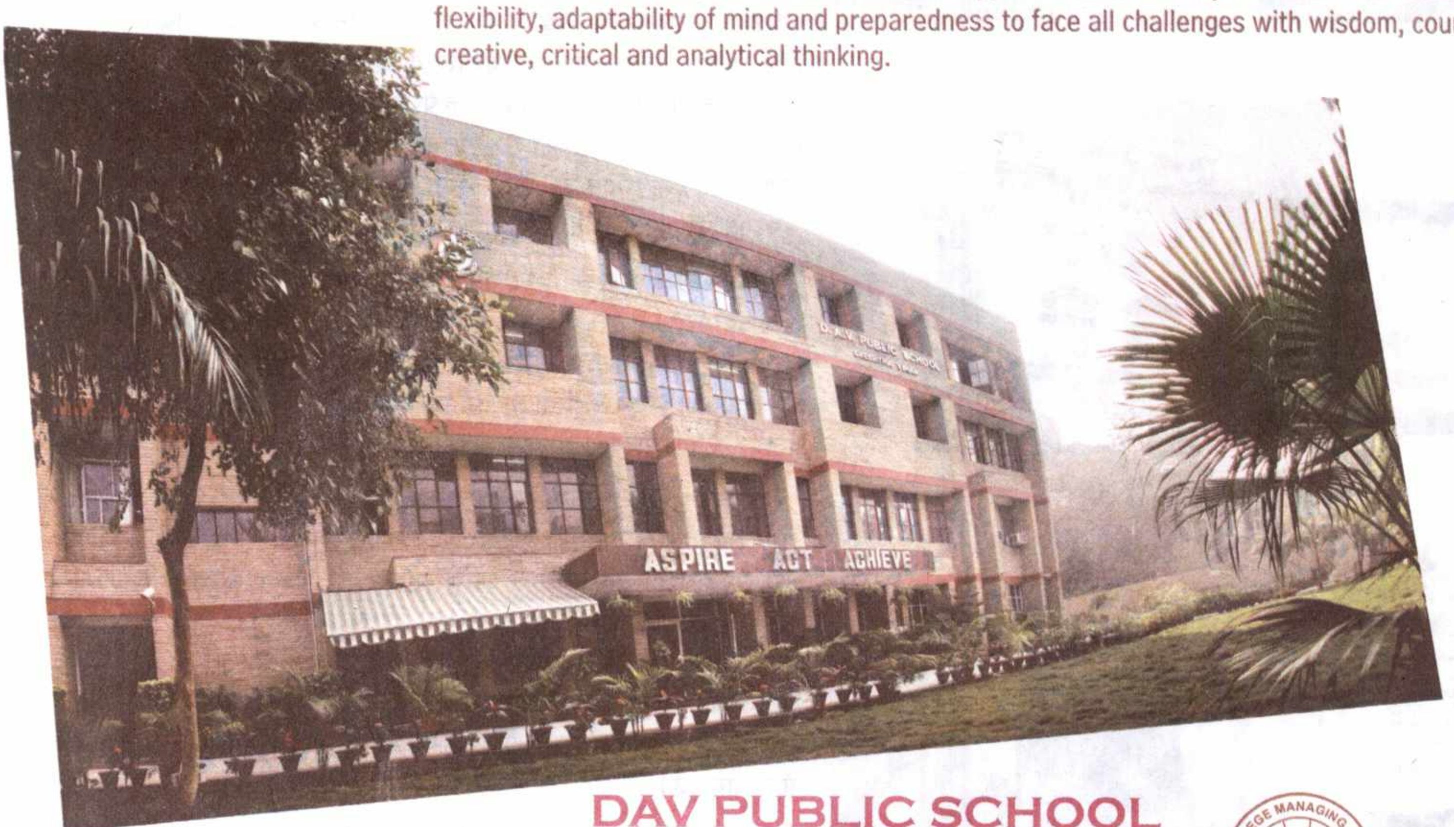

DAV PUBLIC SCHOOL
SRESHTHA VIHAR, DELHI

web site - www.davsreshtha.com, e-mail - davsvd@hotmail.com
tel - 011 - 22144102, 011 - 22153874, fax - 011 - 22165398

D.A.V. COLLEGE MANAGING COMMITTEE
ओ३म्
ESTD 1886

thearyasamaj.org

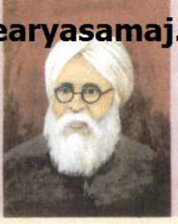

महात्मा हंसराज स्मृति को एक श्रद्धांजलि

● प्रेम लता गर्ग

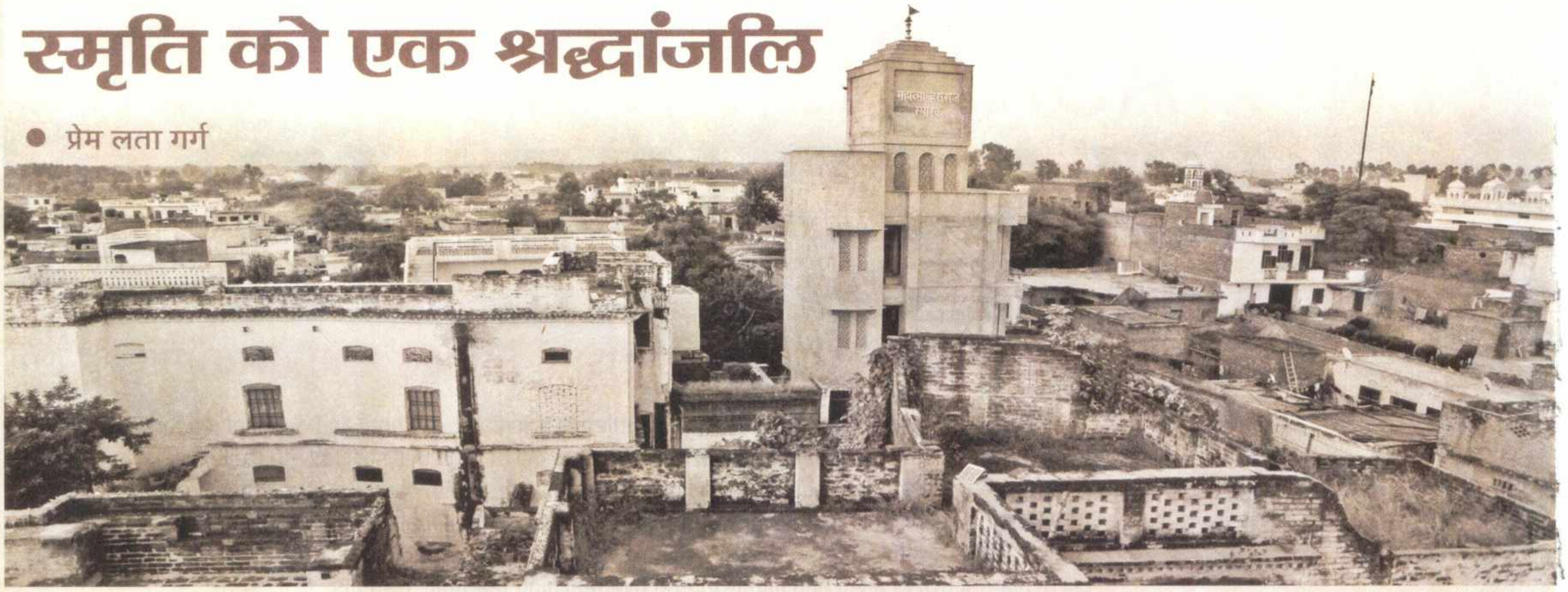

श्रीमती ठाकुर देवी धर्मपत्नी महात्मा हंसराज।

तपोमूर्ति महात्मा हंसराज

मन्दिर आर्य समाज बजवाड़ा

स्वर्गीय धनीराम भल्ला के वंशजों ने अपनी हवेली डी.ए.वी. आंदोलन को दान देकर 'महात्मा हंसराज स्मारक' के विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया है।

बजवाड़ा ! किसी समय देश के सबसे बड़े जिले होशियारपुर के नगर मुख्यालय से सटा उनींदा सा कस्बा। कहते हैं यह कभी व्यापार का बड़ा केंद्र था। यहाँ की खंडहरनुमा हवेलियां इस हकीकत की गौरव गाथा कहती हैं। विकास के असर से अछूता गाँव आज भी अपने अतीत के वैभव का बखान करता है। तीन ज्ञात इतिहास पुरुषों का बजवाड़ा की मिट्टी से सीधा रिश्ता है। मुस्लिम शासक शेर शाह सूरी ने यहीं आंखें खोली थीं। इतिहास में शेर शाह सूरी पेशावर से ढाका तक सम्पर्क मार्ग बनाने के लिए चर्चित हैं। अंग्रेजों के राज में इसे ग्रॉड ट्रंक (जी.टी.) रोड के नाम से जाना जाता था। आज शेर शाह सूरी राजमार्ग नम्बर –1 के नाम से जानते हैं। देश के एक बड़े मैदानी भाग को जोड़ने वाला यह मार्ग भारतीय इतिहास के उतार–चढ़ाव का मौन साक्षी है। दसवें सिक्ख गुरु, गोविंद सिंह का एक विवाह बजवाड़ा में हुआ था। भारतीय इतिहास में गुरु गोविंद सिंह का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। वे आध्यात्मिक पुरुष थे, योद्धा थे, कवि हृदय थे, कुशल संगठक, प्रशासक व दूरदर्शी थे।

इसी बजवाड़ा की मिट्टी ने एक तीसरे महानायक को जन्म दिया था। आज देश और दुनियाँ उन्हें सामाजिक विकास व सामाजिक बदलाव के महानायक महात्मा हंसराज के नाम से जानती है। ज्ञान के प्रचार–प्रसार से जुड़े व्यक्तियों के लिए बजवाड़ा का महत्व किसी तीर्थ–स्थल से कम नहीं है। डी.ए.वी. आन्दोलन के नन्हे से बिरवे को विशाल वट वृक्ष बनाने का श्रेय महात्मा हंसराज के त्याग–समर्पण और निष्ठा को है। 19 अप्रैल, 1864 को इसी ऐतिहासिक कस्बे में उन्होंने अपनी आंखें खोली थीं।

उस बालक के रुदन में थी सामाजिक बदलाव की घोषणा। 19 अप्रैल 1864 से 15 नवम्बर, 1938 तक जब उन्होंने पहली और अंतिम सांस ली लगभग 74 वर्षो का उनका जीवन देश के इतिहास के समानान्तर है। खंडहर होती हवेलियों और किले के बीच खड़ा है– गगनचुम्बी महात्मा हंसराज का स्मारक। उस पर लहराती ओ३म् की पताका–उनके गौरवशाली लेकिन झंझावातों से भरे जीवन की गाथा कहती है।

बचपन का कुछ समय बजवाड़ा में बिताने के बाद महात्मा हंसराज अपने बड़े भाई श्री मुल्ख राज भल्ला तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ लाहौर आ गए। लाहौर उस समय अनेक सम्भावनाओं का केन्द्र था। यहीं बालक हंसराज से महात्मा हंसराज कहलाने का इतिहास उन्होंने अपने कर्म की लेखनी से लिखा। 1 जून, 1886 को युवा हंसराज के जीवन–समर्पण के जल से डी.ए.वी. आन्दोलन का जो बीज बोया गया था, उनके जीवन–काल में ही विशाल वट वृक्ष बन चुका था, यद्यपि महात्मा हंसराज डी.ए.वी. आन्दोलन के संस्थापक नहीं थे, परन्तु इस की दशा और दिशा उनके कर्म से ही तय हुई।

बजवाड़ा से लाहौर जाने के बाद यद्यपि उनका पल–पल आर्य समाज और डी.ए.वी. आन्दोलन के लिए समर्पित था। उनकी प्रत्येक सांस पर डी.ए.वी. का नाम अंकित था स्वामी दयानंद सरस्वती के सिद्धांतों का रचनात्मक प्रचार–प्रसार ही उनके जीवन का पहला व अंतिम लक्ष्य था। घर–परिवार के हितों से ऊपर था उनके लिए डी.ए.वी. आंदोलन। इतनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद वे बजवाड़ा की सुध लेना नहीं भूलते थे। वहाँ के मित्रों–परिचितों व सगे–सम्बंधियों के निकट सम्पर्क में रहते थे। उनकी प्रेरणा व सोच से प्रभावित होकर ही उनके चचेरे भाई श्री धनीराम भल्ला ने जूतों का व्यवसाय

अपने अत्यंत व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद महात्मा हंसराज नियमित संध्यापासना हवन यज्ञ करते तथा सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में सम्मिलित होते थे। कराची में सम्पन्न महान यज्ञ के अवसर पर महात्मा जी ब्रह्मा के रूप में विराजमान है।

महात्मा हंसराज अपने परिवार सहित।

शुरू किया। यहाँ यह कहना प्रासंगिक होगा कि जातिगत रूढ़ियों के कारण उस दौर में यह व्यवसाय तथाकथित ऊँची जाति के लोगों के लिए वर्जित था। उनकी प्रेरणा से शुरू किए व्यवसाय से श्री धनीराम भल्ला ने जो ख्याति व धन अर्जित किया उसके कारण उनकी गिनती लाहौर के सफल व्यवसायियों में होने लगी। महात्मा हंसराज की प्रेरणा का ही परिणाम था कि वे आर्य समाज व डी.ए.वी. आन्दोलन की गतिविधियों में दिल खोलकर दान देते थे बल्कि स्वयं भी सक्रिय भाग लेते थे। आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रति महात्मा हंसराज का रुझान बजवाड़ा के आर्य समाज से ही हुआ था। वे बचपन से ही वहाँ के समाज में सक्रिय रहते थे। बचपन में बजवाड़ा के आर्य समाज से जो उनका सम्बंध बना, वह जीवन–पर्यंत बना रहा। बजवाड़ा 'आर्य समाज' में अपनी पत्नी श्रीमती ठाकुर देवी की स्मृति में उनके द्वारा बनवाया कमरा इस की वास्तविकता को प्रमाणित करता है।

डी.ए.वी. आंदोलन को जीवन समर्पित करने के बाद जितने भी डी.ए.वी. संस्थान अस्तित्व में आए वे उनके जीवंत स्मारक हैं। इन संस्थानों में शिक्षित–प्रशिक्षित विद्यार्थियों की विजय गाथाएँ भी महात्मा हंसराज के त्याग का ही बखान करती हैं। इनसे जुड़े लाखों विद्यार्थी अभिभावक, शिक्षक व कर्मचारी महात्मा हंसराज के ऋणी हैं। महर्षि दधीचि ने जिस प्रकार अपने देह दान से राक्षसों के वध का मार्ग प्रशस्त किया था उसी प्रकार महात्मा हंसराज ने अपने त्याग से देहरी–देहरी ज्ञान का दीप जला कर अज्ञान व गुलामी के तिमिर को बेधने का सफल प्रयास किया।

डी.ए.वी. आंदोलन ने उस स्थान को महात्मा हंसराज के स्मारक में रूपांतरित किया जहाँ उन्होंने पहली साँस ली थी। उनकी सोच के अनुरूप वहाँ न तो कोई कर्मकांड होता है न किसी अन्य रूढ़ि का अनुसरण। वहाँ होता है हवन। उस स्मारक में टँगे हैं कुछ दुर्लभ चित्र जो उनके उस जीवन की कहानी कहते हैं जो उन्हें साधारण व्यक्ति से महात्मा में परिवर्तित करते हैं। डी. ए. वी. आंदोलन के कर्णधार 'महात्मा हंसराज स्मारक' को एक ऐसे केंद्र के रूप में देना चाहते हैं जहाँ उन्नत पुस्तकालय व वाचनालय होगा जो साधु आश्रम, होशियारपुर स्थित के विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान के सहयोग से वैदिक साहित्य में शोध व अनुसंधान को बढ़ावा देगा। स्वर्गीय धनीराम भल्ला के वंशजों ने अपनी हवेली डी.ए.वी. आंदोलन को दान देकर 'महात्मा हंसराज स्मारक' के विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया है। हमारा विश्वास है कि डी.ए.वी. आंदोलन अपने इस रहनुमा के स्मारक को ऐसा रूप प्रदान करेगा जिसकी महत्ता किसी भी परम्परागत तीर्थस्थल से कम नहीं होगी। आने वाले समय में डी.ए.वी. आंदोलन से जुड़े व्यक्तियों तथा सामाजिक विकास को समर्पित महानुभावों के लिए यह स्मारक प्रेरणा स्रोत के रूप में काम करेगा।

प्रिंसिपल, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,
श्रेष्ठ विहार, दिल्ली

PHOTO COLECTION
DAV PUBLIC SCHOOL SRESHTHA VIHAR , DELHI

आधुनिक भारत के निर्माता
महात्मा हंसराज

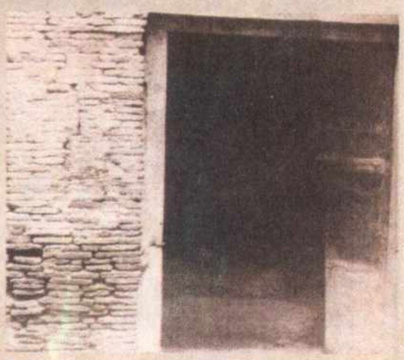

हमारे महानायक बालक हंसराज ने बजवाड़ा के इस साधारण मकान में सन् 1864 में जन्म लेकर समस्त राष्ट्र का नव–निर्माण किया।

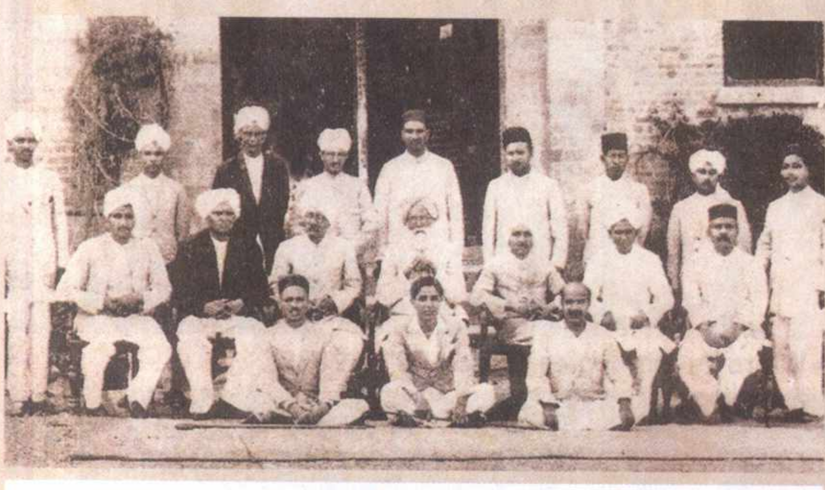

महात्मा हंसराज जी कांगड़ा के एक स्कूल के उत्सव के अवसर पर अन्य पदाधिकारियों के साथ

चिर निद्रा में विलीन हमारे महानायक महात्मा हंसराज जी। उनका पार्थिव शरीर डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर के प्रांगण में अंतिम दर्शनों के लिए रखा गया जहां पर लाखों श्रद्धालुओं ने अपने प्रिय नेता को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

with best Compliments

DAV INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY

Kabir Nagar, Jalandhar

MISSION

Dissemination of research oriented technical education in emerging disciplines aimed at producing skilled man-power suited to the ever changing needs of the industry in the wake of globalization and industalisation; sustaining Indian moral & ethical values.

CROWN OF QUALITY

ISO 9001-2008 Certified Institute
Winner of Coveted IMC-RBNQ Award of Excellence

"The BEST Engineering College" of Punjab Technical University-2013

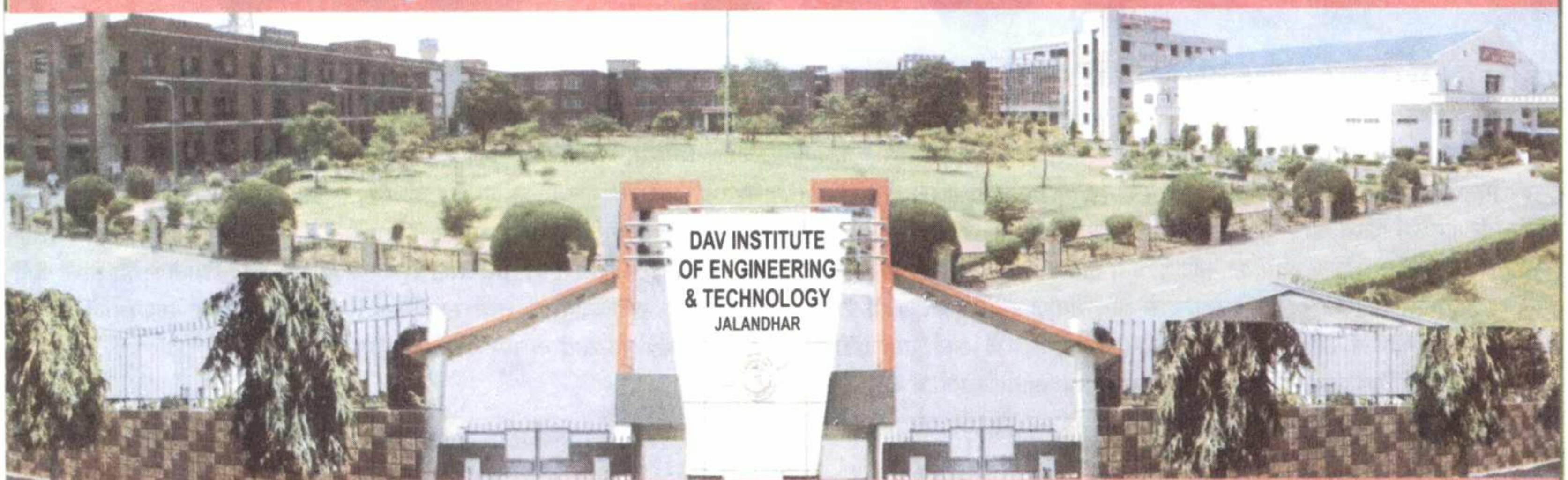

ACADEMIC PROGRAMS

B.Tech.
- Civil Engineering
- Electrical Engineering
- Mechanical Engineering
- Information Technology
- Computer Science & Engineering
- Electronics & Communication Engg.

M.Tech. (Regular)
- Electrical Engineering
- Civil Engg. (Geo-Tech)
- Computer Science & Engineering
- Nano Science & Technology

M.Tech. (Part-time)
- Electrical Engineering
- Mechanical Engineering
- Computer Science & Engineering
- Electronics & Communication Engg.

MBA
- Finance
- Marketing
- Human Resource
- Information Technology

MCA

EXCELLENT PLACEMENTS

111 DAVIETians rejoicing their placement in Wipro Technologies (Batch 2011-2015)

Admission Helpline :
0181-2207650, 2992004

Professor A.L. Sangal
Principal

thearyasamaj.org

with best Compliments

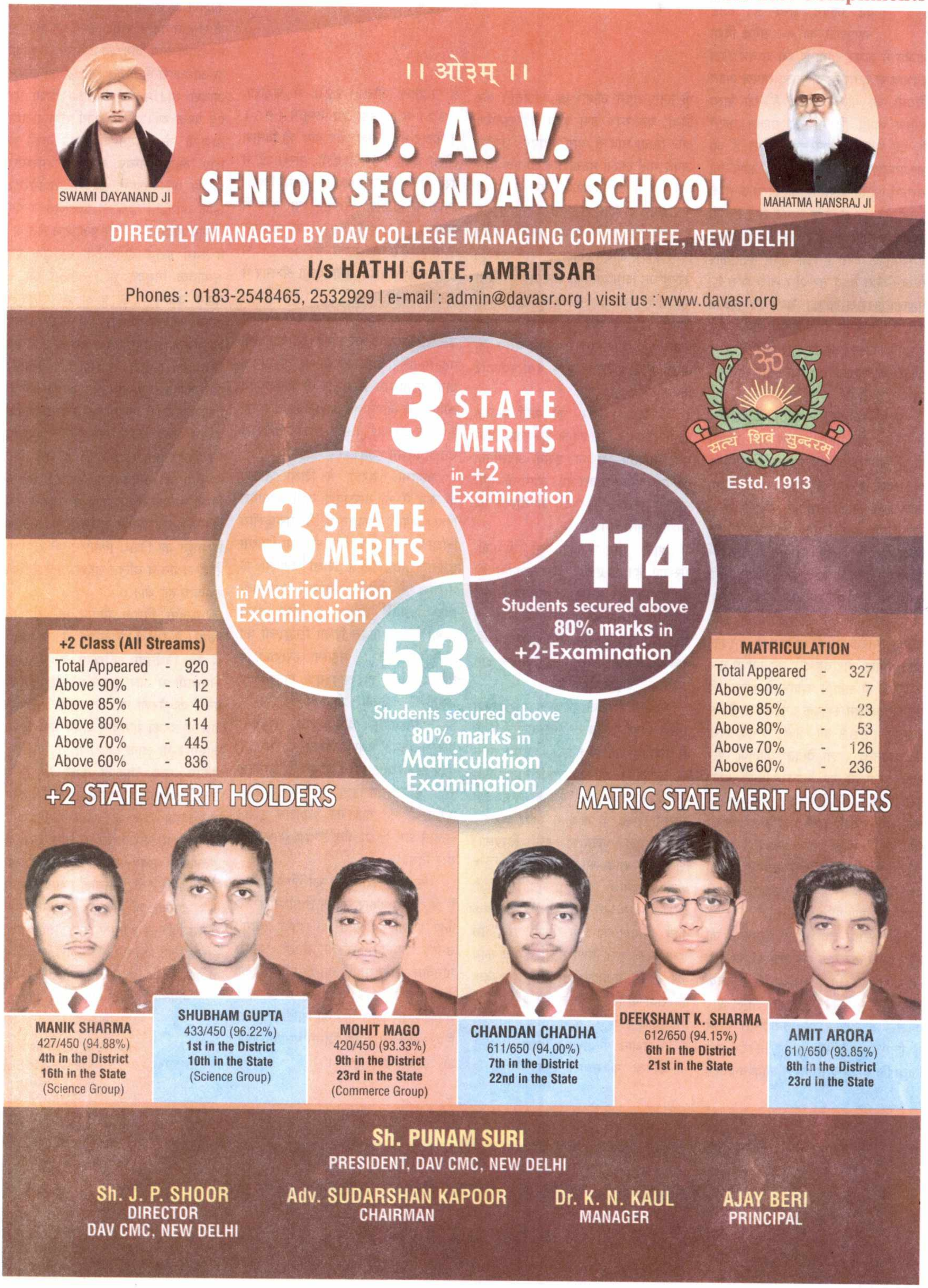

thearyasamaj.org

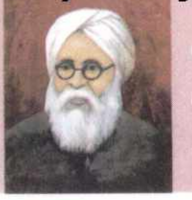

त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज

• डॉ. धर्मपाल आर्य

परोपकार में रत महात्मा हंसराज का जीवन धन्य है। जिन महापुरुषों का मन सदैव विद्या अर्जन में तत्पर रहता है, जो सुन्दर शील स्वभाव से युक्त हैं, जो सत्य भाषण आदि नियमों का पालन करते हैं, जो सत्य भाषण आदि नियमों का पालन करते हैं, जो मलिनता का नाश करते हैं जो सत्योपदेश तथा विद्यादान से सभी को सन्मार्ग पर ले चलते है, जो अन्य जनों के दुःखों को दूर करने में तत्पर रहते हैं, जो वेदादि शास्त्रों के अनुकूल अपने जीवन में व्यवहार करते हैं, जो सदैव परोपकार में लगे रहते हैं, वे नर और नारी धन्य हैं। महात्मा हंसराज जी का जीवन एवं कृतित्व ऐसे ही सद्गुणों से सुभूषित रहा है। वे अमर हैं। उनका जीवन और शिक्षाएँ हमारे जीवन को आलोकित तथा हमारे मार्ग को प्रशस्त करते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 1883 में निधन के पश्चात् जब यह विचार किया जाने लगा कि ऋषिवर के मिशन के प्रचार प्रसार के लिए क्या किया जाए तथा उनकी स्मृति को किस प्रकार चिरस्थायी बनाया जाए, तो यह निर्णय किया गया कि महर्षि दयानन्द ने भारत में जो महान कार्य किया, उसने शिक्षित लोगों के हृदयों में महर्षि के प्रति गहरी आस्था और सहानुभूति का संचार किया है; अतः उनका स्मारक उनकी प्रतिष्ठा के अनुकूल होना चाहिए और वह एक कॉलेज से कम कुछ नहीं हो सकता, दयानन्द कॉलेज ही उनका सर्वोत्तम स्मारक बन सकता है। 8 नवम्बर 1883 को लाहौर में एक सभा में 'दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज और स्कूल' खोलने का निश्चय किया गया। इस निश्चय को क्रियात्मक रूप देने के लिए धनार्थ अपील की गई जिसमें लिखा गया था, 'हम एक ऐसी संस्था स्थापित करना चाहते हैं, जिसमें वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अवगुणों को त्याग कर केवल गुणों को ग्रहण किया जाए'।

इस समय तक लाला हंसराज जी बी.ए. पास कर चुके थे। उन्हें बड़े से बड़ा सरकारी पद मिल सकता था। उनके विचारों में स्वतंत्र चिन्तन था। स्कूल और कॉलेज के विचार को क्रियान्वित करने के लिए उन्होंने मन ही मन निश्चय कर लिया कि महर्षि दयानन्द ने लोक कल्याण के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया, वह स्वयं इस कार्य को समर्पण और निष्ठा भाव से आगे बढाएंगे। उन्होंने अपने भाई लाला मुल्खराज को एक दिन कहा– ' मैं अपना जीवन इस कार्य को पूरा करने के लिए समर्पित करना चाहता हूँ। मेरी इच्छा है कि मैं एक भी पैसा लिए बिना अपना जीवन स्कूल को दान कर दूँ। परन्तु यह काम आपकी सहायता के बिना पूरा न हो सकेगा।' लाला मुल्खराज जी दूरदर्शी थे। वे भाई के विचार जानकर प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने वेतन का आधा भाग प्रतिमास उन्हें देना स्वीकार किया।

1 जून 1886 को आर्य समाज लाहौर के भवन में स्कूल शुरू कर दिया गया। महात्मा हंसराज इसके अवैतनिक मुख्याध्यापक नियुक्त हुए। त्याग की मूर्ति महात्मा हंसराज डी.ए.वी. आन्दोलन की आधार भित्ति बने।

आज सम्पूर्ण विश्व में डी.ए.वी. संस्थाएं हैं। डी.ए.वी. विश्वविद्यालय भी बन चुका है। वर्तमान अधिकारी पूर्ण मनोयोग से महात्मा हंसराज के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। यह अति प्रसन्नता की बात है। महात्मा हंसराज का जीवन दान करने का आदर्श प्रेरक है।

महात्मा हंसराज का जन्म 19 अप्रैल 1864 को पंजाब के होशियारपुर जिले के बजवाड़ा ग्राम में हुआ था। उनके पिता श्री चूनीलाल जी थे। उनके माता–पिता धन्य हैं, जिन्होंने ऐसे सुपुत्र को जन्म दिया जिसने शिक्षा के क्षेत्र में आगे चलकर आमूल–चूल परिवर्तन कर दिखाया। शिक्षा के साथ–साथ अन्य सामाजिक कार्यों –अनाथों, पीड़ितों एवं विधवाओं की सहायता हेतु भी उन्होंने अनथक कार्य किया। डी.ए.वी. द्वारा संचालित अनाथालय इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रहे हैं। अनावृष्टि से पीड़ित मानवता की सेवा के लिए बीकानेर में 1895 में निः स्वार्थ सेवा का कार्य किया। 1899 में राजस्थान में अकाल पड़ा। 1905 में कांगड़ा में भूचाल आया। 1918 में गढ़वाल और 1920 में उड़ीसा, 1921 में कांगड़ा एवं जम्मू में 1934 में बिहार में अकाल और बाढ़ की विनाश लीला देखी गई। डी.ए.वी. संस्थाओं ने इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया। आज भी डी.ए.वी. संस्थाएं इस दिशा में कार्यरत हैं। उन्होंने 1981 में महाराष्ट्र में 89–90 में पंजाब में, 1991 में उत्तरकाशी में तथा अभी–अभी श्रीनगर में सहायता कार्य किया।

समाज कल्याण के कार्यों में ये संस्थाएँ उल्लेखनीय कार्य कर रही है। जो दीप कभी महात्मा हंसराज ने जलाया था, वह अनेक दीपों के माध्यम से संसार के पीडितों एवं शोषितों के जीवन को आलोकित कर रहा है। 15 नवम्बर 1938 को लाहौर में उनका निधन हुआ।

महात्मा हंसराज ने शिक्षा शास्त्री के रूप में भी महत्वपूर्ण कार्य संपादित किए। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के माध्यम से तथा महात्मा हंसराज ने कॉलेज शिक्षा प्रणाली के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में तथा अन्य ग्रन्थों में प्रतिपादित शिक्षा सिद्धान्तों को क्रियान्वित किया। महात्मा हंसराज ने वैदिक शिक्षा को आवश्यक माना तथा इसके लिए लाहौर डी.ए.वी. कॉलेज में ही 'विश्वेश्वरानंद वैदिक शोध संस्थान' प्रारम्भ किया गया। जिसमें पं. भगवद् दत्त जी तथा पं. विश्व बन्धु जी कार्यरत रहे। वैदिक साहित्य पर अनुसन्धान पूर्णग्रन्थों का वहाँ पर प्रकाशन हुआ। उन्होंने धर्म शिक्षा और नैतिक शिक्षा पर बल दिया।

महात्मा हंसराज जी का जीवन प्रेरक है और इसी प्रकार उनका त्याग भी हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनका त्याग, उनकी तपस्या, उनकी निष्ठा उनकी मानवीय सहृदयता, हमारे जीवन को सुवासित करती है। वे चाहते थे कि ऐसे मनुष्य तैयार किए जाएं जो लोकोपकार के लिए सदैव तत्पर रहें, जिनमें मानवीय गुण हो–'जनया दैव्यं जनम्।'

महात्मा हंसराज ने स्कूल और कॉलेज के उन्नयन के साथ आर्य समाज के संगठन को भी सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। वे विभिन्न संस्थाओं के अधिकारी निर्वाचित हुए। उनका जीवन आदर्श था। उनका आचरण शिक्षा पर एवं प्रेरक था। उन्होंने आर्य समाज तथा डी.ए.वी. के संगठन को सुदृढ़ करने के लिए 'लाइफ मैम्बर' बनाने की परम्परा प्रारम्भ की। महात्मा जी ने 'रीजेनेरेटर ऑफ आर्यावर्त' पत्र भी प्रकाशित किया, जिसमें विद्वानों के लेख प्रकाशित होते थे। वे स्वयं इसके अवैतनिक प्रबन्धक एवं सम्पादक नियुक्त हुए। महात्मा जी ने महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों के अनुकूल अपने जीवन–व्यवहार को ढाल लिया था। उनका जीवन सादा था और विचार ऊँचे थे। उनकी सादगी को देखकर लोग चकित रह जाते थे। वे एक आदर्श प्रशासक थे। वे नियमों का कठोरता पूर्वक पालन करते थे। वे समय के सदुपयोग पर विशेष महत्व देते थे। वे धैर्य और गाम्भीर्य को सदैव बनाए रखते थे। वे किसी भी बड़े से बड़े कष्ट में घबराते नहीं थे। वे महान समाज सुधारक थे। उन्होंने छुआछूत का विरोध किया उनके सहयोग से ही दयानन्द दलित उद्धार मण्डल की स्थापना हुई थी।

उन्होंने विधवा विवाह का समर्थन किया। वे गरीबों के हितैषी थे। वे मानते थे कि निर्धनता अभिशाप है। वे स्वयं मितव्ययी थे और दूसरों को भी ऐसा ही बनने की प्रेरणा देते थे। नारी शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान सदैव याद किया जाएगा। वे लोक कल्याण के पथिक/ भूकम्प, बाढ़, अकाल आदि के समय उन्होंने स्वयं शिक्षा स्थानों पर जाकर सेवा कार्य किया।

महात्मा हंसराज जी का नाम शिक्षा के इतिहास में सदैव अग्रिम पंक्ति में लिखा जाएगा। डी.ए.वी. आन्दोलन उनके त्याग और तपस्या का प्रतिफल है। आज यह संस्था विभिन्न आयामों तक वितानित है, इसके लिए वर्तमान अधिकारी साधुवाद के पात्र हैं।

महात्मा हंसराज जी के प्रति विनत श्रद्धाञ्जलि!!!

ए/एच–16, शालीमार बाग,
दिल्ली–110 088

"माता-पिता की शिक्षा के बिना जैसे पुत्र अज्ञानी रहता है, इसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान के बिना, वेदों के बिना हम मनुष्य लोग भी अज्ञानी ही रहते।"

- महात्मा हंसराज

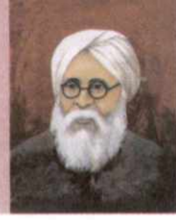

with best Compliments

D.A.V. PUBLIC SCHOOL

Sector-14, Faridabad (Haryana)

PRIDE OF OUR SCHOOL

SHWETA CHAUDHARY
Bronze Medal In 10 Mts. Air Pistol Shooting -
Incheon Asian Games 2014

ARPAN KUKREJA
Class XII : 98.4%
All India D.A.V. Topper

MANUSHI TOOR
Class XII : 96.1%
Topper - Humanities
District Faridabad

''ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराण मे नो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।''

डी.ए.वी. संगठन के आद्य सूत्रधार

त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी

के

150 वें पावन जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर-14, फरीदाबाद (हरियाणा)

की ओर से

समस्त आर्यों, अभिभावकों, छात्रों व शिक्षकों को

हार्दिक शुभकामनाएँ

Punam Suri Chairman | **Ravinder Kumar** Vice - Chairman | **S.R. Arora** Manager | **Surinder Singh Chaudhary** Principal

with best Compliments

Dayanand College, Ajmer

Estd. 1942

Visit us : www.davajmer.org, Phone : 0145-2440792,2441574
(Under the Direct Control of DAV CMC, New Delhi)

"An ideal place for shaping careers and developing character"

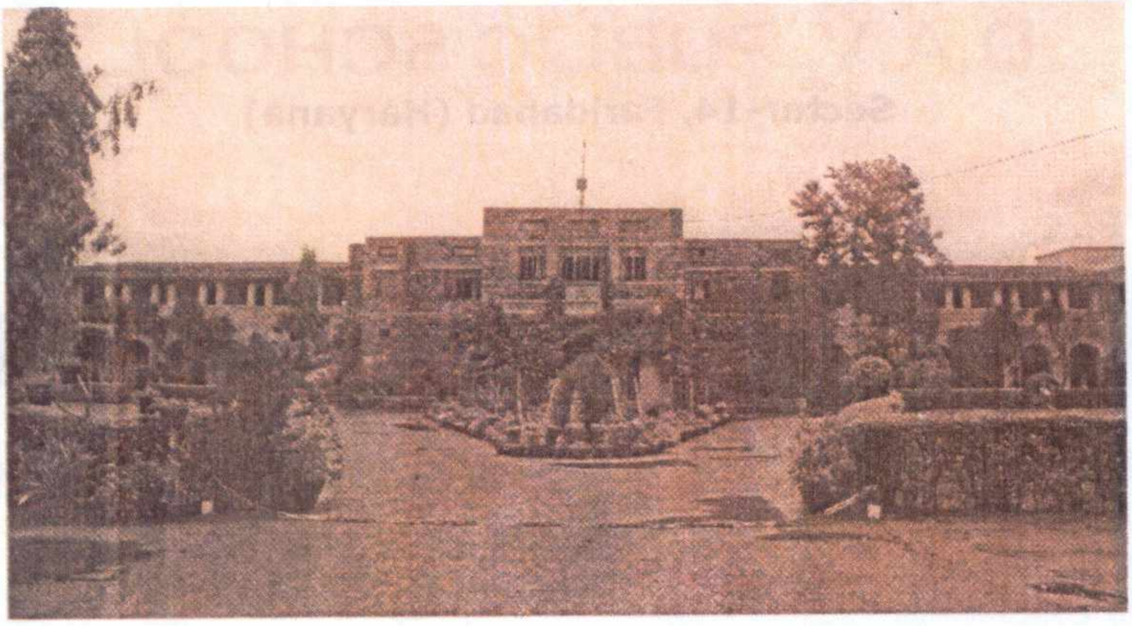

"An ideal place for shaping careers and developing character"

UG Courses : BA, B.Com, B.Sc., Maths, B.Sc. Bio and BBA
B.Sc.(Hons) :Agriculture (4 year Degree course)
M.Com : ABST, EAFM, Bus. Admn.
M.Sc : Physics, Zoology, Biotech
M.A. : Pol.Sc., Drawing & Painting , Eng. Litt, Hindi, Sociology, Sanskrit, Geography, History
M Phil : English, Sanskrit

Salient Features :

- **Sprawling Campus * 100 Acre agricultural farm * Play Grounds & 400 Mtr. Track. * Multisitting Gymnasium**
- **Newly laid Cricket Wickets.**
- **Enriched and ultra modern library * Highly Qualified faculty * Modern Computer Lab * Internet facility in all deptts.**
- **Placement cell facility * Ideal Student Teacher ratio * Personality Development Programmes**
- **Multi Cultural Learning Environment * Industry-Academic Interaction * Scholarship for merit students * Hostel facility for Boys and Girls**

Pass Percentage in Various Classes in the last three years.
BA Iyr. 87%, B.Com-Iyr. 85%, B.A.-II & IIIyr.-95%, B.Com-IIyr-100%, All PG Classes-100%
NCC (Infantry, Artillary) and NCC Naval Wing
NSS (03 Units)
MERIT POSITIONS : * First three merit positions in M.Sc.- Biotech
First three in B.P.Ed. * First 15 in M.A, Drawing & Painting
STATE MERIT POSITION Ist in B.Sc. (Agriculture)-I^{yr}
Ist in B.Sc. (Agriculture)-IV^{yr}

Winners of General Championship Trophy of intercollegiate sports tournament of MDS University, Ajmer for the FIFTH Consecutive Year.
Winners of State Award for Red Ribbon Club activities.

- **Study centre of Vardhman Mahavir Open University, Kota since 2010.**

Dr. Rajesh Kumar
PRINCIPAL

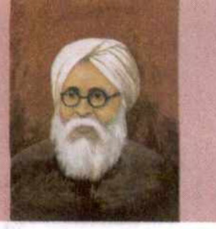

with best Compliments

DAV INTERNATIONAL SCHOOL, AMRITSAR

CBSE-*i*

CBSE NEW GENERATION SCHOOL

Principal Anjana Gupta receiving CBSE Award to Teachers-2013 from Hon'ble Minister HRD, Govt. of India – Ms. Smriti Irani, Secretary, Ministry of Education – Mr. R . Bhattacharya and Chairman CBSE – Sh. Vineet Joshi

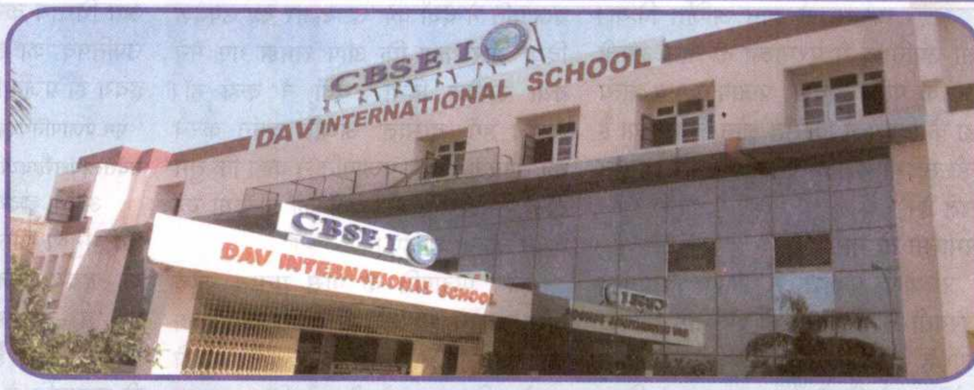

Winner of National School Sanitation Award 2012 & Green School Award 2013

Firmly entrenched in ageless Vedic values and constantly nurtured by the infallible wisdom & rich experience of a vibrant and progressive parent body i.e. DAV College Managing Committee, New Delhi, DAV International School, Amritsar has grown phenomenally in all areas of school education in a short span of just 16 years. We owe our present position to our paterfamilias, **President Hon'ble Arya Ratan Sh. Punam Suri Ji, a towering leader of impeccable credentials with a cosmopolitan vision and oracular wisdom. We are equally indebted to his dedicated team of eminent educationists & academicians, especially Sh. Ravinder Kumar, Secretary DAV CMC, New Delhi and Vice – Chairman of our school and Sh. J. P. Shoor, Director PS-I & Aided Schools. We have the added advantage of the unfailing support & guidance of our local leaders also namely Chairman, Dr. V. P. Lakhanpal, Regional Director, Dr. (Mrs.) Neelam Kamra & Manager Dr. K. N. Kaul.** With the right combination of facilities and facilitators, opportunities and ambience, we aim at producing intellectually enlightened, physically fit, morally incorruptible and spiritually awakened citizens. Equipped with a healthy attitude, our students are trained to be true agents of change, sustainable growth and peaceful co-existence. Imbued with patriotic fervor, they are equally responsive to local, national and global issues.

Just a cursory glance at the infrastructural wealth, student strength, merit positions, awards and honours and outreach programs of the school gives a fair idea about its exponential growth and development both in terms of quality and quantity. Our students have won laurels at state, national and international levels in scholastic and co-scholastic areas of activities. Recognizing our passion for innovation, the CBSE added a new dimension to the school i.e. CBSE-*i* in April, 2014.

Knowing fully well our crucial role as custodians of the most valuable and potent resource of the nation during its formative years, we have evolved a policy of curbs and controls, incentives and awards. Nation-building through character-building is our creed and we follow it fanatically. We are a well-knit team of ambitious achievers, aiming for the skies with our feet securely fixed on the ground. And the world is only our oyster.

Principal Anjana Gupta with the CBSE Sports Promotion Award-2013 presented by Hon'ble Minister HRD Govt. of India – Ms. Smriti Irani, Secretary, Ministry of Education – Mr. R . Bhattacharya and Chairman CBSE – Sh. Vineet Joshi

Adding another dimension to education, the school becomes a proud member of the elite CBSE-i. A view of the lab for CBSE-i

Fullest use of learning aids. A technically-equipped class-room of CBSE-i

Vivek Sharma of class IX honoured by Union Minister, Hon'ble Smriti Irani with an appreciation letter from CBSE and a message signed by the Hon'ble Prime Minister himself for his commendable achievements in Yoga

Hunardeep Singh Sohal of Class XII won a Gold Medal in Air Pistol Shooting, a Silver Medal in 22nd Sports Pistol Shooting & a Bronze Medal in 49th Punjab State Shooting Championship at Jalandhar

Shri Ravinder Kumar
Secretary, DAV CMC, New Delhi
Vice-Chairman, LMC

Shri J.P. Shoor
Director (PS-I) & Aided Schools
DAV CMC, New Delhi

Dr. V.P. Lakhanpal
Chairman

Dr. (Ms) Neelam Kamra
Regional Director
DAV Public Schools
Amritsar Zone

Dr. K N Kaul
Manager

Anjana Gupta
Principal

thearyasamaj.org

कुछ उपनिषदों से (बृहदारण्यक उपनिषद्)

● डॉ. सुशील वर्मा

पिछले अंकों में हमने देवता एवं आत्मा के संबंध में उपनिषद् के माध्यम से ज्ञान अर्जित किया। इसी उपनिषद् में परमात्मा के नाम अपनी प्रजा के प्रति उपदेश, प्रजापति एवं सत्य ब्रह्म के विषय में विस्तृत ज्ञान दिया गया है इन्हीं संदर्भों में एक–एक विषय पर चिन्तन करते हैं।

परमात्मा के नाम

सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने परमात्मा के सौ नाम अंकित किए हैं और वे कहते हैं 'ये सौ नाम परमेश्वर के लिखे हैं, परन्तु इनसे भिन्न परमात्मा के असंख्य नाम हैं क्योंकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव हैं, वैसे ही उसके अनन्त नाम हैं। इससे ये मेरे लिखे नाम समुद्र के सामने बिन्दुवत् हैं।' उपनिषद् कहता है।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।
ओ३म् खं ब्रह्म खं पुराणं वायुरखमिति।

(बृहदारण्यक उप. 5/1/1)

वह ब्रह्म पूर्ण है, यह जगत भी पूर्ण है, पूर्ण बह्म से ही यह पूर्ण जगत उदित होता है। पूर्ण ही से पूर्णता लेकर जब यह जगत बन चुका होता है, तब भी वह ब्रह्म पूर्ण बचा रहता है।

इस मंत्र के आगे के भाग में कहा गया है कि ब्रह्म को तीन नामों से स्मरण किया जाता है।

ओ३म्–खं–ब्रह्म ओ३म् तोपरमात्मा का प्रसिद्ध निज नाम है परन्तु कौरवयायणी पुत्र के अनुसार वायु वाला आकाश ही 'खम्' है। कई ब्राह्मणों अर्थात विद्वानों का मत है कि वेद का नाम 'खं' है। खं ब्रह्म का पुरातन नाम है। खं का अर्थ आकाश करे तो इसका अभिप्राय आकाश की भाँति व्यापक परब्रह्म से है। खं का अर्थ 'वेद' करें तो उसका अभिप्राय भी उसी ज्ञान के भण्डार बह्म से है। हर अवस्था में खं का अर्थ ब्रह्म ही है।

यजुर्वेद के 40 वें अध्याय के अन्तिम मंत्र में इसे खं के नाम से ही पुकारा जाता है।

''ओ३म हिरण्यमेन पात्रेण............ ओ३म् खं ब्रह्म'' यजु 40/17

यहाँ पर ओ३म् खम् और ब्रह्म तीनों ही नाम उस परमपिता परमात्मा के हैं।

'द' का अर्थ – इसी उपनिषद के पंचम अध्याय के दूसरे ब्रह्मण में तीन श्लोकों में 'द' के अर्थ का वर्णन है। क्योंकि वह परम पिता परमात्मा हम सब प्राणी मात्र का पिता है और सभी उसकी संतति हैं।

तीनों संतानें देव, मनुष्य व असुर। सभी उस परमेश्वर से उपदेश लेने के लिए प्रजापति के पास गए। उस परमेश्वर ने आदेश दिया है कि पहले तुम सभी ब्रह्मचर्य पूर्वक वास करो तभी मैं तुम्हें उपदेश दे पाऊँगा। निश्चित अवधि तक ब्रह्मचर्य का वास पूरा करने के बाद देवों ने परमपिता प्रजापति से प्रार्थना की कि हे प्रजापति आप हमें उपदेश दीजिये। प्रजापति ने देवों को 'द' अक्षर का उपदेश दिया और कहा कि आप समझ गए मैंने क्या उपदेश दिया? देवों ने कहा हाँ। आपने हमें 'दाम्यत' अर्थात दमन करने का उपदेश दिया। प्रजापति ने कहा कि तुम ठीक समझ गए हो। देवों को इन्द्रियों का दमन करना चाहिए।

जब प्रजापति के पास मनुष्य पहुँचे और उन्होंने भी उपदेश प्राप्ति की इच्छा की। प्रजापति ने उन्हें भी 'द' अक्षर का ही उपदेश दिया। उनसे भी पूछा कि आप सब समझ गए हो, मनुष्यों ने कहा हाँ, हम सब समझ गए हैं। आप ने यही उपदेश दिया कि 'दत्त' दान करो। प्रजापति ने कहा कि तुम ठीक समझ गए हो कि मनुष्यों को दान देना चाहिए।

अन्त में असुर पहुँचे। उन्होंने भी उपदेश प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। उनकी प्रार्थना पर प्रजापति ने उन्हें भी 'द' का उपदेश दिया। प्रजापति ने उन्हें जाते हुए पूछा कि क्या तुम समझ गए हो, मैंने क्या उपदेश दिया, असुरों ने कहा हाँ हम समझ गए हैं। आपने –दयध्वम्' अर्थात 'दया करो' का आदेश दिया है। प्रजापति ने कहा तुम ठीक समझे, दानवों को सभी पर दया करनी चाहिए।

यही प्रजापति का आदेश मानो विद्युत की कड़क में द–द–द का उच्चारण करके मानो दैवी वाणी अनुवाद कर रही है। विद्युत संसार में कड़क कड़क कर रही है– 'दाम्यत दत्त, दयध्वम्' इन्द्रियों का दमन करो,सांसारिक वस्तुओं का संग्रह न करते हुए दान करो और प्राणिमात्र पर दया करो। इन तीनों की शिक्षा दमन, दान, दया है। – **''त्रयं शिक्षेत दमं दानं दयामिति''**

संसार की पूर्ण शिक्षा इन्हीं तीनों में समाहित हो जाती है। क्योंकि देवों की कमजोरी इन्द्रियों की शिथिलता में मनुष्य की कमजोरी दान देने में और असुरों की कमजोरी दया न करने की है। यदि देव इन्द्रियों का दमन कर लें तो देवत्व की सार्थकता है, मनुष्य दान दे तो वह देवत्व पद को प्राप्त होगा और दानव अर्थात असुर दया का मूलमंत्र सीख जाएँ तो वे असुर नहीं मानव तथा देवत्व पद को प्राप्त होंगे। यही आरोह की प्रतिष्ठा है, उन्नति के मार्ग की सीढ़ियाँ। दानव से मानव और मानव से देवत्व की प्राप्ति। दानव यदि दया करें तो मानव, मानव आदि दान करें तो देवत्व का पद और देवता यदि इद्रियों का दमन करते रहें तभी देवत्व पद की प्रतिष्ठा रहेगी। इसके विपरीत की अवस्था इन्हें अवरोह की ओर ले जाएगी। यही जीवन की सार्थकता है यही जीवन का सार है और यही जीवन का उद्देश्य है।

हृदय का अर्थ

अभी हमने प्रजापति तथा उसकी सन्तति की वार्ता पर ध्यान दिया। आओ अब चिन्तन करें कि वह प्रजापति क्या है? उपनिषद् का इस विषय में वचन है कि हृदय ही प्रजापति है।

''एष प्रजापतिर्यद्हृदयम् एतद्ब्रह्मैतत्सर्वं''
तदेतत्त्रयक्षरँहृदयमिति बृहदारयक उप. (5/3/1

अपने हृदय की ही तीन संतानें हैं– देव मनुष्य और असुर। यह तीनों अक्षरों का हृदय प्रजापति है। हृदय ही ब्रह्म है। 'हृ'–हृञ्–हरणे धातु से निर्मित है। जिसका अर्थ है। अभिहरण लाना। हृदय ही प्रजापति है। हृदय ही ब्रह्म है। उसके सामने अपने पराए सब उपहार अभिहरण कर अर्थात ला–ला कर रखते हैं।

दूसरा अक्षर 'द' – दा दाने धातु से बना है अर्थात देना। हृदय ही प्रजापति है, हृदय ही ब्रह्म है उसे सब देते हैं। तीसरा अक्षर 'य' – इण् धातु से बना है जिसका अर्थ है जाना। हृदय ही प्रजापति, हृदय ही ब्रह्म है, जो उसे जान लेता है वही स्वर्ग लोक को जाता है।

इस प्रकार 'हृ' जो लाता है, 'द' जो देता है 'य' जो चलता है–जाता है। यास्काचार्य निरुक्त में हृदय की व्युत्पत्ति करते हुए लिखते हैं– हृदय इसलिए कहा जाता है कि यह तीन कार्य करता है– हृ से हरति 'द' से ददाति 'य' से याति– अर्थात लेता है, देता है और चलता है।

हृदय शरीर से अशुद्ध रूधिर को लेकर फेफड़ों द्वारा शुद्ध करके शरीर को देता है और इसी उद्देश्य से सदा गतिशील रहता है। इस प्रकार हृदय का ज्ञान तो हमें कम से कम उपनिषद् काल से ही सिद्ध होता है। जब कि योरोपवासी जो हमारे इस ज्ञान से अनभिज्ञ थे उन्होंने 'हृदय– के आविष्कार का श्रेय हार्वे,17 वीं शताब्दी (1578–1657) को देते हैं। इसी प्रकार विज्ञान का विषय तो भारत में प्राचीन काल से ही ज्ञात था उस समय की विज्ञान की उपलब्धियाँ अपनी सीमा पर थीं जिन्हें आज तक आधुनिक विज्ञान छू भी नहीं पाया है। रामायण काल में पुष्पक विमान, महाभारत काल में तीर अथवा अन्य यंत्रों से पृथ्वी से जल निकालने की क्षमता, युद्ध के समय रातों–रात घायलों को प्रातः काल तक स्वस्थ कर युद्ध के लिए तैयार कर देना आदि। परन्तु विडम्बना इस बात की कि अब भी हमें विद्यालयों की पुस्तकों में यही ज्ञान दिया जाता है कि विज्ञान तो पाश्चात्य देशों की ही देन है। भारतवासी तो सपेरे, जादूटोने वाले एवं गडरियों के गीत गाने वाले ही नागरिक थे।

सत्य ब्रह्म– इसी उपनिषद् के पंचम अध्याय के चौथे ब्राह्मण में सत्य ब्रह्म के बारे में ज्ञान दिया गया है। उपनिषद्कार कहता है कि ये जो हृदय है उसी में आकर सत्य बैठा है। यह सत्य ही ब्रह्म है। यह सत्य ब्रह्म महान है, पूजनीय है सबसे पहले प्रकट होता है। जो प्राणी मात्र के हृदय में निवास करने वाले सत्य ब्रह्म को जान लेता है वही इन लोकों को जीत लेता है वही सत्यब्रह्म को स्वीकार करता है। वही उसके बारे में जान पाता है।

सत्य ब्रह्म है, सत्य ही ब्रह्म है अर्थात् सत्य ही ब्रह्म है, ब्रह्म ही सत्य है।

''सत्यं ब्रह्मेति सत्यं ह्येव ब्रह्म''

सत्य – स–त्–य इन तीनों अक्षरों में स और य दोनों सस्वर हैं और इनके मध्य में त्– स्वरहीन स–स्वर सत्य है, अविनाशी है, स्वर हीन अनृत है विनाशी है।

यह 'त्' दोनों ओर से स और य रूपी सत्य से जकड़ा हुआ है। अर्थात यह अनृतरूपी प्रकृति सत्य रूप ब्रह्म और जीव से जकड़ी हुई है क्योंकि सत्य ने दोनों तरफ से इसे जकड़ रखा है। इसलिए इस यह अनृत होते हुए भी सत्य रूप ही है। जो इस रहस्य को जान लेता है 'अनृत' उसे नहीं मार सकता।

उपनिषद् कहती है कि सृष्टि के प्रारंभ में 'आप' ही थे। 'आप' अर्थात सर्वत्र व्यापक हो रही अव्यक्त प्रकृति। प्रकृति जब अव्यक्त से व्यक्त अवस्था में आने लगी तब सत्य प्रकट हुआ। सत्य के प्रकट होने पर ब्रह्म प्रकट हुआ। जब तक सत्यरूप विश्व के निमय, अव्यक्त जगत को व्यक्त करने के लिए क्रियाशील नहीं होते तब तक वह ब्रह्म भी अव्यक्त रहता है और जैसे ही सत्य रूप नियम प्रकट होने लगते हैं तब अप्रकट ब्रह्म स्वतः प्रकट हो जाता है। ब्रह्म के प्रकट होने पर देव प्रकट हुए अर्थात दिव्यगुणों की स्थापना इन दिव्य गुणों का प्रारंभ सत्य से ही है। अतः देव सत्य की ही उपासना करते हैं। क्योंकि सत्य की शक्ति ही सब दिव्य गुणों को दिव्य गुण बनाती है।

इसी ब्रह्म के विषय में उपनिषद् कहती है कि सत्य की आभा के लिए वह विराट पुरुष मनोमय है। मनन चिन्तन स्वरूप है। वही हृदय में है। हृदय छोटा है मानो ब्रीहि या यव अर्थात धान जौ के दाने के समान सूक्ष्म है। यहाँ हृदय से तात्पर्य मन से है। इस क्षुद्र हृदय में रहता हुआ विराट मनोमय पुरुष सब का स्वामी है।, सबका अधिपति है, सबका अधिष्ठाता है। अर्थात जो कुछ है उस सब पर वह शासन कर रहा है।

अगले अंक में हम छान्दोग्य उपनिषद की शिक्षाओं पर चर्चा करेंगे। वैसे तो बृहदारण्यक उपनिषद् काफी विस्तृत है परन्तु हम कुछ न कुछ उपनिषद् के सारांश की चर्चा करना चाहते हैं इसलिए आगे के कुछ अंकों में छान्दोग्योपनिषद् पर चिन्तन करेंगे।

गली मास्टर मूल चंद वर्मा
फाजिलका–152123 (पंजाब)

thearyasamaj.org

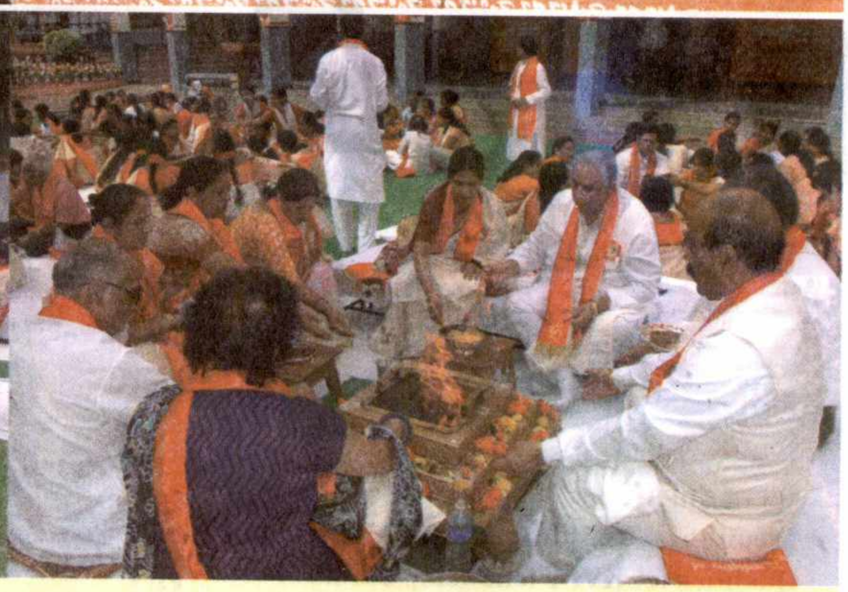

With Best Compliments From :

D.A.V. PUBLIC SCHOOL

SAFILGUDA, HYDERABAD.
PHONE : 040-27223721, 27223392

with best Compliments

SHAHEED RAJPAL D.A.V. PUBLIC SCHOOL

DAYANAND VIHAR, DELHI-110092, AFFILIATED TO CBSE NEW DELHI

(MANAGED BY DAV COLLEGE MANAGING COMMITTEE, NEW DELHI)

Website : www.davdayanandvihar.net Email: davr_dv@yahoo.com Phone no.: 22370367, 22379779

A School With a Difference

ACADEMIC RESULTS
CLASS XII

EXCELLENCE IS A HABIT NOT AN ACT.
IT TAKES PRACTICE AND PRESEVERANCE

TOPPERS

Science Stream

Samarth Mishra
486 (97.2%)

Highest PCM

Saranya Tripathi
292 (97.3%)

Highest PCB

Ashna Jain
290 (96.6%)

Commerce Stream

Smriti Mehra
479 (95.8%)

Humanities

Tanvi Kapoor
451 (90.2%)

Textile Designing (Dyeing & Printing)

Arpita Jadon
443 (88.6%)

Hospitality & Tourism

Jatin Kapoor
423 (84.6%)

CLASS X

Total No. of Students Appeared : 327

CGPA	Number of Students
10	33
9.8	10
9.6	20
9.4	17
9.2	18
9.0	11
9.0 to 10.0	109
8.0 to 10.0	186

Mrs. Renu Laroiya
Principal
NATIONAL AWARD - 2013
HRD Ministry
Government of India

Mrs. Anuradha Sharma
TGT, Sanskrit
NATIONAL AWARD - 2013
HRD Ministry
Government of India

Mrs. Vinita Kapoor
PGT, English
STATE AWARD - 2014
Directorate of Education

EDUCATIONAL OPPORTUNITIES

- Students Exchange Programme - JENESYS
- Iken Scientifica – Honing Scientific Temperament & Encouraging Multiple intelligence.
- Science Education Centre – Promoting Hands on experience and Practical approach.
- Life Skills – Imparting Quality Education,
- Values Education – Integrated Learning.
- ISA – Connecting Classroom Programmes.
- ESOL Exam – Improving Language Proficiency.

LEARNING ENVIRONMENT

- Holistic Learning – Meditation, sports, yoga, karate etc.
- Preparation for olympiad & other competitive exams.
- SAHYOG – Learning to Serve
- Self Hygiene Drives
- Participation in National Endeavours

ACCOLADES

- "Your Ideas, Your Initiatives – International Challenge"– Road Safety Award 2014.
- Qualified for KVPY fellowship 2013.
- Selection in JSTS (conducted by Department of Education, Delhi).
- Eligible for INSPIRE SCHOLARSHIP –Ministry of Science & Technology, Govt. of India Scholarship for Higher Education.
- Selection in CBSE Cricket Team - School Games Federation of India (SGFI).

Dr. N.K.Uberoi
Chairman

Sh. Karan Khanna
Vice Chairman

Sh. K.L.Khurana
Manager

Mrs. Renu Laroiya
Principal

with best Compliments

REGIONAL DIRECTOR OFFICE, SEEMANDHRA ZONE-II

C/O. GMR VARALAKSHMI DAV PUBLIC SCHOOL
GMR NAGAR, RAJAM-532 127
SRIKAKULAM DIST. ANDHRA PRADESH

NAME OF REGIONAL DIRECTOR: Mr. M. UMA MAHESWARA RAO

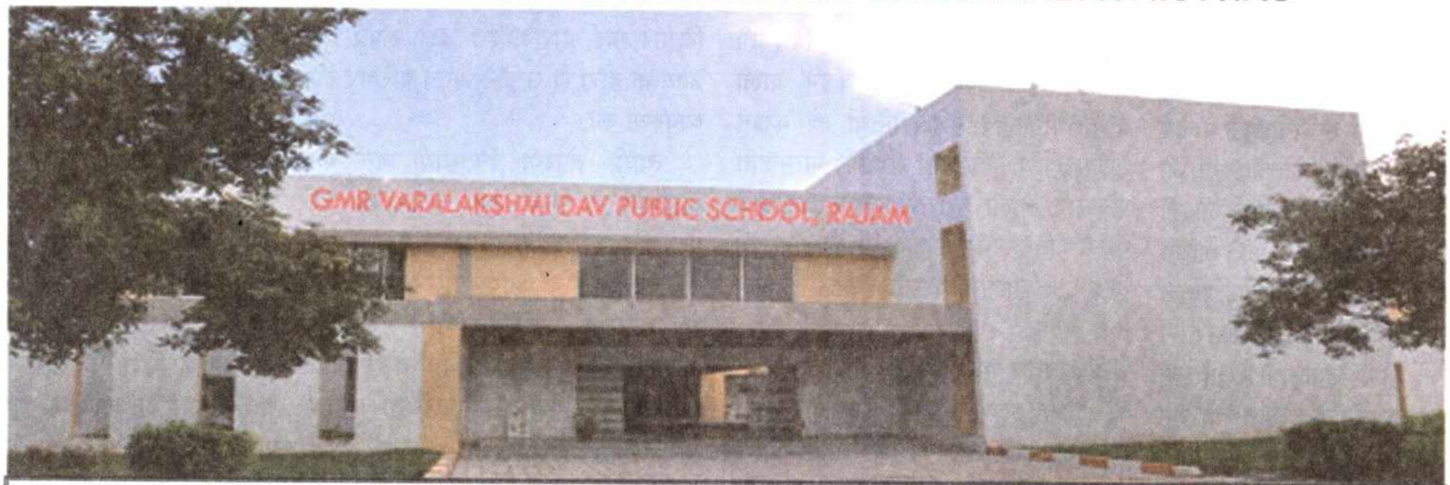

Schools Under Seemandhra Zone-II

1.	D.A.V. High School, V.V.Reddy Nagar, YSR Dist.	(APGENCO)	– AP-008
2.	D.A.V. Public School, Dr. NTTPS, Ibrahimpatnam	(APGENCO)	- AP-010
3.	D.A.V. Public School, Lower Sileru, Mothugudem	(APGENCO)	- AP-015
4.	D.A.V. Pub.School, Upper Sileru, Visakhapatnam Dist.	(APGENCO)	- AP-016
5.	GMR Varalakshmi DAV Public School, Rajam, A.P.	(GMRVF)	- AP-030
6.	Zuari Cement DAV High School, Yerraguntla, A.P.	(ZUARI CEMENT)	- AP-031
7.	D.A.V.High School, Onukudelli, Koraput Dist. Orissa	(APGENCO)	- OR-037

ACHIEVEMENTS OF THE ZONE:

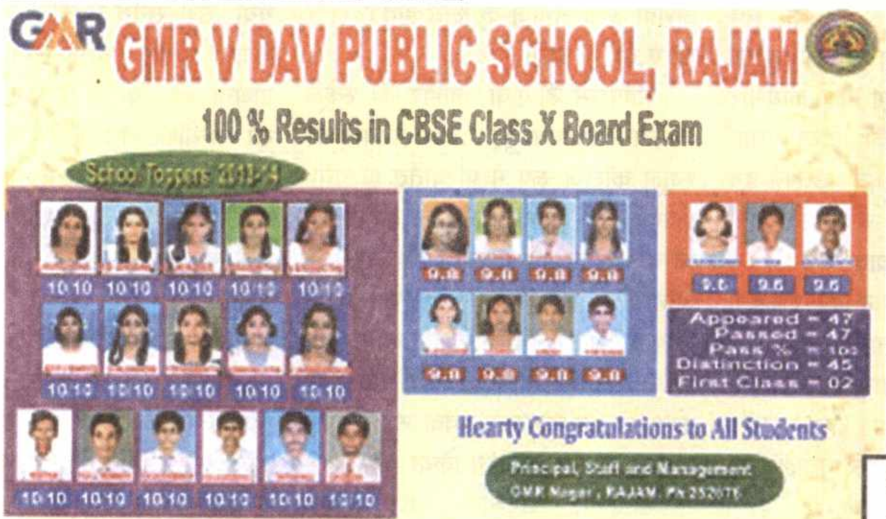

Chi. Sai Uma Jahnavi of Class VII awarded with Cash prize of Rs.5,000/- and Merit Certificate

1. The H.M. of DAV Public School, Lower Sileru, Mothugudem received Appreciation Certificate from District Education Officer, Khammam for securing Highest results in Class X (State Board) in Khammam District.
2. Global SAT U.K Exam: Akash B. Neelgar of Class IX secured Global Rank 279/10629. (GMRVDAV, RAJAM)
3. Baby Sai Keerthi of II Standard participated in All India Level Classical & non Classical competition and received Gana Kokila and Natya Mayuri award. (DAVPS, RTPP, KADAPA)
4. 3 students of GMRVDAV school, Rajam (Class X) were selected for IIIT course at IIT.
   1. Kum.M.R.V.V.Bharathi selected for IIIT Nuziveedu, A.P.
   2. Kum.K.Jahnavi Madhuri selected for IIIT Idupulapaya, A.P.
   3. Mast.S.Balasubramanyam selected for IIIT Bhasara, Telengana

thearyasamaj.org

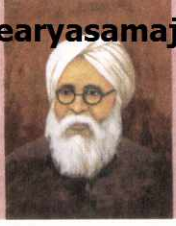

शिष्ट पंक्ति के व्यक्तित्व, आदर्शों के प्रतीक महात्मा हंसराज

● आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा

अर्थात् विद्वान, ज्ञानी एवं पुरुषार्थी जन ही जीते है जीतते हैं, वे ही रहते हैं, वे ही पुष्ट होते हैं, वे ही दुर्गुणों से रहित होते हैं।

वेद का यह सन्देश मानभाजन महात्मा हंसराज जी के जीवन का भी अंग बना। आज महात्मा हंसराज की 150वीं जयन्ती है। उनका जन्म 19 अप्रैल सन् 1864 में बजवाड़ा होशियारपुर पंजाब में हुआ। उनके पिता लाला चुन्नीलाल जी एवं माता गणेशी देवी थी। हंसराज जी की प्राथमिक शिक्षा उनके गाँव में हुई। अग्रिम शिक्षा, दीक्षा लाहौर के मिशन हाई स्कूल एवं पंजाब यूनिवर्यिटी में हुई। 1885 में हंसराज जी ने बी.ए. तक की शिक्षा पूर्ण कर ली। महात्मा जी के जीवन का यह ऐसा अवसर था कि प्रेय मार्ग को अपना कर, सरकारी नौकरी करके गृह का वैभव बढ़ाते! वैभव बढ़ाने की आवश्यकता भी थी, क्योंकि फरवरी 1876 में उनके पिता लाला चुन्नीलाल जी दिवांगत हो चुके थे, जो कि अपील नवीस का सरकारी अदालत में कार्य कर गृह का भरण पोषण करते थे, वह सुविधा भी समाप्त हो चुकी थी। पारिवारिक व्यवस्था हेतु मात्र उनके बड़े भाई मुल्कराज ही सहारा थे।

गौरवशाली संकल्प

हंसराज जी जीवन का कुछ निर्णय लेते, सरकारी नौकरी का प्रकल्प बनता, इससे पूर्व ही हंसराज जी ने लाहौर आर्य समाज के लाला लाजपत राय, पं. गुरुदत्त एवं लाला शिवनाथ आदि आर्य युवक भाईयों के सान्निध्य से आर्य समाज, वैदिक धर्म, समाज सुधार आदि के विचारों से भी भली भाँति अपने को रंग लिया था। इतना ही नहीं 30 अक्टूबर 1883 में अजमेर नगर की भिनाय कोठी में राष्ट्र के सशक्त हितैषी, विदोद्धारक, वेदभाष्य, संस्कृति रक्षक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के भौतिक 'शरीर ने भी सदा-सदा के लिए राष्ट्र से विदा ले ली थी। उन महर्षि की स्मृति एवं उनके कार्य को आगे प्रसारित करने के लिए संस्कृत, वेदवेदांग, आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा के लिए दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल व कॉलेज की स्थापना हो, इस विचार का आर्य समाज लाहौर के पं. गुरुदत्त एवं लाला जीवनदास आदि ने 8 नवम्बर सन् 1883 को सर्व सम्मति से निर्णय भी ले लिया था। स्कूल, कॉलेज के निर्माण के लिए धन इकट्ठा किया जाने लगा। डी.ए. वी. स्कूल, कॉलेजों की स्थापना के क्षेत्र एवं उनके संचालन करने वाले व्यक्ति का निर्णय अभी शेष था। स्कूल, कॉलेजों

तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवत्नवे।
ऋ.7.32.9

की स्थापना का संकल्प करने वाले आर्य जनों का क्या निर्णय होता, यह तो नहीं कहा जा सकता? पर उनकी चिन्ता एवं दयानन्द का ऋण, शिक्षा की बिगड़ती दशा, समाज को विकृत करने वाली कुरीतियाँ आदि परिस्थितियों को देखते हुए पुरुषार्थी, साहसी, तयागी, जन्मजात संन्यासी लाला हंसराज जी ने दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल, कॉलेजों की सेवा एवं शिक्षण के दासित्व का गौरवशाली संकल्प कर डाला।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः

लाला हंसराज जी ने डी.ए.वी. स्कूल व कॉलेज की सेवा का जो संकल्प लिया था, उसकी भी यह विशेषता थी कि विना वेतन एवं विना पारिश्रमिक के सेवा करूँगा। 3 नवम्बर 1885 को अपने निर्णय का पत्र महात्मा हंसराज जी ने लाहौर आर्य समाज की अन्तरंग सभा को दे दिया। यद्यपि महात्मा हंसराज जी के इस निर्णय से उनके पारिवारिक जनों को लाभ नहीं था, परन्तु समाज देश का लाभ बहुत था। हंसराज जी ने बड़ी दृढ़ता के साथ श्रेय मार्ग अपना लिया।

1 जून सन् 1886 को दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल का प्रारम्भ हुआ। जिसके संचालन संरक्षण का कार्यभार महात्मा हंसराज जी को दिया गया, प्रथम प्रिंसिपल भी वे ही बन। उन्होंने इन संस्थानों की अवैतनिक सेवा 25 वर्षों तक की। 25 वर्ष पश्चात् 1911 में डी.ए.वी. स्कूल व कॉलेज की स्थापना की रजत जयन्ती मनायी गई, उस समय उन्होंने अपने आचार्य पद के त्याग का संकल्प भी ले लिया। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः यजु:40/1 इस वेदाज्ञा को शिरोधार्य कर पद त्याग दिया।

शिष्ट पंक्ति के व्यक्ति

महात्मा हंसराज ने जिस समय डी.ए. वी. की सेवा का संकल्प लिया, उस समय उनकी अवस्था 22 वर्ष की थी। कालान्तर में परिवार बसा, परिवार में स्वयं, पत्नी, दो पुत्र, तीन पुत्रियाँ, एवं माता सब 5 सदस्य थे। उनके संसाधनों की व्यवस्था का दायित्व था, इधर अवैतनिक सेवा का संकल्प। दोनों का सामंजस्य उनके बड़े भाई मुल्कराज जी ने बनाया, हंसराज जी ने डी.ए.वी. से तो कभी भी आजीवन द्रव्य नहीं लिया। प्रतिमास अनेकों प्राध्यापकों को हजारों रुपये दिये, किन्तु स्वयं ने एक पैसा भी न लिया। बड़े मुल्कराज जी ने प्रतिमास 40 रूपये देकर उनके संकल्प को दृढ़ बनाया। भाई की मृत्यु के पश्चात् उनके बलराज पुत्र ने वित्त का प्रबन्ध किया। भाई द्वारा प्रदत्त 40 रूपये की आय के द्वारा ही उन्होंने अपने परिवार की व्यवस्था की।

त्यागी, तपस्वी, मितव्ययी जनों को आर्यावर्त्त में शिष्ट कहा जाता रहा है। पतंजलि विरचित महाभाष्य में कहा है–

एतस्मिन् आर्यावर्ते=आर्यनिवासे ये ब्राह्मणाः कुम्भीधान्या अलोलुपा अगृह्यमाणकारणाः=किञ्चिदन्तरेण कस्याचिद् विद्यायाः पारंगताः तत्र भवन्तः शिष्टाः।

अर्थात् इस आर्यावर्त्त में जो ब्राह्मण=वेदज्ञ, घड़े भर अन्न रखने वाले, दम्भरहित, स्वतः स्फूर्त, किसी भी विद्या व शिक्षा में पारंगत होते हैं, वे पूज्य शिष्ट कहे जाते हैं।

महात्मा हंसराज इन्हीं शिष्टों की पंक्ति के व्यक्ति थे, मितव्ययिता में ही सम्पूर्ण जीवन बिताया। वे सदा आदर्शों की प्रतिमूर्ति रहे। उन्हें कोई भी कम्बल, कलमदान आदि भेंट देता, वे सब कॉलेज अथवा आर्य समाज के लिये होते।

डी.ए.वी. के प्राण

सर्वप्रथम डी.ए.वी. लाहौर की स्कूल के रूप में स्थापना हुई। 2 वर्ष पश्चात् वह स्कूल कॉलेज रूप में परिवर्तित हो गया, इसका श्रेय महात्मा जी के कठोरश्रम, चिन्तन व तप को ही जाता है। लाहौर के अतिरिक्त अन्य स्थानों एवं सम्पूर्ण देश में डी.ए.वी. आन्दोलन को फैलाने का महात्मा जी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। डी.ए.वी. संस्थानों का कुशलता पूर्वक साहस और उत्साह के साथ निर्वहन किया।

डी.ए.वी. संस्थानों के समस्त विद्यार्थीयों में धर्म, वैदिक धर्म की निधि भर देने के लिए वे सदा जागरूक रहे। महर्षि दयानन्द जी से उन्होंने जो सीखा, उसे क्रियान्वित करते हुये डी.ए.वी. संस्थानों का संरक्षण किया। चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा का सर्वोपरि स्थान वे मानते थे संध्या, उपासना, स्वाध्याय आदि कृत्यों को स्वतः भी नित्य करते थे और छात्रों को भी सिखाते थे कि वे सुचरित्र व उत्तम नागरिक बनें और अनेकां बनें भी। शहीद भगतसिंह जैसे युवक उनकी भट्टी में तपे हुए शहीद थे। जीवन की कला, देशनिष्ठा आदि भरपूर युवक तैयार किये। शिक्षा नरः प्रद्विवो अकामकशनः ऋ.1-53-2, तेजस्वी शिक्षक छात्रों के विचार को कुण्ठित नहीं होने देते, वेद की इस ज्योति का महात्मा हंसराज जी ने अपने कार्य काल में पूरा ध्यान रखा।

जन्मजात संन्यासी

महात्मा हंसराज ने यद्यपि शिक्षा मिशन स्कूल में ग्रहण की थी, तथाऽपि उस मिशनरी स्कूल के उद्देश्यों व परिवेश आदि का उन पर कोई रंग न चढ़ा, वे भारतीय संस्कृति के परिवेश में ही सदा रहे। उनका परिधान आजीवन श्वेत वस्त्र का ही था। कौशल, पराक्रम, इन्द्रियनिग्रह, मितभाषण आदि उनमें अनेक गुण विद्यमान थे। वक्ता और वैदिक धर्म प्रचार थे। वैदिक शिक्षा के साथ-साथ गणित, साईंस, अंग्रेजी आदि का ज्ञान भी उन्होंने प्राप्त किया था, पर इन आधुनिक ज्ञानों के साथ अपनी सभ्यता, खान पान आदि को बहुत सुरक्षित रखा।

महात्मा जी ने अपने दायित्व को अत्यन्त सादगी, सरलता एवं कर्तव्यनिष्ठता के साथ निभाया। सुनते है, वे जमीन पर बैठकर कार्य करते थे। छोटे बड़े कार्य कैसे भी हों, बेहिचक उन सब कार्यों को करते रहे।

1933 में महर्षि दयानन्द के निर्वाण की अजमेर में जब अर्धशताब्दी मनाई गयी, उस समय बहुत से साधु संन्यासी पधारे। उन्होंने स्वामी सर्वदानन्द जी से प्रार्थना की, कि वे महात्मा हंसराज जी को संन्यास लेने की प्रेरणा करे, तब स्वामी सर्वदानन्द जी ने समस्त साधुओं से कहा कि वे सफेद वस्त्रों में संन्यासी है, उन्हें भगवा वस्त्र पहनने की आवश्यकता नहीं।

महात्मा जी का चिन्तन

महात्मा जी ने लेखन का कार्य भी किया। उनकी पुस्तकें अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाओं में हैं। महात्मा जी के ग्रन्थ बताते है कि वेद और वैदिक धर्म ही जीवन की सही धरोहर है, उनसे ही प्रकाश मिलता है।

महात्मा हंसराज जी का दृढ़तम विचार था कि जैसे सिक्ख केश, कंघा, कटार, कच्छा व कड़ा स्वरूप 5 ककार अनिवार्यतः धारण करते हैं, वैसे ही चरित्र एवं नैतिकता के लिए प्रत्येक आर्य को 5 सकार 1. संध्या 2. स्वाध्याय 3. संस्कार 4. सेवा 5. सत्संग धारण करने चाहिए।

महात्मा जी को अपने आर्य होने का बड़ा गर्व था और प्रत्येक आर्य के लिए भी उनका यही सन्देश था कि अपने वैदिक धर्म, आर्य नाम एवं निराकार ईश्वर की

शेष पृष्ठ 48 पर ☞

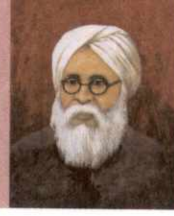

with best Compliments

ओ३म्

Hans Raj Model School

Punjabi Bagh, New Delhi

Phone no : 45911500, Website : info@hansrajmodelschool.org

First DAV Public school started on 7th May 1966 to perpetuate the sacred memory of Mahatma Hansraj , pioneer of DAV movement.

- Ranked 4th at national Level , 2nd at state Level and 1st at City Level amongst 570 DAV schools by Education world Sept. 2014.
- Ranked 4th West Delhi Leader by Times School Survey 2014.
- Declared by CBSE at No. 4 amongst top 5 schools out of 15000 on basis of Class X board results 2013.
- Outstanding CBSE results of class XII 2014:-
- Puranjay Singhal 2nd rank all India DAV topper with 98.2% from Commerce Stream.
- Ashish Chhabra 1st rank Delhi State topper (Visually impaired) from Science Stream.
- Inspire Awards to 6 students with yearly scholarships for Rs. 80,000 for 5 years .
- Deputed by Archaeological Survey of India for adoption of Sheesh Mahal,Heritage Monument in Rohini .
- School campus spread over 8.5 acres housing Primary, middle, secondary, sr. secondary multistoried blocks catering to 6400 students.
- Separate 1.5 acres specially designed campus to house A.C. class rooms for Kinder Garten.
- Excellent well managed and superb in - house facilities with smart classes, computer centers, Maths Lab, Language lab, Teacher Resource Centre , Heritage centre, Gym and Dispensary.
- Auditorium with seating capacity of 1000.
- Semi Olympic sized swimming pool.
- International level Skating Rink.
- 8 International players in T.T., Cricket, Lawn Tennis and Taekwondo along with 80 National level players and 57 state level players and in 16 disciplines of sports .
- Received CBSE Sports Promotion awards 2014.

School Principal , Mrs. Rita Rajen Kumar honoured with State Award 2013 by Directorate of Education ,Delhi.

Promoting Global Outlook **Propagating Aryan values.**

A unique educational institute.

Our Mentors

Shri. Punam Suri
President ,DAVCMC

Shri. R.S. Sharma
Chairman ,HRMS

Shri. S.R.Arora
Vice Chairman ,HRMS

Shri. Ravinder Kumar
Manager ,HRMS

Dr. Nisha Peshin
Director-PSII
Public Schools & Academics

thearyasamaj.org

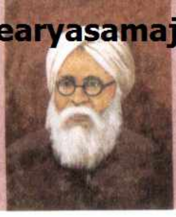

with best Compliments

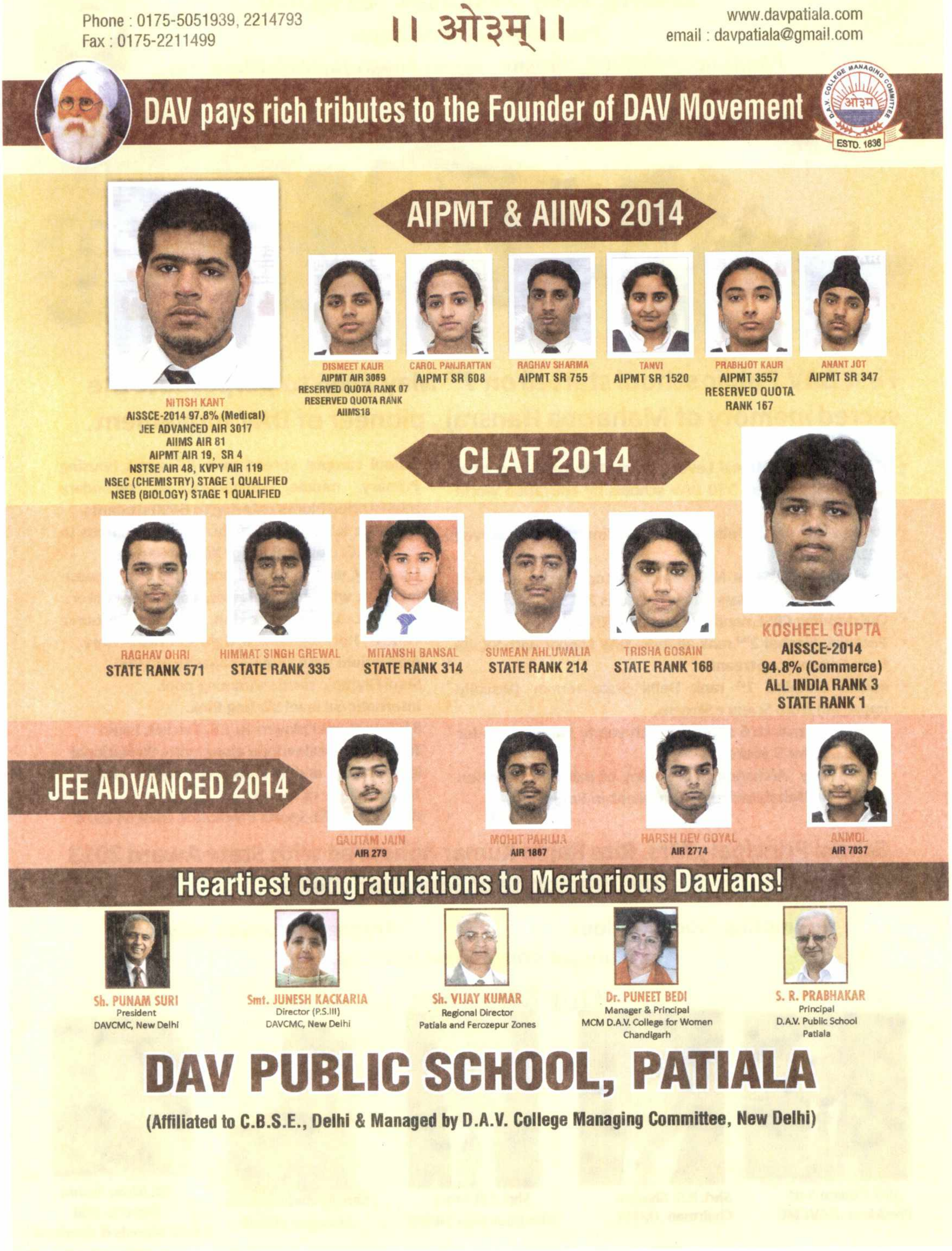

thearyasamaj.org

with best Compliments

D.A.V. SR. SEC. SCHOOL (LAHORE)

(CO-EDUCATIONAL) SECTOR 8-C, CHANDIGARH, PH: 0172-2781345, 2781562

The Terminus A Quo of the DAV Movement Enters its 129th Glorious Year of Service to Humanity

The school has produced Patriots like Shaheed Bhagat Singh, a number of Defence Officers like Shaheed Sandeep Sagar and Shaheed Capt. Rohit Kaushal, Senior Bureaucrats and Efficient Administrators like Lt. Governor Swaraj Kaushal, Randeep Surjewala and Legal Luminaries like Justice (Retd.) A.L. Bahri Ji.

Important Features: Five Wing Campus in Green Surroundings | Area 10 acres | Outstanding Results | English & Hindi Mediums | Special Emphasis on Moral Education | Min. charges with Max. Amenities | Sports Facilities for almost all games : Cricket, Basketball, Football, Handball etc. | GYM with latest facilities | Preference to brilliant students and sportsmen | Special Classes for Boarders upto Class X | Special Emphasis on Co-scholastic Activities | UT State Sports Champions for more than 40 years

Academic Achievers Classes XII & X : 2013-14 | Int. Sport Stars 2013-14

DIVAKAR KAPIL	MAYANK GUPTA	GUNJAN AGGARWAL	JASPREET KAUR	SONALI KAUNDAL	VIKAS SINGH	AMRIT LUBANA	VICKY DHINGAN
95.4%	92.7%	92.6%	92.4%	92.2%	Class X	Cricket	Sambo
Non-Medical	Non-Medical	Non-Medical	Arts	Medical	CGPA 9.0	Coca-Cola Cup	Asian Games Camp

HARI RAM HOSTEL

HOME AWAY FROM HOME FOR BOYS OF CLASSES VI TO XII

Ph: 0172-2544356, 2780809

D.A.V. CRICKET ACADEMY

OUR INTERNATIONAL CRICKET STARS

ASHOK MALHOTRA | KAPIL DEV | YOGRAJ SINGH | CHETAN SHARMA | DINESH MONGIA | YUVRAJ SINGH | VRV SINGH | PARSHANT CHOPRA

Dr. Vibha Ray (Principal)

Dr. Puneet Bedi (Manager)

Justice Amarjit Chaudhary (Retd.) (Chairman)

साहित्यकार महात्मा हंसराज

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

यह इतिहास का सुनिश्चित मत है कि महात्मा हंसराज आधुनिक भारत में राष्ट्रीय शिक्षा के प्रथम प्रस्तोता थे। लगभग चौथाई सदी तक लाहौर के विख्यात महाविद्यालय डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर के प्राचार्य पद पर रहकर उन्होंने शिक्षा को प्राच्य और पश्चिम के सम्मिलित आदर्शों का केन्द्र बनाया। पंजाब में ही नहीं, देश के अन्य भागों में भी ऐसा राष्ट्रीय कॉलेज कहीं नहीं था। त्यागमय आदर्श जीवन व्यतीत करने के साथ–साथ महात्मा हंसराज कलम के भी धनी थे। उनकी निम्न रचनाएँ प्रकाश में आई है।

ऋषि के वैदिक व्याख्यान की पुष्टि में लिखा उनका एक ग्रन्थ अंग्रेजी में मिलता है जो 1917 में छपा था। इसका नाम था– " The Great Seer" or The Intrepretation of the Vedas by Dayanand". इसका उर्दू अनुवाद 1917 में **''स्वामी दयानन्द का वेद अर्थ''** शीर्षक से छपा। ऋषि दर्शन शीर्षक ग्रन्थ के साथ ऋषि दर्शन पूजा धर्म तथा ऋषि दर्शन गृहस्थ धर्म भी।

समय–समय पर वे पत्रों में लेख भी लिखते थे। इनका उर्दू संग्रह **''मोतियों का हार''** उर्दू में प्रकाशित हुआ। महात्मा बड़े भारी साधक तथा आध्यात्मिक पुरुष थे। संध्या पर उनकी व्याख्या 1980 में हिन्दी तथा उर्दू में छपी और लोकप्रिय हुई। इसे बाद में प्रादेशिक सभा ने भी प्रकाशित किया था। आवश्यकता इसे पुनः प्रकाश में लाने की है। 1931 में लाला मूलराज जो वस्तुतः खान पान में मांस की गणना करते थे, एक पुस्तिका दश प्रश्नी लिखी और इस प्रश्न पर जोर दिया आर्य समाज में सदस्य बनने के लिए न तो वेदप्रमाण को मानने की आवश्यकता है और न ही ऋषि दयानन्द को आप्त पुरुष। इसका सटीक उत्तर महात्माजी ने 1931 में दिया। जब डी.ए.वी. कॉलेज में धर्म शिक्षा आरम्भ की तो इसके लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार करने का काम महात्मा जी के जिम्मे रहा। इस क्रम में उन्होंने मानव संग्रह (मनु श्लोक संग्रह) तथा मानव धर्म सार (श्लोकों का अन्य संग्रह) सम्पादित किये। अफगानिस्तान में धर्म पर बलिदान होने वाले वीर मुरली मनोहर का जीवन चरित्र भी लिखा। आवश्यकता इस बात की है कि महात्मा जी के सम्पूर्ण साहित्य को पुनः प्रकाशित किया जाये।

**3/5 शंकर कॉलोनी
नजदीक चहल चौक
श्रीगंगानगर।**

ईश्वर का मानवता को उपहार–महात्मा हंसराज

● प्रिं.चित्रा नाकरा

महात्मा हंसराज जी को देखने का सौभाग्य मेरे इन नयनों को तो नहीं मिला, अब वे लोग भी नहीं रहे जिन्होंने शिक्षा यज्ञ में सर्वस्व समर्पण करने वाले इस सर्वमेधी शिक्षा ऋषि के दर्शन किये थे। हाँ आज भी वे इतिहास के पृष्ठ उनकी शौर्य कथाएँ कह रहे हैं, हमें रास्ता दिखा रहे हैं हमारे मन और मस्तिष्क को उनकी यादों के उजालों से रोशन कर रहे हैं, वर्तमान युग की स्थिति को देख कर कभी–कभी हमें भ्रांति भी होने लगती है कि जब लोग एक–एक पैसे के लिए अपना ईमान बेच देते हैं, अपनी क्षणिक वासना की पूर्ति के लिए चरित्र को तार–तार कर देते हैं, भाई–भाई के खून से अपने हाथ रंग बैठता है क्या कुछ समय पहले एक ऐसा भी मानव पैदा हुआ होगा जिसने अंग्रेजों के शासन के दौर में जहाँ वह एक शानदार भौतिक जीवन जी सकता हो, जिसने प्रतिष्ठा पूर्ण रूप से विद्या का अर्जन किया हो गरीबी के दामन को थामकर जीवन जीना सीखा हो, अभाव और पीड़ा को भोगते हुए चलना जनता हो, दूसरों के दुःख और दर्द की समझ रखना पैदा किया हो। अभाव की कोख से अवतरित हुआ था वह पैगाम्बर जिसने अपने गुरुदेव दयानंद और वेदों के शाश्वत सिद्धांतों को जन–जन तक फैलाने के लिए व्रत लिया था सत्य एवं धर्म की राह पर चलने का।

गीता कहती है–

**यद्यदाचरित श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।**

उत्तम स्वभाव और चरित्र के लोग जिस मार्ग का वरण करते हैं, लाखों लोग उसी पर चल पड़ते हैं।

न कोई वेतन न कोई भत्ता न अन्य कोई सुख सुविधा भाई मुल्कराज से 40 रुपये मासिक पाने वाला, ऋषि के मिशन को अहर्निश आगे ले जाने का दृढ़ संकल्प करने वाला, इतना ईमानदार और इतना अपरिग्रही कि अपने व्यक्तिगत लेखन तक के लिए विद्यालय की स्याही व लेखनी तक का प्रयोग न करना स्वयं के लिए प्रदान की जाने वाली वस्तुओं को भी विद्यालय को अर्पित कर देना, ऐसा था वह अनोखा इंसान।

ऐसा था वह दौर जब शिक्षा के प्रचार–प्रसार का दायित्व सम्भालने के बहाने भारत में चलने वाली पाठशालाओं और मदरसों को अंग्रेज सरकार बंद करती चल रहीं थी, सरकारी स्कूल स्थापित किये जा रहे थे ताकि भारतीय छात्रों में ईसाइयत का बीजारोपण हो सके।

अंग्रेज सरकार की यह योजना सफल होती जा रही थी भारतीय छात्र अंग्रेजी राज्य के अनुकूल शिक्षा पाकर उनके यंत्र बनने लगे। थोड़ी अंग्रेजी पढ़ने और अंग्रेजियत को अपनाने वालों को अच्छे–अच्छे सरकारी पद मिलने लगे और लोग इसे अपना सौभाग्य मानने लगे।

उस समय सरकार की इस भयंकर योजना का विरोध करना शेर के दांत गिनने जैसा था, सरकार अपने थोड़ा भी विपरीत चलने वाले को राजद्रोही ठहराकर तरह–तरह से परेशान और बर्बाद कर रही थी। बड़ी मुश्किलों से भरा समय था। एक और भारतीयता थी तो दूसरी और प्राणों पर संकट, स्वतंत्रता संग्राम की विफलता ने जनता में घोर निराशा के भाव उत्पन्न कर दिए थे। लोग किसी भी अत्याचार को परमेश्वर की इच्छा मानकर सहन करते चले जाते थे, स्वाभिमान और सम्मान की भावना दम तोड़ रही थी, ऐसे में स्वदेशी की बात कहना अपने संस्कारों और शिक्षा को दीप्त रखना ऐसा ही था मानो प्राणों को हथेली पर लेकर चलना हो लेकिन जो निस्वार्थ पवित्र भावना लेकर आगे बढते हैं उनके कदमों को रोकने की हिम्मत किसी में भी नहीं होती वरन प्रकृति की शक्तियां भी उनका साथ देती चली जाती हैं, सूरज उनके रास्ते का दीपक बन जाता है, चंद्रमा उनकी आरती उतारता है पवन उनके लिए चावँर चलाता है और बादल उनके ऊपर छत्र तानता है, वे अकेले ही चले थे अपने सम्पूर्ण जीवन को श्रद्धांजलि बनाकर ऋषिवर के चरणों में अर्पित करने के लिए, लेकिन फिर तो लाखों परवाने अपने–अपने प्राणों की भेंटे लेकर चल पड़े थे–

किसी शायर ने ठीक ही कहा है–

**मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल।
लोग मिलते गये कारवां बनता गया।।**

महात्मा हंसराज की भावनापूर्ण तपस्या फलीभूत हुई उनका त्याग अंकुरित हुआ और देश में डी.ए.वी. स्कूलों और कालेजों का जाल बिछने लगा, अनेक लोगों ने मुक्त हस्त से दान और जीवन अर्पण करना शुरू किया और ऋषिवर दयानंद के दिव्य विचारों के मंदिर स्थान–स्थान पर विद्यालयों का रूप लेकर महकने लगे थे। आज उन्हें हंसराजों की आवश्यकता है, हमारा विश्वास है कि प्रार्थना कभी मरती नहीं, विचार अमर होते हैं। ऋषिवर देव दयानंद तथा महात्मा हंसराज की चिरन्तन ज्योतिष्मती प्रतिभा की भूरि–भूरि प्रशंसा में अवश्य भवभूति के स्वर में स्वर मिलकर अवश्य नीरव प्रतिध्वनि कर रही होगी–

**उत्पत्स्यते च मम कोऽपि समान –धर्मा,
कालो ह्ययं निरवधि विपुला च पृथ्वी।**

वेद व्यास डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, विकासपुरी

☞ *पृष्ठ 44 का शेष*

शिष्ट पंक्ति के व्यक्तित्व...

उपासना को गर्व से प्रकट करें। डी.ए. वी. संस्थानों में महात्मा हंसराज जी ने अपने जीवन काल तक गणित, साईस, अंग्रेजी आदि शिक्षा के साथ–साथ धर्म, आर्य समाज महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों की शिक्षा का पूरा संघर्ष पूर्वक प्रबन्धन किया।

सामाजिक कार्य

महात्मा हंसराज जी ने समाज में फैली कुरीतियों के लिए भी सतत प्रयास किया। डी.ए.वी. स्कूल, कॉलेजों के संचालन के साथ–साथ स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ शुद्धि आन्दोलन का कार्य करते रहे। अनेकानेक कार्य करते हुए कार्यों में इतना तल्लीन हो गये कि स्वास्थ्य बिगड़ गया।

14 नवम्बर 1938 की अर्धरात्री के पश्चात् वे हमसे दूर हो गये। आज महात्मा जी संसार में नहीं है, पुनरपि उनके कार्य उन्हें जीवन्त बनाये हुए है। उनकी सच्ची श्रद्धांजलि इसी में निहित है कि डी.ए.वी. स्कूल कॉलेज आदि प्रकल्पों में विस्तृत डी.ए.वी. संस्थान आन्दोलन महात्मा हंसराज जी के उद्देश्यों एवं वेद, आर्यसमाज, आर्य विचार प्रसार के कार्य को कहीं से स्खलित न होने दे, यदि कहीं स्खलन हो, तो उसे भी सम्भालते हुए महापुरूष की कर्मशाला को सशस्त बनावें।

डी.ए.वी. नाम में डी. दयानन्द वाचक शब्द है जो कि वेद, संस्कृति, धर्म का पर्यायवाची है। तात्पर्य यह हुआ डी.ए.वी. कॉलेज, स्कूल आदि दयानन्द मिशन को अग्रगण्य बनाने में सर्वदा प्रयत्नशील रहे। महात्मा जी आज भी डी.ए.वी. संस्थानों को निहार रहे हैं।

**आत्ममार्थ जीवलोकऽस्मिन्को न जीवति मानवः।
परं परोपकारार्थ यो जीवति स जीवति।।**

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज,
जि. सिरोही–307027 (राज.)

thearyasamaj.org

Vision of
A Great Visionary

DAV PUBLIC SCHOOL, HAZARIBAG

Canary Hill Road, Hazaribag – 825301 (Jharkhand)
Phone (s) : 06546-260345 (Sr.), 262543 (Jr.), 261345 (TF)
E-mail : davpshzb123@gmail.com Website : www.davhzb.ac.in

Sh. Punam Suri
President
DAV College Managing Committee.

About School: Located in the sylvan surroundings of the lush green Canary Hills, the majestic DAV edifice, stands out as a proud testimony to what an unwavering pursuit of excellence can accomplish. Started with 22 students in 1992, the school has exceptionally high student strength (6000) at present in Hazaribag zone, spread over two wings. Its aesthetically and ergonomically designed building complex, sprawling campus, state-of-the-art labs, a well-stocked, fully computerized library complete with e-library comprising CD ROM's and video lectures - above all, a highly qualified, competent and committed faculty together with a host of other outstanding features, make it a dream destination for the seekers of educational excellence. A fully I.T. enabled school moves in step with the latest in teaching methods and technology.

Mr. Ashok Kumar, Principal
DAV, Public School, Hazaribag

Honoured with **NATIONAL AWARD-2013**
In recognition of the exceptional contribution to the field of education, the Govt. of India honoured Mr. Ashok Kumar with the National Award on 5th September, 2014 Teacher's Day. The award was received by him from Hon'ble President Shri Pranab Mukherjee at Vigyan Bhawan, Delhi.

Recent Milestones Reached by the School

66 students of CBSE Class XII Board Exam–2014 secured **90% and above** marks. **Rajesh Kumar, Faizul Haque & Gautam Suman got 96.6%, 96.2% & 96%** marks respectively in AISSCE-2014, Science Stream. **Ankita Kumari** topped the district by securing **95.6% marks** in AISSCE 2014, Commerce Stream. In AISSE-2014, 31 students have achieved A1 i.e. **10 CGPA. Miss Stefy Patel** was adjudged as **First Runner Up in Miss Teen India Award-2014. Gautam Suman topped the state in Jharkhand Combined 2014 in OBC Category. Ananya Sinha** has brought laurel to the school by taking part in **Sr. Group National Level Online Essay Writing Competition organized by Ministry of Human Resourse Development, Govt. of India** on the occasion of Teacher's Day. Ananya is among the four participants from Jharkhand and 148 participants across the country who were considered outstanding in essay writing. She was awarded a cash prize of Rs.5500/- and a certificate of merit. **Sweta of IX 'C'** added the feather to the school's cap by **winning an HCL tablet for emerging second in Jharkhand in Telegraph Star Reader Contest 2014** whereas **Anvita Priyam of X 'C'** and **Vijay Laxmi of XII 'C'** were felicitated with **consolation prizes. Zishan Zainul, Rajesh Kumar, Madhukar Rana, Gautam Suman, Mohit Kumar, Ashutosh Anshu** who studied at our School upto XII have made the school proud by **cracking JEE Advanced 2014. Abhishek Kumar & Anshu Soni** qualified for **AIPMT Entrance Exam 2014** whereas **Sayeed Mahmood and Nikita Singh** qualified for the **Jharkhand Medical Entrance Exam-2014.** Krishanu, participated in the **INSPIRE AWARD SCHEME-2014** conducted by the **Department of Science and Technology, Govt. of India** at Ranchi University, Ranchi. The Government of India felicitated him at state level and further he was selected from Jharkhand to participate in the **National Level Competition** to be held at **New Delhi. Ashutosh Anshu** participated in the **BRAINOMANIA- 2013** conducted by **ISM Dhanbad** and **clinched a laptop and a trophy for emerging first in the state.** He has always been doing exceedingly well in scholastic as well as co-scholastic activities in the school. Here at this point it will not be out of place to mention that this very lad had won **Rs. 1,01,000 as a scholarship for being placed First in the Zonal Level BHASHKAR GENIUS SCHOLARSHIP REWARD EXAM.** The School's Quiz Team participated in the **Sudha All India Inter School Cross-word Puzzle Contest** jointly organized by **CBSE and & Bihar State Milk Co-operative Federation Ltd. (COMFED)** and got First position in State Level and 6th in National Level competition held at Pragati Maidan, New Delhi. The school's quiz team qualified for the Regional Finals of 13th **CBSE Heritage India Quiz-2013** held on 27th November, 2013 at St Michaels, Patna. The school's Basketball team finished Second in the **CBSE Cluster II Basketball Tournament-2014 and qualified for the National Level Meet.** The school celebrates Van Mahotsava and distributes 6000 to 7000 saplings every year. The school organized **cleanliness awareness programme** by being the part of Swachh Bharat Abhiyan launched by Hon'ble Shri Narendra Modi, Prime Minister of India on 2nd October 2014. In the morning a human chain was formed and cleanliness activity was carried out all around.

Shri J. P. Shoor
Director PS-I

Shri Ravinder Kumar
Chairman

Shri Mahesh Chopra
Vice-Chairman

Mrs. Urmila Singh
Regional Director

Dr. T.P. Pati
Manager

Shri Ashok Kumar
Principal

with best Compliments

thearyasamaj.org

with best Compliments

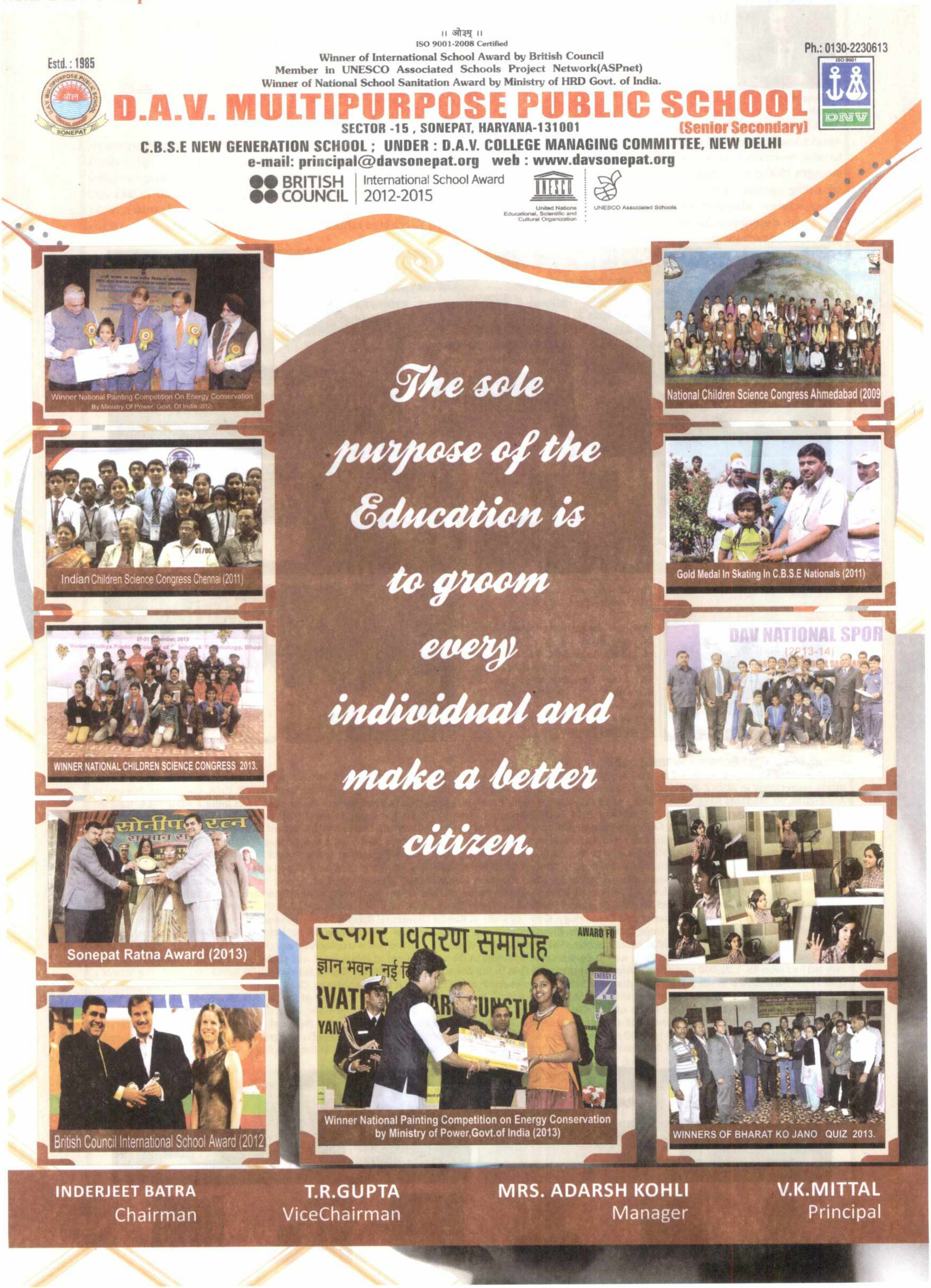

with best Compliments

DAV PUBLIC SCHOOL

ओ३म् D.A.V. COLLEGE MANAGING COMMITTEE ESTD 1886

BALLABHGARH, FARIDABAD (HARYANA)

Website : www.davblb.ac.in, E-mail : info@davblb.ac.in
Ph. : 0129-2241755, 2249642

BRITISH COUNCIL INTERNATIONAL SCHOOL AWARD 2014-2017

Rising to Majestic Stature

सर्वस्व त्यागी, तपस्वी एवं महान् शिक्षाविद् महात्मा हंसराज जी की पावन स्मृति को हमारा कोटिशः नमन्

Mahatma Hansraj
(Founder of DAV Movement)

Our USP

The school's amiable ambience which leaves an idelible impression on everyone's mind with its beautiful building encapsulating state-of-the-art infrastructutre, integration of technology in innovative teaching practices, emphasis on fostering human values and meeting high standards in curricular and co-curricular activities, is its USP.

International Face of the School

The school has been conferred with International School Award (ISA) by British Council for the period 2014-17. We also received a grant of pound 3000 by British Council, UK in partnership with UK school St. Augustine Academy, Kent, UK. Team of teachers of the same school visited our school towards reciprocal visit grants funding connecting classroom project.

School is associated with Tony Blaire face to faith foundation which organizes school programmes in more than 30 countries. We are actively involved with the organization to provide young learners the knowledge and skills to understand other religious and cultural prospects through face to face video conferences with their peers around the world.

The school has also initiated "School Enterprising Challenge" for the students of class XI and XII Commerce in collaboration with British Council which aims at "Teach a man to fish so that entrepreneurial skills are inculcated right from the beginning.

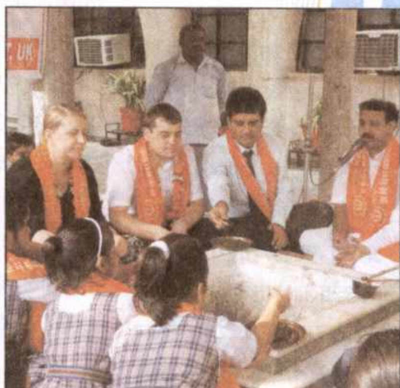

Punam Suri	**Satish Ahuja**	**V K Chopra**
Chairman	Manager	Principal

thearyasamaj.org

महात्मा हंसराज जी

(परोपकारी, समाजसेवी एवं समाज सुधारक के रूप में)

● डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज

विद्या–विलास–मनसो धृत–शील–शिक्षाः,
सत्यव्रता रहित मान–मलापहाराः।
संसार–दु:ख दलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहित–कर्म परोपकाराः।।

भावार्थः– विद्या के पठन–पाठन से विकसित मन वाले, उत्तम स्वभाव और शिक्षा को धारण करने वाले, सत्यव्रत वाले, अभिमान के दोष से रहित संसार का दु:ख दूर करने में तत्पर रहने वाले, परोपकार में लगे हुए–ऐसे मनुष्यों का ही जन्म सफल होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में स्वनिर्मित श्लोक को लिखते हुए आदर्श मानव के गुणों की चर्चा की है, जिन्हें धारण करने से मनुष्य–जन्म सफल हो सकता है। महात्मा हंसराज का जीवन इन सब गुणों का मूर्तिमान रूप था। गाँव के एक निर्धन और साधनहीन कुल में उत्पन्न एक व्यक्ति का जीवन विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करता हुआ भी किस प्रकार उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है, यह जानना हो तो महात्मा जी का जीवन इस दिशा में विशेष प्रेरणाप्रद है।

पंजाब के होशियारपुर जिले के अन्तर्गत बजवाड़ा ग्राम के लाला चुन्नीलाल और माता हरदेवी के पुत्ररत्न के रूप में हंसराज का जन्म 18 अप्रैल 1864 में हुआ। इनके बड़े भाई का नाम मुल्कराज था। आर्थिक दृष्टि से निर्धन होने के बावजूद यह परिवार परिश्रम और स्वात्माभिमान से अतिशय सम्पन्न था और हंसराज ने ये दोनों गुण विरासत में प्राप्त किए थे।

हंसराज का सेवा का कार्य बचपन से ही शुरू हो गया था उस समय गाँवों के अधिकांश लोग अनपढ़ ही होते थे। हंसराज उनके पत्र लिख देते अथवा बाहर से आए उनके पत्रों को पढ़कर सुना देते। माता प्रायः डाँटती कि 'तू अपनी पढ़ाई करेगा अथवा दूसरों के पत्र ही लिखता–पढ़ता रहेगा' तो उदार–चित्त हंसराज माता को यही उत्तर देते कि 'जितना कुछ मैंने पढ़ा है अगर वह दूसरों के काम नहीं आता तो किस काम का?' उनके बड़े भाई भी सेवा–भावना से परिपूर्ण और उदार चित्त के थे। हंसराज अपनी समस्या लेकर उनके पास गए तो उन्होंने कहा कि 'अपने वेतन (80 रूपए) का आधा भाग मैं तुम्हें आजीवन देता रहूँगा। अपनी पवित्र निष्काम सेवा भावना को कार्यान्वित करो।' हंसराज की समस्या इस दैवी प्रेरणा से हल हो गई और मुल्कराज ने आजीवन इस प्रण का निष्ठा के साथ पालन किया। धन्य है दोनों भाइयों का त्याग और सेवा–भावना। निर्धनता को दोनों भाइयों ने स्वतः गले लगाया।

1886 में डी.ए.वी. स्कूल के मुख्याध्यापक और 1889 कॉलेज के प्रिंसिपल हंसराज जी हुए । जनता ने अब इनको 'महात्मा हंसराज' नाम से सुशोभित किया और महात्मा जी 25 वर्ष तक कालेज में बिना किसी प्रकार का वेतन लिए पद पर आरूढ़ रहे। इसी दौरान उन्होंने आर्य युवक समाज की स्थापना की। इस प्रकार की समाज–सेवा का उदाहरण हंसराज के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? उनका सधा–तपा जीवन वस्तुतः चलता फिरता प्रकाश–स्तम्भ था।

महात्मा जी के हृदय में बचपन से ही परोपकार, कातर–करुणा और दरिद्रनारायण की सेवा के भाव अंकुरित थे। अपनी इस पुनीत भावना को वे अपने शिक्षाकाल तथा तत्पश्चात् कार्यक्षेत्र में आने पर विविध प्रकार से कार्यान्वित करते रहे।

आर्यसमाज की तो स्थापना ही महर्षि ने न केवल भारत किन्तु सम्पूर्ण संसार के उपकार के लिए ही की थी। महात्मा जी इस परोपकार वृत्ति के मूर्त रूप थे। भारत में जहाँ भी अकाल, भूकम्प, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपत्तियों से जनता संकटग्रस्त हुई, महात्मा जी अपने साथियों सहित अविलम्ब सहायता के लिए पहुँच गए। 1895 में बीकानेर में सूखा पड़ा और भयंकर दुर्भिक्ष फैल गया। महात्मा हंसराज और लाला लाजपतराय एवं कालेज के छात्र–स्वयं सेवकों के साथ वहाँ पहुँचे तथा अनाथ बच्चों को वहाँ से लाकर आगरा, भिवानी और फिरोजपुर के अनाथालयों में प्रविष्ट किया गया।

1899 में राजपूताना में फिर अकाल पड़ा। महात्मा जी के तत्त्वाधान में आर्य स्वयं सेवकों और कार्यकर्ताओं ने हिन्दुओं को विधर्मियों के जाल से बचाया और 14,000 बच्चों की रक्षा करके उनकी तात्कालिक व स्थिर सहायता की। कई बच्चों को अनाथालयों में भर्ती किया गया।

1905 में काँगड़ा में प्रलयकारी भूकम्प ने भारी विनाश किया। महात्मा हंसराज लाला लाजपतराय एवं स्वयंसेवकों और डॉक्टरों के साथ तत्काल वहाँ सहायता के लिए पहुँचे।

1907–08 में जब अवध में दुर्भिक्ष का प्रकोप हुआ तक महात्मा जी के तत्त्वाधान में कम से कम 15000 नर–नारियों की प्राणरक्षा की गई। शहर में भगदड़ मच गई और कोई किसी को पानी पूछने वाला भी नहीं था। महात्मा जी के तत्त्वाधान में पं. रलियाराम बजवाड़िया ने अपनी जान को जोखिम में डाल ऐसा सेवा कार्य किया कि ईसाई नेता को भी कहना पड़ा कि 'ऐसा सच्चा सेवक कभी नहीं देखा गया।'

1918 में गढ़वाल और 1920 में उड़ीसा में, 1921 में शिमला, काँगड़ा और जम्मू में अकाल के आक्रमण हुए। महात्मा जी के नेतृत्व में सर्वत्र सोत्साह सहायक कार्य चलाए गए। 1921–22 में मालाबार (केरल) में भयंकर हिन्दू–मुस्लिम दंगा हुआ जिसमें मोपला मुसलमानों ने हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार किए, हिन्दुओं को बलपूर्वक विधर्मी बनाया गया और हिन्दू –नारियों का बड़ी संख्या में अपहरण, घर्षण और उत्पीड़न किया गया। महात्मा जी के तत्त्वावधान में पं. ऋषिराम, लाला खुशहाल चन्द (अब महात्मा आनन्द स्वामी) पं. मस्तानाचन्द महंत सावनमल ने अथक सेवाकार्य किए एवं 2500 से अधिक हिन्दुओं को पुनः अपने प्रिय धर्म में लाया गया और यहाँ पूरा वर्ष सहायक केन्द्र चलते रहे।

1924 में कोहाट में साम्प्रदायिक दंगा हुआ। हिन्दुओं की लाखों रूपए की सम्पत्ति लूटी व नष्ट की गई। महात्मा जी की प्रेरणा से यहाँ सहायता कार्य चलाया गया। जिला मुजफ्फरगढ़ और रोहतक में बाढ़–पीड़ितों की सहायता की गई।

1932 में रियासत जम्मू–काश्मीर पुंछ के विभिन्न स्थानों में मुसलमानों द्वारा दंगे आरम्भ कर हिन्दुओं पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए गए। मुफ्त लंगर खोले और जरूरतमन्द व्यक्तियों को कपड़े, बिस्तर बर्तन आदि दिए गए।

1934 में बिहार में प्रबल भूकम्प आया। महात्मा जी की प्रेरणा से आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से 421 देहातों में 50,000 से अधिक व्यक्तियों को भोजन, वस्त्र और गृहस्थी का सामान दिया गया।

27–28 मई 1934 को क्वेटा में भयंकर भूकम्प आया। 25000 से अधिक नर–नारी इस प्रलयकारी रात के कुछ क्षणों में ही मृत्यु के ग्रास हो गए। सरकार द्वारा अनेक प्रकार की बाधाएँ उपस्थित किए जाने पर भी सेवादल ने प्रशंसनीय सहायता कार्य किया। सभा की ओर से लगभग 30,000 रुपए खर्च किए गए।

इस अवसर पर देशव्यापी सेवा कार्यों के अतिरिक्त महात्मा जी ने समाज–सुधार आन्दोलन का नेतृत्व किया। हरिजनोद्धार, छूआछूत, विधवा–विवाह, नारी–शिक्षा, ब्रह्मचर्य–पालन, शुद्धि, संगठन, जात–पात से मुक्ति, विवाह सम्बन्धी कुरीतियों–इत्यादि सामाजिक कार्यों में महात्मा जी की दिलचस्पी आजीवन बनी रही।

नवम्बर 1927 में सार्वदेशिक सभा की ओर से दिल्ली में प्रथम आर्य महासम्मेलन समस्त आर्य जगत् की ओर से विशाल पैमाने पर आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता महात्मा जी ने की। इस समय ब्रिटिश सरकार के इशारे पर मुसलमान संगठित रूप से हिन्दुओं के साथ स्थान–स्थान पर झगड़े–फसाद, हत्या और लूटमार कर रहे थे। दिसम्बर 1926 में स्वामी श्रद्धानन्द जी की दिल्ली में दिन–दिहाड़े हत्या कर दी गई। महात्मा जी ने आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में आर्यसमाज का प्रशस्त पथ–प्रदर्शन किया।

वयस्क, शिक्षित और सेवा–भाव वाले व्यक्तियों को आकृष्ट करने के लिए एकान्तवास और साधना द्वारा अध्यात्म–मार्ग के साधकों के लिए महात्मा जी की प्रेरणा से एक दानी ने हरिद्वार में 'मोहन आश्रम' स्थापित किया, जहाँ वानप्रस्थियों और साधु–संन्यासियों के लिए संस्कृत अध्ययन का भी प्रबन्ध था और महात्मा जी स्वयं इस आश्रम में प्रतिवर्ष कुछ मास रहते थे।

महात्मा जी ने अपने जीवनकाल में जहाँ डी.ए.वी. कालेज में अपने त्याग और कर्तव्यनिष्ठ जीवन से कई सुयोग्य शिक्षाविद् एवं उत्तराधिकारी तैयार कर दिए थे, वहाँ आर्य प्रादेशिक सभा का दायित्व सँभालने के लिए लाला खुशहालचन्द जी (महात्मा आन्नद स्वामी) को सभा का कार्यभार सौंप दिया था।

महात्मा जी का स्वास्थ्य जब गिरने लगा तो 8 नवम्बर 1938 को मिलने गए खुशहालचन्द जी से महात्मा जी ने अपनी अन्तिम कामनाएँ प्रकट कीं; (1) डी.ए.वी. कालेज कमेटी में कम हो रहे आर्य समाजी व्यक्तियों की ओर ध्यान देना। (2) समाज का ढाँचा न बिखरे, (3) साधु आश्रम होशियारपुर और मोहन आश्रम का ध्यान रखना (4) वेद–प्रचार का काम ढीला न हो, इस ओर विशेष ध्यान देना।

इन बातों से स्पष्ट होता है कि जीवन के अन्तिम समय में भी उन्हें परोपकार, समाज सेवा और समाज–सुधार की कितनी चिन्ता थी। बीस दिन की बीमारी के बाद 15 नवम्बर 1938 की रात के 11 बजे 74 वर्ष की आयु में विद्या, धर्म, आत्म बलिदान, तप, त्याग, परोपकार और समाज सेवा का मूर्त्त रूप यह महामानव सदा के लिए चिरनिद्रा में विलीन हो गया।

आज देश के कोने–कोने में डी.ए.वी. संस्थाओं का जाल बिछा है, इन संस्थाओं की आधारशिला में हंसराज का तप, त्याग काम कर रहा है। महात्मा हंसराज ने स्वयं जलकर, तपकर कई जीवन प्रकाशित किए। हम भी अपने अन्दर महात्मा हंसराज के समाजसेवा समर्पण त्याग, सादगी, सेवा, परोपकार के भाव जागृत कर सके तभी उनको सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

हंसराज महिला महाविद्यालय,
जालंधर

With Best Wishes from :

DARBARI LAL DAV MODEL SCHOOL

CBSE New Generation School

ND BLOCK, PITAMPURA, DELHI – 110 034.

(Certified ISO 9001:2000)

An English Medium Senior Secondary School with excellent infrastructure
Progressive quality institution blending the best of modernity with the best of tradition

Also Running Successfully

CBSE International Curriculum

For classes I to V

in a separate Fully Air Conditioned CBSE i Wing

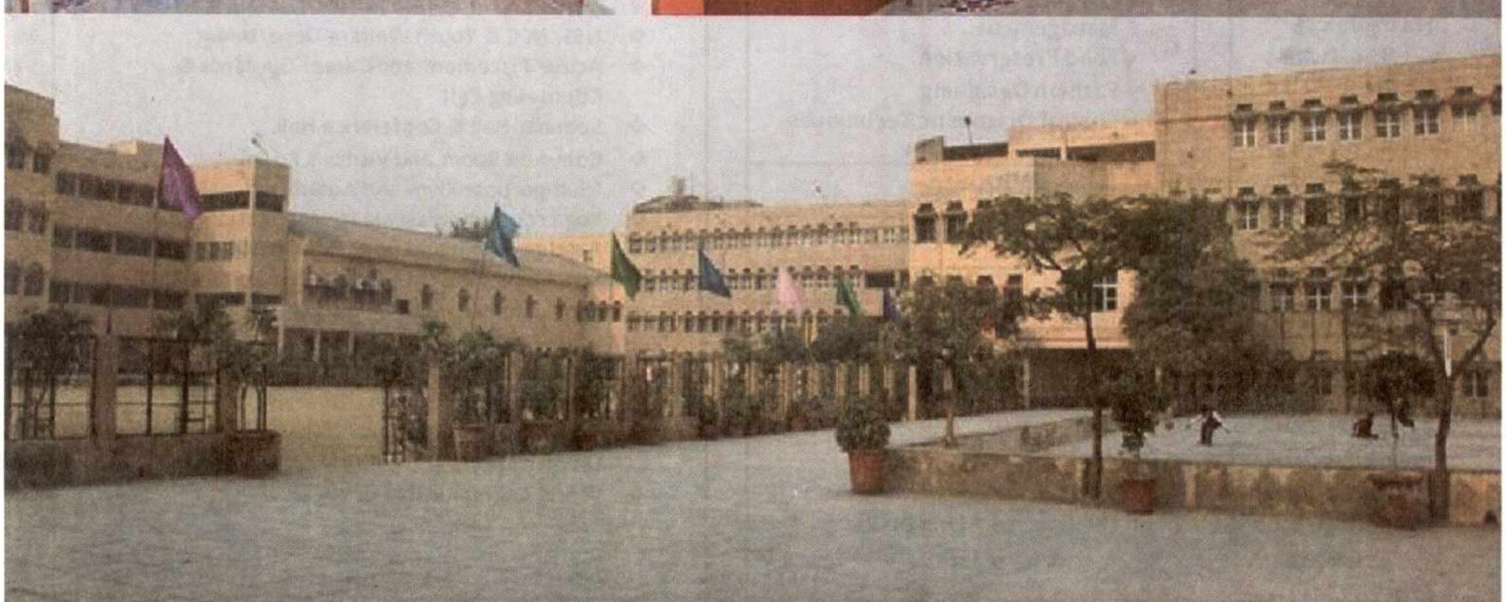

thearyasamaj.org

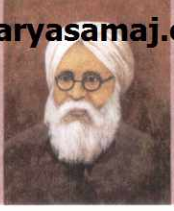

with best Compliments

RR BAWA DAV College For Girls, Batala

(Re-accredited with 'A' grade by NAAC, Bangalore)

- ★ *The only Institution in the Region with Ultra-Modern Facilities & Latest Teaching Aids*
- ★ *The only Institution in Batala with 7 PG Courses*
- ★ *The only Institution under GNDU to have 2 Research Chairs, Women Studies Centre & Legal Literacy Cell.*

OUR COURSES

PG COURSES

- M.Com.
- M.Sc. (IT)
- M.Sc. (C.Sc)
- M.Sc. (Maths)
- MA (English)
- MA (Punjabi)
- MA (Hindi)

UG COURSES

- BA (Reg.)
- BA (Vocational)
- B.Sc. (Medical)
- B.Sc. (Non-Medical)
- B.Sc. (IT)
- B.Sc. (Economics)
- B.Sc. (with CND)
- BCA
- B.Com. (R)
- B.Com. (P)
- BBA

INNOVATIVE COURSES

- BA (Women Empowerment)
- PG Diploma in Cosmetology & Health Care

PG DIPLOMAS

- PG Diploma in Computer Applications
- PG Diploma in Garment Construction & Dress Designing and Tailoring

UG DIPLOMAS

- Diploma in Stitching & Tailoring
- Diploma in Computer Applications
- Diploma in Cosmetology

ADD-ON COURSES

- Cosmetology
- Communication Skills
- Cooking, Catering and Event Management
- Food Preservation
- Fashion Designing
- Clinical Diagnostic Techniques

CERTIFICATE COURSE

- Human Rights

OUR GLORIOUS RESULTS

- ★ 9 University Positions (Among first 10 Positions)
- ★ 30 University Merit Positions
- ★ 702 First Divisions
- ★ 100% result in as many as 35 Classes
- ★ Above 90% result in 5 Classes
- ★ Above 88% result in 3 Classes
- ★ College pass %age in all the Classes > University pass%age

OUR SALIENT FEATURES

- ❖ Affordable Fee Structure.
- ❖ Special coaching classes for JEE Mains + Advance (IIT) and NEET under (UG).
- ❖ Individual attention to meritorious students.
- ❖ Remedial Classes for weak students.
- ❖ Compact Time Table.
- ❖ Special concession to Meritorious & Talented Students and Players.
- ❖ Selection of students in Engineering, Medical and Para-Medical Courses.
- ❖ Vast campus with Laws and Playgrounds.
- ❖ Smart Class Rooms with portable mimeos.
- ❖ Well-equipped Labs for all subjects.
- ❖ Hi-tech Language Lab.
- ❖ Holistic Health Hub
- ❖ Fully modernized Cosmetology Lab.
- ❖ Well-equipped Digital Library with current Magazines and Newspapers.
- ❖ Hostel facility with Homely and Congenial Environment & Food.
- ❖ Erudite & Dedicated faculty.
- ❖ NSS, NCC & Youth Welfare Department.
- ❖ Active Placement and Career Guidance & Counseling Cell.
- ❖ Seminar Hall & Conference Hall.
- ❖ Common Room and Visitor's Room.
- ❖ Multipurpose Gym and Auditorium.
- ❖ Yoga room; Yagyashala for Meditation.
- ❖ Reading Room and Book Bank facility.
- ❖ Swimming Pool with International Standards.
- ❖ Eco-friendly Campus.
- ❖ Wi-Fi Campus with lease line.
- ❖ Computer Labs with Audio-Visual Aids and Internet facility.
- ❖ Winners at International, National as well as State Level in Sports and cultural activities.
- ❖ World Championship in Yoga.

Phone No.: 01871-240357, 223781 (M) 97802-25107 Fax No.: 01871-223781
E-mail: rrbawadavcollege@yahoo.co.in Website: www.rrbdavc.org

Sh. S.P. Marwaha
Chairman (LMC)

Prof. Dr. (Mrs.) Ajay Sareen
Principal

thearyasamaj.org

डी.ए.वी. और महात्मा हंसराज

● प्रो. 'डॉ.' सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सदियों का ठूँठ वृक्ष हो गया था हरा-भरा,
कोयलिया डालियों पै मीठे गीत गा गई।
शेर की दहाड़ सुन भागे थे शृगाल सभी,
जिन्दगी में वीरता की भावना सी छा गई।।
बादल अविद्या के छँटे तो नभ साफ हुआ,
किरणें प्रकाश की अंधेरा सभी खा गई।
भारत-बुढ़ापे की झुकी कमर सीधी हुई,
आया दयानन्द तो जवानी फिर आ गई।।

क्रूर आततायियों के दिल में दया का दान,
मेरे भगवान करो शुद्ध दुष्ट आत्मा।
माटी का मजाक जो उड़ाते हैं वे पगले हैं,
बुद्धिहीन को दो बुद्धि-दान परमात्मा।।
एक बीज पेड़ बने बढ़े वट वृक्ष तने,
करदे अविद्या के अंधेरे का जो खात्मा।
कागज के फूल नहीं शूल व त्रिशूल नहीं,
हंसराज सा दे हमें दूसरा महात्मा।।

भारत की संस्कृति को मारने की साजिश की,
विकृति का विष डाला तख्त और ताज ने।
पूरब के घोंसले पै पश्चिम की चोंच तान,
पक्षियों को मारने की योजना की बाज ने।
राम कृष्ण भूल जायें, ईसा के ही गीत गायें,
रचा ऐसा षड़यन्त्र गोरों के समाज ने।
डी.ए.वी. बीज बो के विचरें निडर हो के,
मैकाले को धूल में मिलाया हंसराज ने।।

अपने रिवाज भूल औरों पै रहे थे झूल,
वेद-वृक्ष बोने चले भारत के बाग में
मन में जो ठानते थे, करके ही मानते थे,
तभी लोग जानते थे गाते रोज राग में।।
पड़ी हुई सूनी मांग, देते थे विदेशी बांग,
धूल थी अड़ाती टांग शिक्षा के सुहाग में।
जीवन को तप त्याग साधना का पुंज मान,
हंसराज कूद गए धधकती आग में।।

जहाँ देखो वही तने 'तंबू खूब कातिलों के,
ऐसा लगता है जैसे आया फिर कंस है।
कव्वों की कव्वाली नित्य सुनने में आ रही है,
बढ़ता ही जाता रोज-रोज काक वंश है।।
होगा कोई गैर के भी पास इक्का-दुक्का हंस,
वैसे तो अधिकतर साँप का ही दंश है।।
क्यों न हम डी.ए.वी. का दम भरें, नाज करें,
हंसराज सा हमारे पास राजहंस है।।

रक्त दान प्राण दान मूढ़ को विवेक दान,
डी.ए.वी. का अर्थ एक दृष्टि की समानता।
रोग का निदान आन, बान और शान,
एक लक्ष्य है महान जान जीवन महानता।।
बंजर में बीज एक चीज है लजीज साथ,
सावन व तीज एक ध्यान एकतानता।
विश्व में पताका ओम् ध्वज की फहराती है,
डी.ए.वी. का नाम काम कौन नहीं जानता।।

सैनिक सा नियम समुद्र की विशालता है,
डी.ए.वी. है धूप एक साथ-साथ छाँव है।
धरती सा धीरज है व्योम की विराटता है,
डी.ए.वी. है शहर तो साथ-साथ गाँव है।।
शब्द की समर्थता है, अर्थ की विपुलता है,
डी.ए.वी. है लहर तो साथ-साथ नाव है।
कोई आँधी कोई शक्ति इसको हिलायेगी क्या,
डी.ए.वी. तो मित्र! एक अंगद का पाँव है।।

पूरब व पश्चिम का संगम अनोखा है ये,
भूत को भविष्य से मिलाता वर्तमान है।
ज्ञान का प्रकाश चारों दिशाओं में फेंकता है,
अंधकार नाश हेतु उगा दिनमान है।
साहस है क्षमता है दक्षता है यौवन है,
सत्य है समर्पण है पंख है उड़ान है।
डी.ए.वी. का वीरवेश ऐसा मुझे लगता है
अर्जुन के पास जैसे तीर है कमान है।।

आदिवासी क्षेत्रों में भी लिये हाथ ज्ञानदीप,
अंधकार को चुनौती देता हुआ वीर है।
अधरों पै शुष्कता है, मन में मरुस्थल है
जिनके, सदा से उन्हें देता शुद्ध नीर है।।
नित्य नई कल्पना है, आँगन की अल्पना है,
अम्बर में उड़ता सुनहला सा कीर है।
दूसरों के हितों हेतु जो हुआ समर्पित है,
डी.ए.वी. कहूंगा मैं तो ऐसा ही फकीर है।
डी.ए.वी. का धर्म मर्म कर्म सिर्फ है प्रकाश,
हंसराज के अनोखे त्याग की निशानी है।
देशभक्त शुद्ध रक्त, पास है न ताज तख्त
छायादार है दरख्त, सेवा की ही ठानी है।
शरदः शतम् का किया क्या लक्ष्य पूरा खूब
चेहरे पै झुर्री नहीं चढ़ती जवानी है।
गोरों की गनों पै भारतीय वृक्ष तान दिया,
डी.ए.वी. सरीखा बोलो कौन बलिदानी है।।

जहाँ भी अँधेरा मतिमंदता दिखाई देती,
ऋषि के सिपाहियों! वहीं पै दीप से जलो।
छले जाना ठीक नहीं और छलना न ठीक,
शुद्ध मन से बिताओ जिन्दगी, नहीं छलो।।
जाने कुछ लोग क्यों बिदकते हैं नाम से ही।
ज्ञान की मशाल लिए हाथ में चले चलो।
डी.ए.वी. में ऐंग्लो प्रमुख नहीं रही कभी
दयानन्द वैदिक के बीच बँधी ऐंग्लो।।

उठो आर्य वीर!धीर! बनके समीर आज,
बिगड़ा है काज, भाग्य देश का सँवार दो।
हंसराज लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द चले,
चलो उसी राह और शूलों को बुहार दो।।
देव दयानन्द के न स्वप्न टूट जायें कहीं,
रंग नहीं, देके खून चित्र को निखार दो।
टूट जाएँ, झुकें नहीं विश्व को बनाएँ आर्य
एक बार मिल सभी जोर से पुकार दो।।

ए-I/13-14 सैक्टर-11,
रोहिणी, दिल्ली

thearyasamaj.org

26 नवम्बर 2008 को दक्षिणी मुम्बई पर पाक आतंकियों का हमला

● हरिकृष्ण निगम

प्रसिद्ध अमेरिकी पत्रकार थामस एल. फ्रीडमेन द्वारा अविश्वसनीय संभावित परिदृश्च–रचना अथवा स्ट्रेटजिक सिनेरियो प्लानिंग

दक्षिणी मुम्बई के प्रसिद्ध ताज, ओबराय व ट्राइडेन्ट होटल, कोलाबा के लियोपोल्ड रेस्तराँ, क्षत्रपति शिवाजी टर्मिनस और यहूदियों के प्रसिद्ध नरीमान हाउस पर कुख्यात 26/11 के हमलों पर स्वयं मुम्बई के रहने वाले इसकी पृष्ठभूमि व षड्यंत्र के कई पक्ष भूलते जा रहे हैं। कुछ दिनों पहले प्रसिद्ध अमेरिका लेखक थामस एल. फ्रीडमेन ने एक विपरीत सिनेरियो रचना या रणनीतिक पटक था अथवा सिनेरियो–प्लानिंग द्वारा विशेषज्ञों के लिए एक संभावना जताई थी वह हमारी आँखें आज भी खोल सकती है।

लेखक फ्रीडमेन की उपर्युक्त पटकथा–निर्मिति इतनी अनूठी थी कि आज जब उस भयंकर हादसे की पांचवी स्मृति–तिथि मनाई जा रही है तब उसका उदाहरण दे कर याद करना सार्थक व प्रासंगिक होगा। पाकिस्तानी सेना, उसकी गुप्तचर एजेन्सी आई. इस. आई. और सरकार के आतंकवाद–समर्थक मंत्री व कुछ अन्य तत्वों ने लश्करेतैयबा से मिलकर 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई पर तटीय रास्ते से हमले की साजिश रची थी। इस षड्यंत्र में उनके देश का प्रत्यक्ष लिप्त होना स्पष्ट था। इसके पहले भी जुलाई 2006 में पश्चिमी रेलवे की गाड़ियों पर दादर, विले–पार्ले, जोगेश्वरी व बोरिवली में हुई बम विस्फोटों की श्रंखला में 200 लोग मारे जा चुके थे और सैकड़ों हताहत हो चुके थे। क्योंकि उसमें सभी मृतक व हताहत स्थानीय भारतीय नागरिक थे, इसलिए जैशे–मोहम्मद के साथ स्थानीय घरेलू आतंकवादियों का लिप्त होना दबे स्वर में था। पर दो–वर्ष बाद जब दक्षिणी मुम्बई के ताज आदि पर हुए हमलों में अनेक विदेशी नागरिकों व यहूदियो की मृत्यु हुई तब स्वयं सरकार ने अधिक सक्रियता दिखाई। केन्द्र व राज्य सरकार के कुछ मंत्रियों के इस्तीफे लिए गए जिनके नाम भी आज सामान्य जनता को याद नहीं रहे और कुछ तो फिर राजनीति में पुनः फल फूल रहे हैं। इसे मानवता पर हमला कहने के शोर के बाद स्वयं हमारे देश का अंग्रेज़ी मीडिया आतंकवादियों के मानवाधिकारों के पक्ष में निर्लज्जता से कूद पड़ा था।

क्या हम भूल सकते हैं कि 26 नवम्बर 2008 को लश्करे–तैयबा द्वारा मुम्बई पर जो हमला हुआ था और 27 नवम्बर को जब ताज व नरीमान हाउस में गोली बारी व विस्फोट हो रहे थे, उसी शाम पाकिस्तानी सेना के साथ नजदीकी सम्बन्ध वाले एक प्रमुख सम्पादक द्वारा एक विजय–सभा का आयोजन हो रहा था। यह सभा इस्लामाबाद में हुई थी और इसके निमंत्रण पत्र तहरीक–ए–पाकिस्तान नामक संगठन द्वारा भेजे गए। उस सभा में मुम्बई पर हमला करने वाले आतंकवादियों का अभिनन्दन किया गया था। एक आतंकवादी ने तो इस सभा के कुछ आयोजकों से फोन पर बात भी की थी। उसने सभा के लिए सन्देश भेजा था। त्रासदी तो यह थी कि भारतीय गुप्तकर एजेन्सियों व हमारी सेना के कुछ कमान्डो 'आन लाईन', 'रियल–टाइम' संचारण से पाकिस्तान नियंत्रण की गतिविधियों व उनके निर्देश भी देख रहे थे। कुछ नेताओं व शीर्ष अधिकारियों का जान बूझ कर निष्क्रिय रहना अविश्वसनीय लगता है। यदि भारत की जगह अमेरिका अथवा कोई पश्चिमी देश होता तो उसको गिरफ्तार कर सरकार द्वारा 'महाभियोग' की कार्यवाही की जा सकती थी। यहाँ तक कि प्रसिद्ध भारतीय मूल के अमेरिकी पत्रकार फ़रीद जकरिया की तुरन्त बाद में बनाई फ़िल्म '*टेरर इन बाम्बे*' का जिस तरह तथ्यपरक होने के बाद भी इस देश के प्रमुख श्रव्य–दृश्य मुद्रित मीड़िया ने अनदेखा कर मज़ाक उड़ाया था और जो बाद में विश्व के सुरक्षा–विशेषज्ञों ने सही सत्यापित की थी, उस पर आज भी नरेन्द्र मोदी की सरकार को पुनः निष्पक्ष जाँच करवाना चाहिए था।

थामस एल. फ्रीडमेन की उपयुर्क्त विपरीत परिदृश्य रचना जो उन्होंने 'न्यूयार्क टाइम्स' में प्रकाशित लेख में खुल कर पाकिस्तानियों को एक चुनौती के रूप में लिखी थी उसके अंश अक्षरशः नीचे दिए जा रहे हैं जो आज भी इस देश के नागरिकों के लिए अल्पज्ञात तथ्य हो सकते हैं।

"सोचिए, कि यदि 26/11 के दुर्दांत पाकिस्तानी युवा आतंकवादियों की जगह भारतीय जनतापार्टी के 10 अलग हुए दिग्भ्रमित, अतिरेकी मानसिकता वाले यही करते और स्पीड बोटों द्वारा चालाकी से पाकिस्तान के कराची बन्दरगाह पहुंच जाते। कराची के दो बड़े होटलों को हमले का निशाना बना कर वे कराची के सेन्ट्रल स्टेशन में घुस जाते और 178 लोगों को गोलियो से भून देते। वहाँ पहुँच कर सऊदी धन से बनी एक विशाल मस्जिद के इमाम व उसकी पत्नी को उस समय मार डालते जब वे अपने दो–साल के नन्हें पुत्र को खिला रहा होता। तथा पालने में झुला रहा होता। वह भी सिर्फ इसलिए कि वे सुन्नी मुस्लिम थे। तब हम कहाँ होते और सारा मुस्लिम विश्व सड़कों पर भारत के विरुद्ध प्रतिरोध में आग लगा रहा होता।"

इस अविश्वसनीय लगने वाले उपर्युक्त प्रकाशित आलेख में थामस एल फ्रीडमेन ने यह तथ्य उजागर किया है कि पाकिस्तान व बृहद् मुस्लिम विश्व की मुम्बई हादसे के बाद निष्पक्ष मानसिकता यही होनी चाहिए थी कि अकेले बचे पकड़े हुए युवा आतकंवादी कसाब को बचाने की कोशिश के स्थान पर दूसरे 10 मृतक आतंकवादी कराची द्वारा पहचाने जाते कि वे पाक–नागरिक थे और विश्वप्रेस के सामने उनका अपराध माना जाता। पर अराजक–टूटते हुए पाकिस्तानी समाज में अंग्रेज़ी प्रेस द्वारा जो बाद में समवेत स्वरों में छपता रहा वह इस भयावह हादसे के परिणाम से भी अधिक अक्षम्य था, क्योंकि वहाँ सिर्फ हिन्दू विरोधी घृणा की अनुगूंज थी। लेखक ने आशा व्यक्त की है कि यह सब वह भारत के हिमायती के रूप में नहीं, प्रत्युत पाकिस्तान के अपने अस्तित्व को बचाने के लिए उनके पक्ष में लिख रहा है। इसलिए यह आलेख पाकिस्तानियों के पढ़ने के लिए विरोष रूप से है।

ए–1002 पंचशील हाईटस
महावीर नगर कान्दिवली (प)
मुम्बई–400067
मो. 9820215464

"सन्ध्या स्वयं एक शस्त्र है और बड़ा शस्त्र है। जैसे सूर्य की रश्मियों से रात्रि की सेनाएँ स्वयं ही छिन्न-भिन्न हो जाती हैं, उसी प्रकार पाप के दल इस शस्त्र के सामने नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। इन मन्त्रों की अदभुत शक्ति से, इनके अर्थो पर विचार करने से जीवन के आदर्श उच्च हो जाते हैं।

●●●

जो मनुष्य पुरुषार्थी होकर सबके उपकार करने वाले और धार्मिक होते हैं, वही पूर्ण ऐश्वर्य की रक्षा करके सर्वत्र सत्कार के योग्य होते हैं।"

– महात्मा हंसराज

thearyasamaj.org

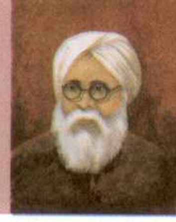

with best Compliments

DAV PUBLIC SCHOOLS, JHARKHAND ZONE-III

C/o DAV Public School, Hehal, Ranchi (Jharkhand)-834005

Regional Director: **Dr. T. P. Pati**

Regional Office: DAV Campus, Bariatu, Ranchi-834009

Schools under Jharkhand Zone-III

Sl. No.	Sch. Code	Name of School	Category	AISSCE Result-2014						
				Students Strength	Science			Commerce		
					Apprd	Pass	Sch. Avg.	Apprd	Pass	Sch. Avg.
1	JH-021	D.A.V. Public School, Gumla (JH)	DM	1666	38	35	65.55			
2	JH-038	MB DAV Public School, Lohardaga (JH)	DM	1690	113	73	61.30			
3	JH-041	SS DAV Cent. Public School, Khunti,	DM	2258	35	35	76.24	36	36	71.73
4	JH-043	DAV Public School, Bariatu, Ranchi (JH)	DM	3802	412	382	76.56	74	74	74.84
5	JH-045	DAV Kapildev Public School, Kadru Ranchi	DM	3273	387	371	77.61	137	135	75.58
6	JH-048	DAV Public School, NIT Campus, Adityapur	DM	3402	196	174	68.39	81	66	54.60
7	JH-050	SJ DAV Public School, Chaibasa, Singhbhum	DM	2525	41	41	75.07	52	48	69.49
8	JH-056	DAV Public School, Bistupur Jamshedpur	DM	3948	407	380	77.66	99	84	65.66
9	JH-064	Nirja Sahay DAV Public School, Kanke,	DM	1474	42	35	70.77	9	9	73.4
10	JH-053	DAV Public School, ACC Jhinkpani,	Project	587	18	14	70.22			
11	JH-054	TATA DAV Public School, Noamundi,	Project	900	28	28	79.83			
12	JH-040	DAV Co-Op. Sr. Sec School, Khalari, Ranchi (JH)	Semi Proj	1181	50	50	75.14	41	41	69.40
					Arts			8	6	62.23
13	JH-044	DAV Public School, Itki Road, Hehal Ranchi (JH)	DM	5858	479	447	75.93	195	192	74.91
					Arts			53	52	73.03
14	JH-052	DAV Public School, Gua, Singhbhum	Project	825			Arts only	16	15	55.50
15	JH-068	TPS DAV Public School, Baharagora,	DM	826						
16	JH-076	DAV Public School, Latehar (JH)	DM	696						
17	JH-080	M.A. Devi DAV Public School, Silli, Ranchi	DM	402						
18	JH-070	Birsa Munda DAV Resi.Public School,	Project	320						
19	JH-073	TCI DAV Public School, Govindpur Road,	Project	610						
20	JH-051	DAV Public School, PO:Chiria,Singhbhum	Project	540						
21	JH-042	SR DAV Public School, Ashok Nagar, Ranchi	DM	2092						
22	JH-049	DAV Public School, Simdega (Jharkhand)	DM	1245						

Out of 14 Sr. Sec. Schools, the school average of 9 schools has been above 70% and 7 schools above 75%.

Congratulations to all the Principals and Teachers for excellent performance of the students in Secondary and Sr. Secondary Exam 2014. Let's try to fulfill the dreams of the founders of DAV, especially uplifting the Tribal and downtrodden.

Special Achievements of the Zone

Shri P. Hazra, Principal, BNS DAV Giridih received CBSE Award this year

More than 50 students qualified IIT 2014 from different schools of Ranchi Zone.

Varun Ranjan an ex-student of DAV Kapildev, Kadru, Ranchi qualified IAS-2013 scoring 38th Rank.

Rudhra Pratap Goswami of Class-XI of DAV Kapildev P.S. Kadru, Ranchi received Award & Merit Certificate from Hon'ble Dr. A.P.J. Abdul Khalam at IIM Ahmedabad for his unique Ideas& Innovation on "Pen to Check Concentration"

Sameer Titung of DAV Khalari won 1 silver and 2 bronze in 13th Sub-Junior National Wushu Championship held at Bagalkot, Karnataka. Jyoti Bhadur of DAV Khalari won Bronze in 7th Junior International Wushu Championship-2013 held at Makati Coliseum, Mahati City, Philippines

महात्मा हंसराज : होनहार बिरवान के होत चीकने पात

● डॉ. रमा

नवजागरण से लेकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की परिणति तक भारतीय राजनीतिक पटल पर जिन अनेकानेक घटनाओं का प्रस्फुटन हुआ, उनमें आर्यसमाज का अभ्युदय सर्वाधिक प्रभावकारी घटनाओं में से एक है। आर्यसमाज ने न केवल 'स्वराज' का सर्वप्रथम उद्घोष किया वरन् स्वाधीनता, स्वदेशी, स्वत्व और स्वाभिमान का भी मूल मंत्र दिया। यही कारण था कि रोमां रोला ने आर्यसमाज को एक संस्था नहीं अपितु एक आन्दोलन, एक क्रान्ति कहा था। स्वाधीनता संघर्ष के पुरोधा पट्टाभि सीतारमैया ने इसी कारण यह स्वीकार किया था कि **"स्वाधीनता संघर्ष में भाग लेने वाले 85 प्रतिशत से भी अधिक आर्यसमाजी थे।"**

आर्यसमाज ने भारतीय समाज में सद्भावना और एकता का प्रसार तो किया ही शिक्षा और सामाजिक समस्याओं के लिए भी बेसिक स्तर पर मजबूत किया। भारत में शिक्षा के साथ ही भारतीय संस्कृति और सभ्यता को भी आर्यसमाज ने विकसित किया आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जिसके विद्यालय और महाविद्यालय शहर–शहर में अपना सहयोग देने के लिए स्थापित किए गए हैं।

आर्यसमाज की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसने भारत को समय–समय पर ऐसे मनीषियों और समाजसुधारकों को जन्म दिया जिन्होंन भारत की परंपरा और संस्कृति को देश के बाहर भी फैलाया और भारत को विश्वगुरू बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया। महर्षि दयानन्द के बाद जिन विद्वानों और समाज सुधारकों ने अपना पूरा जीवन अपने देश को सिर्फ दो खाने और कपड़े के बदले समर्पित कर दिया महात्मा हंसराज उन्हीं आदरणीय लोगों में एक हैं।महात्मा हंसराज ने बालावस्था से ही आर्यसमाज के नियमों और सिद्धांतों को आत्मसात किया और अपने किशोरावस्था में ही आर्यसमाज के बड़े पदों को सुशोभित किया। मात्र 22 वर्ष की आयु में ही 1 जून 1886 को 'दयानन्द एग्लो वैदिक हाई स्कूल, लोहौर' का प्रधानाध्यापक नियुक्त होना ही उनके जीवन की महत्ता को स्थापित कर देता है। प्रेरणा देने वाली बात यह है कि यह पद उन्हें उनके तपस्वी और कुशल प्रबंधन बुद्धि के लिए दिया गया। आज का युवा जिस तरह मल्टीनेशनल कंपनियों के पीछे पैसों के लिए भाग रहा है, समाज क्या परिवार तक जिसके चिन्ता में नहीं, उनके लिए महात्मा जी का यह त्याग किसी प्रेरणा से कम नहीं है। बहुत कुछ पा लेने की होड़ और आधुनिक होने की लिप्सा में हम जो लगातार अपनी परंपरा और सभ्यता से को भूल रहे हैं उसकी भरपाई किसी भी हालत में संभव नहीं हो सकती। महात्मा हंसराज की जीवन शैली हमें अपने जड़ों से जोड़े रखने में अहम् भूमिका निभाती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिस वैदिक संस्कृति को आधुनिक संदर्भों में पुनर्व्याख्यायित किया महात्मा हंसराज ने उसे और विकसित किया। दयानन्द के आदर्शों और सिद्धांतों को महात्मा ने और भी प्रसारित किया। उन्होंने न केवल आर्य सिद्धान्तों के प्रसार में योगदान बल्कि प्राच्य सभ्यता व संस्कृति के गुणगान व राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की वकालत भी उल्लेखनीय है।

महात्मा हंसराज ने हिन्दी भाषा के प्रति अपनी कठोर निष्ठा का आजीवन पालन किया। दयानन्द सरस्वती ने अपने अनुयायियों को राष्ट्रवादी विचारधारा से ओत–प्रोत स्वदेशी पत्रों के प्रकाशन एवं संचालन के लिए प्रबल समर्थन व प्रोत्साहल भी दिया। वे हिन्दी भाषा को आर्य भाषा कहकर संबोधित करते थे। निःसंदेह हिन्दी को व्यवहार भाषा, संपर्क भाषा, लोकभाषा तथा माध्यम भाषा बनाने में महर्षि दयानन्द की महत्वपूर्ण भूमिका है। महर्षि दयानन्द ने भारतवासियों को न केवल मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्यौछावर की प्रेरणा दी वरन् हिन्दी के उन्नयन के लिए भी यह उद्घोषणा की थी कि **'हिन्दी ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांध सकती है।'** उन्होंने हिन्दी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा देने के लिए अपने अनुयायियों का मार्गदर्शन किया ओर उन्हें हिन्दी के लिए काम करने के लिए प्रोत्साहित भी किया। महात्मा हंसराज स्वयं हिन्दी के विद्वान और वक्ता रहे। उनकी सभाओ और संगोष्ठियों में श्रोताओं की संख्या दयानन्द स्वामी से कम कभी नहीं रही।

महात्मा हंसराज ने हिन्दी पत्रकारिता और हिन्दी साहित्य के विकास व उसके प्रचार–प्रचार में अपनी महत् भूमिका अदा की है, वहीं हिन्दी पत्रकारिता के विकास में भी अपना अमूल्य योगदान दिया है। आर्यसमाज के ही प्रयोगों से हिन्दी प्रेस ने भारतीय जन–गण को लोकतंत्र का प्रथम पंच प्रदान किया। इस संबंध में पं अंबिका प्रसाद वाजपेयी ने कहा भी है कि "यदि स्वदेशी प्रेस ना होता तो भारत की आज़ादी उतनी शीघ्रता से ना मिल पाती।"

स्वतंत्रता के संघर्ष से लेकर स्वातंत्रोत्तर परिस्थितियों में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका अहम् रही है और हिन्दी पत्रकारिता के विकास में आर्यसमाज का योगदान रहा है। इसका एक प्रमाण यह है कि हज़ारों की संख्या में वरिष्ठ पत्रकारों व संपादकों का संबंध प्रत्यक्ष रूप में आर्यसमाजों, गुरूकुलों तथा आर्य समाजी परिवारों से रहना है। या तो ये पत्रकार गुरूकुलों अथवा आर्य संस्थाओं में शिक्षित हुए हैं अथवा आर्यसमाजी माता पिता की संताने हैं।

यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि आर्यसमाज एक ऐसा भट्टा है जिसने हिन्दी पत्रकारिता के भवन को अनगिनत चट्टानें, ईंट और स्वर्णिम कलश– कंगूरे प्रदान किए हैं। आर्य समाज के मार्गदर्शन में आज भी हिन्दी पत्रकारिता को एक दिशा प्राप्त हो रही है जिसमें महात्मा हंसराज ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

आर्यसमाज के धार्मिक सिद्धांतों को महात्मा हंसराज ने और विकसित किया उन्होंने ऐसे धर्म से लोगों को परिचित करवाया जो कभी भी आस्था को को रूढ़ नहीं बनाता बल्कि उसे रूढ़ियों से मुक्ति दिलाता है। आर्यसमाज के बहुतायत संख्या में लोगों का जुड़कर कार्य करना यह दर्शाता है कि आर्यसमाज ने भारतीय समाज में धर्म को लेकर जो अंधमान्यता थी उसे दूर की। उसमें धर्म के वैदिक स्वरूप को विकसित किया जो कर्मकांड और आडम्बरों से दूर है। महात्मा जी आजीवन व्यावसायिक धर्म का विरोध किया और भारतीय धर्म पर आने वाली बाह्य शक्तियों को रोका भी। ईसाई मिशनरों के आगमन और उसके प्रचार प्रसार का विरोध सबसे अधिक महात्मा हंसराज ने ही किया। वह जानते थे यह बाहरी मानसिकता हमारी पुरातन सभ्यता और संस्कृति को नुकसान पहुंचा देगी। इसलिए उन्होंने भारत की वैदिक परंपरा का समर्थन किया।

संक्षेप में देखें तो महात्मा हंसराज का पूरा जीवन प्रेरणाओं से भरा हुआ है। उन्होंने बचपन में ही अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दे दे दिया जिस उम्र में आज जीवन जीने वाले लोग इस मायावी दुनिया की रंगीनियों में उलझकर भ्रमित होते हैं उस उम्र में महात्मा ने अपना पूरा जीवन समाज को समार्पित कर दिया और कम उम्र में देश के प्रतिष्ठित पदों को सुशोभित किया।

एसो. प्रो. हिन्दी विभाग
हंसराज कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
संपर्क– 09891172389

"आर्यों का कर्त्तव्य है कि वे अपने सामने आर्य सिद्धान्त रखें और इन सिद्धान्तों को आगे बढ़ाते हुए आर्यसमाज को दृढ़ करें।"

– महात्मा हंसराज

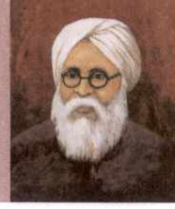

with best Compliments

R.B.D.A.V.SR.SEC.PUBLIC SCHOOL, BATHINDA

Under the Direct Control of DAV CMC, New Delhi
Affiliated to C.B.S.E. New Delhi

Aarushi
Winner of National Level Chess Competition.

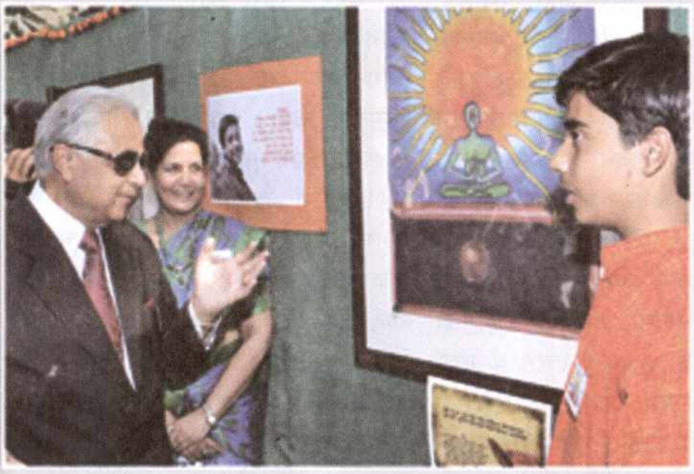

Arya Rattan Sh.Punam Suri Ji blessing the Young Artist of Painting Exhibition on the Theme Rig Vedas.

Dr.(Mrs.) Satwant Bhullar (Principal) being honoured with C.B.S.E. Award by H.R.D. Minister

School Alumni Mr.Sandeep Garg being welcomed after selection as IPS Officer

DAV Officials with Painting selected by Lalit Kala Academy

National Winner Group Song Team being honoured by Bharat Vikas Parishad at Ahmedabad

Salient Features:-

Air Conditioned Library, Seminar Halls, Block Wise ICT Labs, Play Grounds, Language Lab, Art Room, Campus Equipped with Wi-Fi Connectivity and C.C.T.V.s, Ultra Modern Smart Boards, Daily Havan Yagya, Freeships for Meritorious Students and Outstanding Players/Talented Students in Dance, Drama and Music, Facilities for Indoor and Outdoor Games, Professional Training and vast exposure to Staff and Students, Regular trips and Excursion

Sh. Punam Suri	Dr.B.B.Sharma	Dr.J.S.Anand	Dr.Satwant Bhullar
(Chairman)	(Regional Director) (DAV Public Schools, Bathinda Zone)	(Manager)	(Principal)

महात्मा हंसराज

● रेणु लरोइया

यह भारतवर्ष का परम सौभाग्य रहा है कि जब–जब इस देश के ऊपर कोई बहुत बड़ी आपत्ति आती है तो उस समय किसी न किसी दिव्य आत्मा का महापुरुष के रुप में जन्म होता है जो अपनी तपस्या, साधना और शिक्षा से समाज को नई प्रेरणा, प्रकाश व दिशा देता है। तभी तो श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा है–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।

ठीक इसी प्रकार से जब हमारे देश में विदेशी विचार और विदेशी सभ्यता के वैचारिक आक्रमण के कारण पूरा समाज संगठन भावों को भूलकर आपसी कलह में उलझ गया था उसी समय युगपुरुष स्वामी दयानन्द जी ने वैदिक शिक्षा के प्रकाश के द्वारा समाज को एक नई दिशा दी लेकिन कुछ मूर्ख लोगों ने अपने उपकारक दयानन्द को ही मौत की नींद सुला दिया तब समाज में फिर से निराशा और अंधकार का जाल फैलने लगा तब चिंतित जाति सोचने लगी कि अब क्या होगा? तब स्वामी दयानन्द की पावन ज्योति से प्रकाश प्राप्त कर एक युवक जिसका नाम हंसराज था इस युवक ने निराशा की अंधेरी रात्रि को चीरकर समाज को एक नए प्रकाश पूर्ण दिवस का वरदान दिया। भले ही इस उजाले को प्रकाशित करने के लिए अपना जीवन बलिदान कर देना पड़ा।

महात्मा हंसराज जी चाहते तो अन्य सांसारिक लोगों की तरह उच्च से उच्च पद प्राप्त कर लाखों की सम्पत्ति जुटा लेते। लेकिन जाति की दुरावस्था ने उन्हें बलिदान के मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रेरित किया उन्होंने झांका कि हिन्दू युवक अपने सनातन वैदिक धर्म से अपरिचित होने के कारण ईसाइयों और मुसलमानों के तीव्र प्रचार और ईसाई संस्थाओं की आर्थिक सहायता से अपने धर्म से पतित हो रहे हैं। उन्होंने बढ़ता हुआ तूफान देखा और रुक न सके। कूद पड़े। सारी आयु निर्धनता, तपस्या और त्याग में बिताते हुए संसार के कल्याण के लिए धर्म, देश और जाति की सेवा का प्रण लिया। होश सम्भालने से लेकर अपने जीवन के अंतिम क्षण तक उन्होंने हर श्वास के साथ देश से अज्ञानता को दूर करने का प्रयत्न किया। भारतवर्ष के लोगों को संस्कारित करने और दुःखों, भूकम्प, अकाल, महामारी पीड़ितों की सेवा सहायता करने के लिए वह सदा तत्पर रहे। जीवन के 74 वर्षो में से 58 वर्ष उन्होंने परोपकार में ही बिताए। दयानन्द कॉलेज को सफल बनाने के लिए उन्होंने 1885 में अपना जीवन अर्पण किया और एक कौड़ी लिए बिना सर्दी, गर्मी , बीमारी, दुःख, गरीबी, कष्ट, विरोध की तनिक भी अपेक्षा किए बिना उन्होंने मृत्यु पर्यंत अपना प्रण निभाया।

उनकी निस्वार्थ सेवाओं और निष्काम प्रयत्नों से उन्हें हर क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिली। स्वभावतः कई लोग इस सफलता को सह नहीं सके, ईर्ष्या की आग में जलने लगे। इस आग की लपटें महात्मा जी तक भी पहुँची, परन्तु वह शीतल स्वभाव और पूर्ण दृढ़ता से अपने पथ पर अग्रसर रहे। इस बीच उन्हें कई प्रलोभन दिए गए। देश के नेतृत्व का स्वर्णिम स्वप्न दिखाया गया। प्रबल राजनीतिक आन्दोलन के समय उन्हें कहा गया कि यदि आप इसमें शामिल हो जाएँगे तो सारे देश के नेता बन जाएँगे। तब महात्मा जी ने केवल इतना ही कहा कि मैं नींव में पड़ने वाला पत्थर हूँ, रचनात्मक कार्य में लगा हूँ और इसी में लगा रहूँगा।

उनका सारा जीवन तप त्याग का जीवन है। धन–दौलत, सुख–सम्पदा, भोग–ऐश्वर्य सब त्याग दिया। गरीबी को निमंत्रण दिया। भाई द्वारा प्राप्त केवल चालीस रुपये मासिक पर गुजारा करते रहे। महात्मा जी ने एक भाषण में कहा था, मनुष्य जीवन का एक ध्येय होना चाहिए, एक केंद्र जहाँ पहुँच कर गर्व के साथ कह सके कि चाहे प्राण चले जाएँ, चाहे सब ओर नाश–विनाश नाचने लगे, तो भी लौटेगा नहीं, पीछे हटेगा नहीं। ऐसे स्थान पर ही मनुष्य का वास्तविक चरित्र और उसका असल मोल मालूम होता है। यह शब्द महात्मा जी के मुख से शोभा देते हैं, जिन्होंने जीवन को ध्येय मानकर जीवन पर्यन्त निर्वहन किया।

त्याग की साक्षात मूर्ति, सरलता एवं सादगी का सजीव चित्र, निरभिमानता के आदर्श हंसराज का जीवन अनुकरणीय है। नपे–तुले शब्द, एक अक्षर भी व्यर्थ नहीं बोलते थे। सागर की तरह गम्भीर, हिमालय की तरह निश्चल और चंद्रमा की तरह शांत, क्रोध पर उन्हें पूर्ण विजय प्राप्त थी, पूर्ण संयमी।

शिक्षा के संबंध में महात्मा जी का निश्चित मत था कि केवल अंग्रेजी शिक्षा हमारे नवयुवकों को पथ भ्रष्ट कर देगी। वर्तमान शिक्षा पद्धति से वह सहमत नहीं थे। प्राचीन शिक्षा पद्धति को वह सही समझते थे। 1908 में उन्होंने कहा, शिक्षा केवल अमीरों के लिए नहीं होनी चाहिए, बल्कि गरीबों और निस्सहाय व्यक्तियों के लिए भी शिक्षा वैसी ही आवश्यक है। इसलिए उनकी निःशुल्क शिक्षा का प्रबंध समाज अथवा सरकार की ओर से होना चाहिए तभी यह लाभप्रद हो सकेगी। संस्कृत के संबंध में आपका कथन था कि संस्कृत ज्ञान के बिना कोई भी आध्यात्मिकता की अतुल धनराशियों तक पहुँच नहीं सकता।

प्रभु भक्ति के संबंध में उन्होंने अनेकों लेख लिखे और भाषण दिए। महात्मा जी दृढ़ ईश्वर विश्वासी थे। इस विश्वास का सबूत लोगों ने तब देखा, जब दिल्ली षड्यंत्र केस में उनका बेटा कैद था। इतना बड़ा मुकदमा चल रहा था और घर में फूटी कौड़ी भी नहीं थी। धर्म पत्नी मृत्यु शैय्या पर थी। निराशा ही निराशा चारों ओर दिखाई देती थी। तब एक देवी ने कहा कि मालूम होता है ईश्वर कोई नहीं। यह सुनते ही महात्मा जी ने कहा, सावधान फिर ऐसा न कहना। भगवान है। वही हम सबके सच्चे हितैषी हैं। जो करेंगे, अच्छा करेंगे।

लोक सेवा, गरीबों, दुखियों, विधवाओं, अनाथों के लिए उनका घर सदा खुला रहता है। जो जाता संतुष्ट होकर लौटता है। आयु पर्यन्त किसी की बुराई का उन्होंने विचार नहीं किया। अपनी प्रणपूर्ति के लिए उन्होंने सर्वस्व त्याग दिया। एक बार आग में छलांग लगा कर पतंगे की तरह जल मरना निः संदेह वीरता है, शत्रुओं से लड़ते हुए मर मिटना पराक्रम है, पिस्तौल का निशाना बन जाना साहस है, लेकिन आजन्म पग–पग पर अपनी भावनाओं, उमंगों और लालसाओं को रौंदते रहना और अपने पथ से विचलित न होना सबसे बढ़कर वीरता, पराक्रम और साहस की बात है।

अग्नि आंच सहना सुगम,
सुगम खडग की धार।
नेह निभावन एकरस,
महा कठिन व्यवहार।।

शहीद राजपाल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,
दयानन्द विहार, नई दिल्ली

“ मानव-जीवन का एक लक्ष्य, स्तर, एक केन्द्र होना चाहिए जिस स्थान पर पहुँचकर वह अपना जीवन वार सके, अपने धन व माल और बाल-बच्चों को सुविधा से त्याग सके। एक ऐसा स्थान हो, जिस स्थान पर पहुँचकर उसे यह अभिमान (गर्व) हो कि वह यह स्थान नहीं छोड़ेगा। भले ही उसकी जान भी चली जाए, उसकी सन्तान और सम्पदा नष्ट हो जाए, परन्तु इस स्थान से वह एक पग भी पीछे नहीं हटाएगा। इस स्थान पर मनुष्य के चरित्र का पता चलता है, वहीं इसका महत्व प्रकट होता है। ”

- महात्मा हंसराज

thearyasamaj.org

with best Compliments

डी.ए.वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल, रोहतक

D.A.V. COLLEGE MANAGING COMMITTEE ओ३म् ESTD. 1886

(डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली द्वारा पूर्णतया नियन्त्रित)
Phone : 01262-344728 Website : www.davrohtak.in
E-mail : davrohtak.2008@rediffmail.com

वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के
वेद प्रसार, जन-जागरण आन्दोलन
की पावन बेला से प्रकाशमान,
अद्भुत व्यक्तित्व के धनी,
आदर्श शिक्षक, आदर्श त्यागी,
आदर्श तपस्वी

महात्मा हंसराज जी

की पुण्य स्मृति पर हमारा

कोटिशः नमन

महात्मा हंसराज जी
19.4.1864-15.11.1938

राजेन्द्र नाथ
चेयरमैन

महेश चोपड़ा
उप-चेयरमैन

जे.के.कपूर
प्रबन्धक

सुनीता जुनेजा
प्रधानाचार्या

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति द्वारा

महात्मा हंसराज समारोह 2014 के अवसर पर सम्मानित संन्यासी तथा विद्वान्

संन्यासी

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक का जन्म 22 दिसम्बर, 1959 को दिल्ली में हुआ। आपने योग, सांख्य, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त और मीमांसा, उपनिषद, ऋग्वेद और यजुर्वेद का अध्ययन किया है। 1986 से लगभग 20 वर्ष तक दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड, गुजरात में दर्शन, वेदादि शास्त्रों का अध्यापन किया एवं महर्षि पतंजलि के अष्टांग योग का प्रशिक्षण दिया। आप भारत के लगभग सभी राज्यों में दार्शनिक प्रवचन, ध्यान योग शिविर, जीवन विकास शिविर, दर्शन शास्त्रों की कक्षाओं, वेद-कथा आदि के माध्यम से वैदिक योग विद्या का प्रचार करते हैं। आप आध्यात्मिक शंका समाधान के विशेषज्ञ हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं और आपने तत्त्वज्ञान, दुःख, कारण और निवारण और शंका-समाधान नामक पुस्तकें लिखी हैं। आप इंग्लैण्ड और नेपाल में वेद-प्रचार का कार्य कर चुके हैं। आपको विभिन्न पुरस्कारों (1) डॉक्टर मुमुक्षु आर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति पुरस्कार, (2) स्वामी सत्यानन्द स्मृति पुरस्कार, (3) वैदिक प्रचार-प्रसार सम्मान, (4) आर्य विद्वान् दर्शन सम्मान, (5) वेद दर्शन प्रचारक संन्यासी सम्मान आदि से सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में आप दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड, गुजरात में निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।

सुश्री माता निर्मला योगभारती

सुश्री माता निर्मला योगभारती जी का जन्म आंध्र प्रदेश में धार्मिक एवं वैदिक संस्कार संपन्न परिवार में हुआ। प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चमाध्यमिक एवं महाविद्यालयीन शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् पाणनीय गुरुकुल, वाराणसी, में माननीया आचार्या प्रज्ञा देवी जी के सान्निध्य में रहकर व्याकरण, महाभाष्य का गहण अध्ययन किया। इसके पश्चात आप सामाजिक कार्य क्षेत्र में वेदों का प्रचार-प्रसार करने हेतु निकल पड़ीं। आपके जीवन का मुख्य उद्देश्य संसार को वैदिक मूल्यों के प्रति जागरुक बनाना है। आपने 19-11-1978 को धार्मिक गुरु स्वामी सच्चिदानंद योगी जी से संन्यास की दीक्षा ली। आपने योगधाम हरिद्वार, योगनिकेतन-ऋषिकेश इत्यादि स्थानों में साधना कर बोनटापल्ली, तेलंगाना में पतंजलि योगपीठ की स्थापना की। इसके अतिरिक्त आपने 1981 में बोनटापल्ली, मेढक, तेलंगाना में पतंजलि योगमठ एवं सच्चिदानंद गौशाला की स्थापना की। वर्ष 2000 में नारायणगुड़ा, हैदराबाद में ध्यानयोग केन्द्र की स्थापना। गण्डीपेट, हैदराबाद में श्री वेणुगोपाल स्वामी गौशाला की स्थापना की। 2006 में महबूबनगर, तेलंगाना में नंदी आनंद गौशाला की स्थापना की। 2002 में आपने स्त्री शक्ति संगठन स्थापित किया।

आप युवा पीढ़ी में वैदिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए हर वर्ष समर कैंप का आयोजन करती हैं। विद्यालय तथा महाविद्यालय में जाकर बच्चों को नैतिक शिक्षा, वेद-वेदांगों के महत्व पर प्रवचन देती हैं।

स्वामी आर्यवेश

स्वामी आर्यवेश ने एम.ए., एल.एल.बी. हिन्दी ऑनर्स में तथा भाषा विज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा किया है। आपने आर्यसमाज की अनेक संस्थाओं में प्रधान, ट्रस्टी, कोषाध्यक्ष के पद पर कार्य किया है और अब भी कर रहे हैं। आपने 1972 में हरियाणा में अंग्रेज़ी हटाओ रोजगार दिलाओ का सफल नेतृत्व किया। जून, 1980 में दयानन्द कॉलेज, हिसार में दस दिवसीय ऐतिहासिक युवक शिविर का संयोजन किया जिसमें लगभग 1400 युवकों ने भाग लिया। वर्ष 1987 में स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में दिल्ली से देवराला तक आयोजित सती प्रथा विरोधी ऐतिहासिक पदयात्रा का संयोजन किया जिसके कारण आजादी के बाद पहली बार सती प्रथा के विरुद्ध कानून बना। आपके जीवन का मुख्य उद्देश्य सार्वदेशिक सभा एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के माध्यम से युवा पीढ़ी को देशभक्ति, चरित्र एवं आर्य समाज की विचारधारा से ओत-प्रोत करना है जिसकी इकाइयां भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देशों में कार्य कर रही हैं। आपने आर्यसमाज के उत्सवों, सम्मेलनों एवं महासम्मेलनों में देश के विभिन्न प्रदेशों में एक प्रखर वक्ता के रूप में से आर्यों विशेषकर युवाओं में नई स्फूर्ति एवं उत्साह पैदा किया है। आपको आर्यसमाज के ओजस्वी वक्ता, कुशल संगठनकर्ता, अनुभवी संयोजक एवं गम्भीर चिंतक के रूप में जाना जाता है। आप एक प्रभावशाली वक्ता ही नहीं बल्कि अच्छे लेखक एवं पत्रकार भी हैं। वर्तमान में आप आर्यसमाज की पत्रिका 'राजधर्म' के प्रधान संपादक हैं।

स्वामी सूर्यदेव

कृषक परिवार में जन्मे स्वामी सूर्यदेव ने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. (कैमिकल्स) की उपाधि प्राप्त की। आपने मानवाधिकार में स्नातकोत्तर उपाधि और एम.फिल. उपाधि प्राप्त की। आपकी योग, प्राकृतिक चिकित्सा और आध्यात्मिक उपदेश करने में विशेष रूचि है। बचपन से ही आप पारिवारिक संस्कारों के कारण और स्वामी दयानंदजी के चरित्र और उपदेशों के प्रभाव में रहे और आपने बी.एस.सी. की परीक्षा समाप्त करने के बाद छोटी आयु में ही संन्यास ले लिया। आप भारतवर्ष और विदेशों में बहुत जगह प्रचार-प्रसार करते रहे हैं और अंत में आपने पंजाब को अपने आध्यात्मिक और सामाजिक उन्नति के कार्यों के लिए चुना है।

स्वामी सूर्यदेव जी को पंजाब और उत्तर भारत में एक आध्यात्मिक विभूति के रूप में अत्यंत आदर दिया जाता है। आप अनेक विद्यालयों और महाविद्यालयों में जाकर आध्यात्मिक उपदेश करते हैं और महर्षि दयानंद का संदेश जन-जन तक पहुंचाते हैं। आपके मार्गदर्शन में सामूहिक विवाह का आयोजन किया जाता है जिससे गरीब परिवारों की कन्याओं को जीवन जीने का अवसर प्राप्त होता है।

स्वामी धर्मदेव

स्वामी धर्मदेव का जन्म 12 सितम्बर, 1965 को हुआ था। आपने आचार्य बलदेव, स्वामी सत्यापति, आर्यवन, रोजड, गुजरात, से गुरुदीक्षा ली। आपको दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्यकी उपाधि प्राप्त है। 17 जून, 1989 को मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, गृहत्याग कर गाजियाबाद संन्यास आश्रम में पहुंचे जहां स्वामी यज्ञानन्द से संस्कृत पढ़ने की शिक्षा ली। अपने विद्यार्थी काल के दौरान गुजरात में जो भूकम्प आया था, ने घायलों की दिन-रात सेवा की, भिक्षा करके भी अन्न, वस्त्र आदि इक्ट्ठे करके जरूरतमंद लोगों में बांटे। तदुपरांत गुरुकुल कालवा में पहुंचकर वहां योग शिविरों एवं वैदिक प्रचार-प्रसार का कार्य आरंभ किया। आपने वैदिक सिद्धांतों एवं योग के प्रचार-प्रसार हेतु विदेशियों की मांग पर जर्मन, हालैंड, डेनमार्क, स्वीडन तथा अमेरिका आदि देशों में अनेकों कार्यक्रम भी किए हैं। आपने सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संचालक आचार्य देवव्रत से योगाचार्य, शास्त्राचार्य की उपाधि प्राप्त करके पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड आदि अनेक प्रान्तों में योग शिविरों का आयोजन किया। अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन, अमेरिका में भारत के योग गुरु प्रतिनिधि के रूप में भाग लेकर उपनिषदों पर प्रवचन शंका समाधान प्रशिक्षण दिया। वर्तमान में आप आर्ष महाविद्यालय के सचिव पद पर कार्यरत हैं।

thearyasamaj.org

विद्वान्

डॉ. महावीर अग्रवाल

डॉ. महावीर अग्रवाल का जन्म 9 अक्टूबर, 1951 को हुआ। आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, आगरा से एम.ए. (संस्कृत), एम.ए. (वेद) में तथा आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से एम.ए. (हिन्दी), एवं चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से पी.एच.डी. (संस्कृत), डी.लिट् (संस्कृत) की उपाधि प्राप्त की। आपने अनेक विश्वविद्यालयों में अध्यक्ष, निदेशक, कुलसचिव एवं आचार्य के पद पर कार्य किया है। वर्तमान में आप उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार में कुलपति के पद पर कार्य कर रहे हैं। आप के लेख समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं और आपने अनेकों पुस्तकों का लेखन एवं संपादन कार्य भी किया है। आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में 'वेद और वाल्मीकि रामायण' विषय एवं 'अन्तर्राष्ट्रीय वेद-विद्वत्त सम्मेलन' का सफल आयोजन किया। आप उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय की शोध-पत्रिका 'गुरुकुल पत्रिका' का 13 वर्षों से संपादन कर रहे हैं। आपने 2006 में अमेरिका में आयोजित 'विश्व वेद सम्मेलन' में भाग लिया। आपने भारत और विदेशों में वैदिक संस्कृति पर अनेक व्याख्यान भी दिये हैं।

आचार्या डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदा

आचार्या डॉ. सूयादेवी चतुर्वेदा का जन्म 1 अक्टूबर, 1958 को सोरो, प्रहलादपुर, एटा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। आपने प्रारम्भ से पांचवीं तक सोरो प्रहलादपुर, एटा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आपने संस्कृत एवं वैदिक वाङ्मय का गहनता से अध्ययन किया और चतुर्वेद एवं वैदिक वाङ्मय में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर से एम.ए. किया तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर से पी.एच.डी. में विद्यावरिधि की उपाधि प्राप्त की। आप गत 33 वर्षों से निरन्तर अवैतनिक अध्यापन करते हुए छात्राओं को वेद, दर्शन, निरुक्त, व्याकरण, महाभाष्य तथा सैद्धांतिक विषयों पर गहन अध्यापन और व्याख्यान द्वारा योग्यता व कुशलता से लाभान्वित कर रही हैं। आपकी नौ मौलिक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं और अनेकों पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। आपके अनेकों लेख वेद, विज्ञान, नारी, आर्यसमाज, दयानन्द, दर्शन, ज्योतिषादि विषय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आपने साहित्य की विभिन्न विधाओं में उल्लिखित महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की प्रगतिशील विचारधारा को आगे बढ़ाया है। आपको विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत भी किया जा चुका है। वर्तमान में आप पणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी में प्राचार्या एवं वेदपीठ, आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज, सिरोही के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से वेद-विषय में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आप पिछले 34 वर्षों से स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं में वेद, व्याकरण, भाषा-विज्ञान, नाट्यशास्त्र तथा काव्य-शास्त्र का अध्यापन कर रहे हैं। आप 15 वर्ष की आयु से लेकर आज 61 वर्ष की आयु तक भारत के लगभग सभी प्रांतों तथा नेपाल में आर्य समाज और वैदिक धर्म का प्रचार कार्य कर रहे हैं। आपके 250 से अधिक लेखों का प्रकाशन हो चुका है। आपने लगभग 15 पुस्तकों का लेखन एवं 18 पुस्तकों का संपादन कार्य भी किया है। आपके तीन दर्जन से अधिक शोध-पत्र प्रकाशित हो चुके हैं तथा अनेक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में आपकी सहभागिता है।

आचार्य राजू वैज्ञानिक

आर्यसमाजी परिवार में जन्मे आचार्य राजू वैज्ञानिक ने दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी में ग्रेजुएशन किया और पंजाब विश्वविद्यालय से साहित्य तथा दर्शन में पोस्ट-ग्रेजुएट तथा गोरखपुर से प्राकृतिक चिकित्सा में डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की। आपने तीन वर्ष नैरोबी में आचार्य के पद पर रहकर वेद-प्रचार का कार्य किया। पारिवारिक संस्कारों के कारण आप पिछले बाइस वर्षों से देश और विदेश में वेद प्रचार का कार्य कर रहे हैं। इसके लिए आपने अमेरिका, इंग्लैण्ड, सिंगापुर, नैरोबी आदि अनेक देशों का भ्रमण किया। प्रतिवर्ष आपको किसी ने किसी देश में वेद-प्रचार के कार्य हेतु जाने का अवसर मिलता है। हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और पंजाबी में आपको विशेष रूप से ज्ञान प्राप्त है। आपको दिल्ली, पंजाब समेत पूरे भारत में आध्यात्मिक वक्ता के वेद-प्रचारक के रूप में ख्याति प्राप्त है। भिन्न-भिन्न सभा-संस्थानों में जाकर आप वेदों द्वारा वेद और आर्यसमाज का प्रचार करते हैं। आध्यात्म, दर्शन और वेद में रूचि रखने वाले लोग आज भी आपसे जुड़े हुए हैं। आपने अपने कार्यकाल में पंद्रह से अधिक वेद प्रचार शिविर आयोजित किए। आपकी हिन्दी और अंग्रेज़ी में लगभग सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इन दिनों आप चारों वेदों का हिन्दी काव्यानुवाद कर रहे हैं।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

डॉ. सुरेन्द्र कुमार का जन्म 1 जनवरी, 1964 को मथुरा, उत्तर प्रदेश में हुआ। इन्होंने 1981 में गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार से ग्रेजुएशन करने के बाद, 1983 में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार से संस्कृत में एम.ए. किया और 1987 में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आपने 1983-1988 तक गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में अध्यापन किया। आपकी वैदिक साहित्य और भारतीय दर्शन पर दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने वेद एवं दयानन्द दर्शन पर भारत के विभिन्न राज्यों एवं विदेशों में अनेकों शिविरों में व्याख्यान देकर लोगों को लाभान्वित किया है। वर्तमान में आप महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में संस्कृत विभाग तथा दयानन्द पीठ के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

ओ३म्

thearyasamaj.org

नव युवकों के प्रेरणा स्रोत
पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी (2)

● डॉ. सहदेव वर्मा

गतांक से आगे– (पिछले अंक में आप पढ चुके हैं। कि पं. गुरुदत्त जी विद्वान व्यक्तियों को आर्य समाज में लाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते थे। इसी क्रम के अन्तर्गत उन्होंने चार नवीन वेदान्ती विद्वानों को आर्य समाज में दीक्षित किया। वेदान्त और उपनिषदों के मर्मज्ञ तथा संस्कृत के उद्‌भट विद्वान स्वामी अच्युतानन्द जी कैसे आर्य समाज के सभासद् बने ? अब आगे पढ़िये........)

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी के अब दो ही विशेष कार्य थे। प्रथम आर्य समाज के उत्सवों पर वैदिक धर्म का प्रचार तथा विद्वान व्यक्तियों को आर्य समाज में दीक्षित करना। उनके इस प्रभावात्मक प्रचार को देखकर पौराणिकों में काफी बेचैनी थी।

नवम्बर 1888 में पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी के परिश्रम, तप और निष्ठा से आर्य समाज के नभोमण्डल में स्वामी अच्युतानन्द नाम के पावन ज्योति–पुंज का प्रादुर्भाव हुआ। जो अपने विशाल साधु–मण्डल, समस्त सुख–सुविधा से सम्पन्न महन्त की गद्दी और आरामदायक आवास को ठुकराकर वैदिक–आदर्श के नायक महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज में सम्मिलित हो गये। पाठकों की जानकारी के लिए यह भी बता दें कि ये वे ही स्वामी अच्युतानन्द जी हैं, जो नवीन वेदान्त शिरोमणि उपनिषदों के उद्‌भट संन्यासी थे, जिन्होंने कई वर्ष पहले स्वयं महर्षि दयानन्द जी के साथ शास्त्रार्थ किया था, वह साधारण योग्यता का व्यक्ति तो हो ही नहीं सकता। जिस हठीले स्वामी अच्युतानन्द ने ऋषि से पराजित होकर भी पराजय स्वीकार नहीं की थी, आज वहीं ऋषि के शिष्य की अमित निष्ठा से प्रभावित होकर उसी डगर पर चल पड़ा है।

आर्य समाज के तत्कालीन नेता पण्डित चमूपति जी ने एक साक्षात्कार में स्वामी अच्युतानन्द जी से पूछा कि 'स्वामी जी' नवीन वेदान्त विषय पर आपका शात्रार्थ महर्षि दयानन्द से हुआ था, उसका कुछ वृत्तान्त सुनाइये।' दो क्षण के बाद स्वामी जी ने सगर्व कहा–'मैं अपनी शिष्य मण्डली सहित पण्डाल में पहुँचा। ''और मेरा ऋषि?'' बस इतना सुनना था, कि एकदम विद्वान संन्यासी का बाँध टूट गया। वे फफक पड़े। आँखे अश्रुपूरित हो गईं, हृदय की वेदना आँखों से बह निकली, गला रुंध गया। भर्राई हुई आवाज़ में बड़ी मुश्किल से इतना ही बोल पाये– 'ऋषि। वह प्यारा ऋषि!! ''वह ऋषि तो केवल अपने प्रभु के साथ पधारे थे। यह कहते स्वामी अच्युतानन्द जी बिलख बिलखकर रो पड़े।''

आज वही वेदान्ताचार्य संन्यासी मानो ऋषि से उऋण होने के लिये आर्य समाज में आये हैं। यह था, पण्डित गुरुदत्त का प्रताप ! 26 दिसम्बर को प्रातः स्वामी अच्युतानन्द का नवीन वेदान्त के खण्डन में संस्कृत में व्याख्यान हुआ। मन्दिर का भवन श्रोताओं से खचाखच भरा था, जिसमें पौराणिक विद्वान भी काफी संख्या में उपस्थित थे। एक पौराणिक विद्वान ने कहा, 'आप अपने ही पूर्व रचित भाष्य को तो देखिये, उसमें क्या लिखा है? 'ठीक है, अब मैंने अपने उस भाष्य में संशोधन कर लिया है।' बस फिर क्या था। हाल में सन्नाटा छा गया।

पौराणिकों ने सनातन धर्म का प्रचार करने के लिए धर्म महासभा का निर्माण किया। उसी का उत्सव था। दिसम्बर 1888 में धर्म महासभा के उत्सव में पण्डित गुरुदत्त जी भी पहुँचे, तो वहाँ कपूरथला निवासी दीवान रामजस जी, जिनकी पौराणिकों में अच्छी पैठ थी, उन्होंने पण्डित जी से बातचीत के दौरान कहा– 'जब दोनों संस्थाओं की धर्म प्रस्तुत एक ही है (संभवतः उनका तात्पर्य वेदों से था) तो फिर क्या मेल संभव नहीं? ' पण्डित जी ने उत्तर में कहा– 'दीवान साहब, असम्भव तो नहीं, पर सारी समस्या समझने के लिए आप पहले आज रात को मेरा भाषण सुनिये, तब फिर कल बातें करेंगे, शायद कुछ बात बन जाये।' दीवान जी ने रात को समाज मंदिर में पधारने का वचन दे दिया। जब पौराणिकों को यह पता चला तो हलचल मच गई। उन्हें यह चिन्ता सताने लगी कि दीवान साहब ने यदि गुरुदत्त का भाषण सुन लिया तो कहीं वह भी 'आर्य समाजी' न बन जायें। अब क्या करें? उधर दीवान जी शाम को अपनी बग्घी में सवार होकर आर्य समाज मंदिर के सामने जैसे ही बग्घी से उतरने लगे तो पीछे आते हुए धर्म महासभा के प्रसिद्ध श्री अछरूमल मिश्र ने दीवान जी के पैर पकड़ लिये और कहा कि– 'यदि आपने गुरुदत्त का भाषण सुन लिया तो आपकों ब्रह्महत्या का पाप लगेगा।' विवश होकर दीवान जी को वापिस जाना पड़ा। इस हठधर्मी से एक शुभ कार्य हाते–होते रह गया। पर कोई धर्म के इन ठेकेदारों से पूछे कि सत्य के प्रकाश से इतना भय? क्या दूसरे की बात सुनने का भी साहस नहीं?

सन् 1888 का वर्ष पण्डित गुरुदत्त जी के लिए अत्यन्त व्यस्तता भरा था। वे वैदिक–विज्ञान सम्बन्धी एक ठोस ग्रन्थ लिखना चाहते थे, परन्तु यह कार्य अत्यन्त श्रम साध्य था। अतः उन्होंने एक विस्तृत निबन्ध– 'The Terminology of the Vedas' (वैदिक संज्ञा विज्ञान) पुस्तक रूप में प्रकाशित कराया। इस निबन्धात्मक पुस्तक को लिखते हुए उन्हें कुछ कमी अनुभव हो रही थी। अतः इस श्रृंखला की पूर्ति के लिए उन्होंने The Terminology of the Vedas and Europeon scholars' (वैदिक संज्ञा विज्ञान तथा यूरोपीय विद्वान) नामक दूसरा निबन्ध प्रकाशित कराया। इन दोनों ही निबन्धात्मक पुस्तकों में वेद भाष्य की शुद्ध आर्ष शैली का प्रतिपादन किया गया है। साथ ही मैक्समूलर और मोनियर–विलियम्स आदि द्वारा किये गये अर्थों की अशुद्धियाँ प्रदर्शित की गई हैं।

इन गम्भीर पुस्तकों के द्वारा यूरोप में विशेषकर फ्राँस, जर्मनी और इंग्लैण्ड में पण्डित गुरुदत्त की ख्याति फैल गई। एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह हुई कि 'वैदिक संज्ञा विज्ञान' 'The Terminology of the Vedas' पुस्तक तो 'ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी–में डिग्री कक्षा के लिए संस्कृत की पाठ्य पुस्तक निर्धारित की गई। तनिक कल्पना कीजिये, गुलामी के उस युग में जब भारतीयों को काला, कुली, काफ़िर, आदि शब्दों से पुकारा जाता था, तब एक चौबीस वर्षीय भारतीय युवक की पुस्तक को विश्व–विख्यात विश्वविद्यालय में इतनी मान्यता मिल जाना कोई साधारण बात नहीं थी। निस्सन्देह यह दयानन्द, आर्य समाज और पूरे भारत राष्ट्र का अभिनन्दन था।

ऋषि दयानन्द के निधन के पश्चात् आर्य समाज के लिए कठिन परीक्षा की घड़ियाँ आईं। 'आर्य समाज लाहौर' उन दिनों आर्य समाज की गतिविधियों का केन्द्र था। सन् 1889 में कई विषयों पर आर्यों में आपस में मत भेद उत्पन्न हो गये। आरम्भ में आर्य समाज की बागडोर अंग्रेजी पढ़े लिखे उन लोगों के हाथों में थी, जिन्होंने विचारों की स्वतंत्रता का पाठ पश्चिम से सीखा। वे हिन्दू धर्म की दकियानूसी परम्पराओं और रूढ़ियों को पसन्द नहीं करते थे, अतः वे ऋषि दयानन्द के तर्क और युक्तियों से प्रभावित होकर आर्य समाजी बने। परन्तु दूसरी प्रकार के वे लोग थे, जो बचपन से ही ऋषि की विचार धारा को आत्मसात् करके आर्य समाजी बने, और जिनका झुकाव वेद,संस्कृत भारतीय संस्कृति तथा ईश्वर भक्ति की ओर था। पहली प्रकार के महानुभावों ने आर्य समाज के भव्य–शरीर को तो देखा, परन्तु उनकी दिव्य आत्मा की ओर उनकी दृष्टि न के बराबर गई। उन्होंने आर्य समाज की देश सेवा तथा समाज सुधार की भावना को तो स्वीकारा, परन्तु वैदिक–अध्यात्मवाद को वे गहराई से न देख सके। दूसरे प्रकार के आर्य समाजियों के नेता पण्डित गुरुदत्त थे।

विचारों की यह टकराहट डी.ए.वी. कॉलिज में पहली बार उजागर हुई । स्पष्ट है, कि कॉलिज के नाम में 'वैदिक' शब्द प्राचीन भारतीय संस्कृत का, तथा 'एंग्लो' पाश्चात्य शिक्षा का प्रतीक था। कॉलिज के संस्थापकों में गुरुदत्त वैदिक (पौर्वात्य) संस्कृति के प्रतिनिधि थे तथा लालचन्द जी एंग्लो (पाश्चात्य) सभ्यता के। विचारों की यह टकराहट कॉलिज के पाठ्यक्रम को निर्धारित करते समय खुलकर सामने आ गई। पं. गुरुदत्त कॉलिज में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का पठन–पाठन चाहते थे। वह कॉलिज की ऐसी सर्वप्रियता के पक्ष में नहीं थे, जिसमें संस्कृत की शिक्षा की उपेक्षा हो। उन्होंने कॉलिज के लिये धन जनता से एकत्र की। वेद तथा संस्कृत की शिक्षा के नाम पर किया था। इसलिए वे स्कूल तथा कॉलिज में इनकी पढाई का समुचित प्रबन्ध कराना अपना नैतिक कर्तव्य समझते थे। दूसरी ओर श्री हंसराज, लालचन्द्र तथा साईंदास आदि का विचार था कि संस्कृत की शिक्षा के लिए फिलहाल इससे अधिक कुछ नहीं किया जा सकता।

इस प्रसंग में इस बात का तो औचित्य है, कि डी.ए.वी. ऋषि दयानन्द का स्मारक था इसलिये ऋषि के आदर्शों के अनुरूप तो उसे होना ही चाहिए था। पं. गुरुदत्त धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति थे, अतः प्रत्येक बात को अध्यात्मवाद की कसौटी पर कसते थे। लाला साईदास आदि राष्ट्रीय दृष्टिकोण को अधिक महत्व देते थे। गुरुदत्त वेद के उपासक थे, तो साईंदास हिन्दुत्व के। गुरुदत्त कॉलिज में प्राचीनता की प्रतिष्ठा चाहते थे, तो साईंदास अर्वाचीनता की। गुरुदत्त आदर्शवादी थे, तो साईदास यथार्थवादी। गुरुदत्त धर्म की मूर्ति थे, तो साईंदास जाति की।

इस प्रकार आर्य समाज में कॉलिज को लेकर जो विवाद चला तो वे दोनों प्रवृत्तियाँ आज तक कमोबेश रूप में आर्य समाज में विद्यमान हैं। एक ने कॉलिज को जन्म दिया, तो दूसरी ने गुरुकुलों को। वैसे दोनों की ही अपनी–अपनी उपयोगिता रही है। उधर पौराणिकों ने धर्म महा मण्डल की स्थापना की और सब जगह इसकी शाखाएँ खोलीं। पंजाब

thearyasamaj.org

में इसके मंत्री श्री दीन दयालु शर्मा नियुक्त हुए। वे अच्छे वक्ता थे, तथा दोहे चौपाई आदि से श्रोताओं को आकर्षित कर लेते थे। वे लाहौर में भी आये तो मृतक श्राद्ध तथा मूर्ति पूजा के प्रचार में लग गये। आर्य समाज की ओर से स्वामी अच्युतानन्द जी तथा पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने उन्हें शास्त्राथार्थ की चुनौती दी। पं. दीनदयालु जी एक दम मन्तव्य को सिद्ध करने में असफल रहे और वे शीघ्र ही लाहौर से पलायन कर गये।

इधर पौराणिक अपनी पराजय को भूल नहीं पा रहे थे। अतः उन्होंने स्वामी केशवानन्द जी को बुलाया। वे विशाल साधु मण्डली को साथ रखते थे, तथा स्वयं चार घोड़ों की बग्धी में चलते थे। वे पूरे ताम झाम के साथ लाहौर पधारे। वेदों के सम्बन्ध में बोलते हुए उन्होंने वैदिक शब्दों को 'रूढ़ि सिद्व करने की कोशिश की, परन्तु पं. गुरुदत्त ने अपने एक व्याख्यान में इसका खण्डन करते हुए वैदिक शब्दों को यौगिक सिद्व किया।'

इस पर पौराणिकों ने शोर मचाया कि गुरुदत्त को तो संस्कृत का ज्ञान ही नहीं है, न वह संस्कृत में भाषण देने की योग्यता रखता है। फिर क्या था पं. गुरुदत्त ने बिना किसी तैयारी के एक घण्टे से भी अधिक शुद्ध एवं धारा प्रवाह संस्कृत में आर्य समाज की ओर से संस्कृत में शास्त्रार्थ करने का भी ऐलान कर दिया गया। अब तो श्री केशवानन्द को आना पड़ा और उन्हें पराजय का मुख देखना पड़ा। अगले ही दिन वे भी लाहौर से कूच कर गये।

जहाँ तक पं. गुरुदत के व्यक्तित्व का प्रश्न है, वे शान्त स्वभाव, मेधावी, प्रतिभाशाली, तथा गम्भीर चिन्तक थे। वे आध्यात्मिक दर्शन के प्रति समर्पित थे। वे बाहरी सम्मान के भूखे नहीं थे, और न कभी धन के पीछे दौड़ते थे। लाहौर में आकर जो छोटा सा मकान पढ़ाई करते समय उन्होंने किराये पर लिया था, उसी में पढ़े, उसी में पढ़ाया, उसी में ज्ञान विज्ञान की अनेक पहेलियों को सिद्व किया, और उसी में महाप्रयाण की ओर प्रस्थान किया।

प्रकृति के नियम अटल हैं। वह किसी के साथ रू–रियायत नहीं करती। पं. गुरुदत्त में जहाँ अनेक सद्गुण थे, वहाँ वे प्रकृति के नियमों से भी स्वयं को मुक्त रखना चाहते थे, पर यह तो असम्भव है। खाने, पीने, सोने, जागने, लिखने, पढ़ने, ओढ़ने, पहनने, कहाँ तक कहें जीवन को सामान्य रखने के जितने भी कार्य अनिवार्य हैं, पं. गुरुदत जी ने उनकी कभी परवाह नहीं की, और उसका परिणाम उन्हें भुगतना पड़ा। यही कारण था कि छब्बीस वर्ष की आयु पूरी नहीं हुई और वे सितम्बर 1889 में नजला–जुकाम, ज्वर, खाँसी तन के सारे दुश्मन मन के दुर्ग पर चढ़ आये, और सबने मिलकर आक्रमण कर दिया। मित्रों के आग्रह पर जलवायु परिवर्तन के लिए 'मरी' पर्वत पर जाने का निश्चय किया। वहाँ गये भी, पर रोग बढ़ता ही गया। उधर आर्य समाज पेशावर का उत्सव निकट था, वहाँ जाने को तैयार हो गये। मित्रों को अनिष्ट की आशंका थी, पर वे नहीं माने। वहाँ से लाहौर के उत्सव में सम्मिलित हुए। अब तो उठना बैठना भी दूभर हो गया।

अनेक वैद्यों, डाक्टरों तथा चिकित्सा विशेषज्ञों को दिखलाया पर वही बात है कि– 'इलाज रोग का तो है, पर मौत का.....? जब भक्तों ने प्रेमियों ने, शुभ चिन्तकों ने देखा कि हंस उड़ने की तैयारी में है, तो किसी ने पूछा– ''पं. जी आप ऋषि की जीवनी लिखने की तैयारी कर रहे थे, वह सामग्री कहाँ?'' गुरुदत्त जी ने जो जवाब दिया, वह दिल को छूने वाला है। कहा मित्रों! मैं ऋषि का जीवन कलम और स्याही से कागज़ पर नहीं–प्राणों के द्वारा रक्त से हृदय पर लिख रहा हूँ।'' अब कहने को बाकी रह ही क्या गया? 19 मार्च सन् 1890, समय प्रातः 6 बजे। नभ का सूरज उदय हुआ परन्तु भूमि का भास्कर अस्त हो गया। सरोवर का जल तरंगित था, पर मानस का हंस उड़ चुका था। अब बचा था, रुदन, दिलों में टीस, आँखों में आँसू और प्यारे गुरुदत्त की कभी न भूलने वाली याद.........

दुनिया वालों दुनियाँ की रवानी रह जायेगी।
प्यारे गुरुदत्त की कहानी रह जायेगी।।

24/4 विशन स्वरूप कॉलोनी
पानीपत – 132103

प्रेरक वचन

"वेदों के स्वाध्याय का यह अर्थ नहीं कि वह वैदिक शब्दों की छानबीन करता रहे, अपितु वह मन्त्रों का स्वाध्याय करके, उनके साधारण अर्थों को भी समझे और उन्हें बारम्बार दुहराकर अपनी आत्मा में वैदिक भाव (Spirit) को प्रविष्ट करें।

•

प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपने नगर, कस्बा, ग्राम तथा कुल में एक बढ़िया उदाहरण बने और वेदों के प्रकाश को सामने रखे जो सहस्त्रों वर्षो के पश्चात् स्वामी दयानन्द ने पुनः प्रसारित किया है।

•

यदि हमारे कर्म ऊँचें होंगे तो हम मुक्ति पाएँगे, अन्यथा नहीं। आर्यसमाज की सदस्यता हमें मुक्ति नहीं दिलाएगी। मुक्ति तो हमारे शुभ कर्मो तथा पवित्र आचरण पर निर्भर है। कर्म भी एक यज्ञ है।"

•

– महात्मा हंसराज

thearyasamaj.org

जब सन्त जन आते हैं तब संस्कृति मुस्कुराती है

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

जब बसन्त आता है तब प्रकृति मुस्कुराती है। और जब सन्त जन आते हैं तब संस्कृति मुस्कुराती है।।

प्रकृति व्यग्रतापूर्वक प्रतीक्षा करती है कि कब बसन्त आए और उसे मुस्कुराने का मौका मिले परन्तु इस मुस्कान को प्राप्त करने के लिए उसे पहले शीत की सिहरन झेलनी पड़ती है। इसी प्रकार जब सन्त, महापुरुष, ऋषि या विद्वत् जन इस धरा पर पदार्पण करते हैं तब संस्कृति मुस्कुराने लगती है परन्तु उसे भी पहले अभाव में जीना पड़ता है, सामयिक दुर्विचारों के थपेड़े झेलने पड़ते हैं तथा सामाजिक चीत्कार, हाहाकार आदि की तपिश सहनी पड़ती है। ये सब बातें सन्तों के पधारने की पृष्ठभूमि कही जा सकती हैं। भगवत् गीता में इसी तथ्य को 'धर्म की ग्लानि' और 'अधर्म का अभ्युत्थान' कहा गया है–

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।"

यह संस्कृति है क्या? यह है प्राचीन वैदिक विचार धारा का गोमुख, वेद, उपनिषद्, दर्शन, साहित्य आदि से टपकती विन्दु मुक्ताएँ, ऋषि–मुनियों की साधना का प्रतिफल, महापुरुषों के पावन चिन्तन का अमृत कलश तथा साहित्य मनीषियों की कलम की जादूगरी। यदि संस्कृति संत को उर्वर भूमि देती है तो संत उसमें नवीन उद्‌भावनाओं के फल–पुष्प उत्पन्न करते हैं। याद रखिए, सन्त जन भौतिक सुखों की प्राप्ति या अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए इस धरा पर नहीं आते अपितु पृथ्वी की दरिद्रता, अज्ञानता, आर्शसा, विषमता आदि को उनको बलात् अपनी और खींच लेती हैं। उनका कोमल हृदय दयार्द्र हो जाता है। अपना सुना ही होगा– "सन्त हृदय नवनीत समाना कहा कविन पर कहन न जाना। निज ताप द्रवे नवनीता, पर दुःख द्रवैं संत सुपुनीता।।" अर्थात् नवनीत (मक्खन) और संत में यही अन्तर है कि नवनीत तो अपने ही ताप (उष्णता) से पिघलता है परन्तु संतो का हृदय दूसरों के दुःखों से द्रवित होता है। सन्त की कोई कामना नहीं होती। वह तो मोक्ष की अभिलाषा भी नहीं करता। मोक्ष पाकर उसे मिलेगा भी क्या? वह तो अपने अकेलेपन से बोर हो जायेगा। उसे तो समाज चाहिए, ऐसा समाज जो पीड़ित हो, दुःखी हो, जहाँ वह उनके संताप को दूर कर सके। अतः संत यही कामना करता है–

"न त्वहं कामये राज्यं न सौख्यं न पुनर्भवम्।
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनां आर्ति नाशनम्।।"

अर्थात् न तो मुझे राज्य चाहिए और न मोक्ष। मैं तो दुःख संतप्त व्यक्तियों की पीड़ा को दूर करना चाहता हूँ।

किसी भी युग की कहानी हो, संत हृदय सब जगह मिल जाएगा। जब रामायण काल में राक्षस यज्ञों मे विध्न तथा ऋषियों को संतप्त करने लगे और सीता हरण के रूप में जब प्रकृति विलाप करने लगी तब मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी ने सीता पति के रूप में सीता को बन्धन मुक्त किया। यह बन्धन मुक्ति ही संस्कृति की मुस्कान है। यदि महाभारत काल पर विचार किया जाय तो 'सूच्यग्रं न दास्यामि विना युद्धेन केशव' के रूप में जब दुर्योधन की राज्य लिप्सा बढ़ने लगी तथा द्रोपदी चीर हरण के रूप में जब मानवीय मूल्यों का हास होने लगा, तब नीति पारंगत, संत स्वभाव का परिचय देते हुए योगिराज श्री कृष्ण ने निष्काम कर्म रूपी संस्कृति को जन्म दिया।

महाभारत काल के बाद भारतीय संस्कृति पर कठोर प्रहार हुए, अपनों से ही नहीं, परायों से भी। तथाकथित तत्काल ब्राह्मणों ने स्वार्थ पूर्ति के लिए वेदों के मनचाहे अर्थ लगाने शुरू कर दिए। वे 'वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति' कह कर यज्ञों में पशु बलि का समर्थन करने लगे, जिस कारण बौद्ध लोग वेद विरोधी हो गए। परिणामस्वरूप संस्कृति–संत के रूप में शंकराचार्य ने वैदिक संस्कृति की पुनर्स्थापना की।

अब बात करते हैं, आधुनिक काल की। कई बार संस्कृति पर अपसंस्कृति की परतें चढ़ जाती हैं और लोग ढ़ोंग–पाखंड, अन्धविश्वास और कुरीतियों को ही धर्म या संस्कृति का स्वरूप समझने लगते हैं। भारत में यही सब हुआ। पहले मुसलमानों और फिर अंग्रेज़ों के आधिपत्य के कारण देश का सांस्कृतिक गौरव मृतप्राय हो गया। जिस क्षेत्र में दृष्टिपात करते हैं, सर्वत्र निराशा थी। नारी घर की चार दीवारों में ही सिमट कर रह गई थी तथा उसे शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। अपने ही कुछ देशवासियों के साथ अस्पृश्यंता का व्यवहार किया जाने लगा। अपनी वैदिक संस्कृति को छोड़ कर भारतवासी पाश्चात्य संस्कृति की और आकृष्ट होने लगे। स्वदेश और स्वभाषा की उपेक्षा होने लगी। ऐसी विषम परिस्थिति में जिस महान संस्कृति उपासक सन्त का आविर्भाव हुआ, उसका नाम था महर्षि दयानन्द सरस्वती।

महर्षि के अनथक प्रयास से फिर वैदिक संस्कृति का अभ्युदय हुआ। घर–परिवारों में वैदिक ऋचाएँ गूँजने लगीं। यज्ञदि धार्मिक अनुष्ठान होने लगे। ढ़ोंग–अन्धविश्वास, असमानता अस्पृश्यता आदि की दीवारें ढ़हने लगीं। हिन्दी को आर्य भाषा मान कर उसका सम्मान किया गया। आर्य समाज ने अछ्तोद्धार, नारी शिक्षा प्रसार, वेद प्रचार आदि पर ध्यान केन्द्रित किया। ये सब महान कार्य तब हुए जब सन्त के रूप में महर्षि दयानन्द ने समाज का मार्गदर्शन और नेतृत्व किया।

महर्षि के अनथक प्रयास से फिर वैदिक संस्कृति का अभ्युदय हुआ। घर–परिवारों में वैदिक ऋचाएँ गूँजने लगीं। यज्ञदि धार्मिक अनुष्ठान होने लगे। ढ़ोंग–अन्धविश्वास, असमानता अस्पृश्यता आदि की दीवारें ढ़हने लगीं। हिन्दी को आर्य भाषा मान कर उसका सम्मान किया गया। आर्य समाज ने अछ्तोद्धार, नारी शिक्षा प्रसार, वेद प्रचार आदि पर ध्यान केन्द्रित किया। ये सब महान कार्य तब हुए जब सन्त के रूप में महर्षि दयानन्द ने समाज का मार्गदर्शन और नेतृत्व किया।

निस्संदेह सन्त हैं तो संस्कृति है। संस्कृति को संतों से शक्ति मिलती है। कई बार लम्बे समय बाद संस्कृति की बेल मुरझाने लगती है परन्तु अचानक किसी संत के पधारने से वह फिर से हरी–भरी हो जाती है। आधुनिक काल में महर्षि दयानन्द को सांस्कृतिक जागरण का पुरोधा कहा जा सकता है। क्या हमें अभी भी ऐसे संत की आवश्यकता नहीं है जिसे देख कर संस्कृति पुनः मुस्कुराने लगे?

230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर (हरिद्वार)
मो. 9639149995

"प्राणायाम करो, चित्त निर्मल होगा, इसको स्थिर रखने के लिए बार-बार प्रयत्न करो, यही अभ्यास है। चित्त की शुद्धता तथा परमात्मा के योग की तुलना में विषयों के सुख को तुच्छ समझो, यही वैराग्य है! इन दोनों साधनों से अपने भीतर बल ग्रहण करो तथा प्रभु की अनन्य भक्ति के अधिक योग्य बनो। इस प्रकार चित्त को रिक्त करके निर्मल परमात्मा का ध्यान करो, यही पूजन की विधि है।"

●●●

– महात्मा हंसराज

thearyasamaj.org

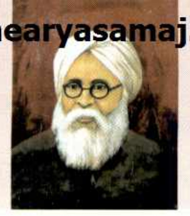

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. **U(C)-103/2012-14**
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 19-20/11/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० **39/57**

Celebrating 25 Years
1990 - 2015
HUMAN EXCELLENCE THROUGH COMPETENCE, CONSCIENCE & COMPASSION

D.A.V. PUBLIC SCHOOL

19, SITARAM NAGAR, VELACHERY, CHENNAI – 42.

CELEBRATING 25 GLORIOUS YEARS

"It's when ordinary people rise above the expectations and seize the opportunity, that milestones truly are reached."

*Leaving behind a trail of major triumphs, remarkable accomplishments powered with toil and diligence, D. A.V. Public School, Chennai, has stepped into its glorious **25th Year**.*

The School was founded in 1990 to carry forward the message of Swami Dayanand Sawarsati ji who gave a clarion call for a new orientation in education which has all the elements of contemporary science and technology yet deeply entrenched in the Vedic culture.

*Today, the School stands tall with an empire of over 3000 students and 140 Teaching and Non teaching staff members. The journey from a small rental premises at Cenotaph Road to "**State of the art**" campus at Velachery with over 44,000 sq.ft built up area, has been very exciting, challenging and rewarding.*

The credit for the phenomenal growth of the School goes to the illustrious dignitaries of D.A.V. College Managing Committee, who have guided the school towards the pinnacle of success.

*With overwhelming joy, we place on record that our School has received **'Accreditation'** from the C.B.S.E., New Delhi. Our School has the privilege of being the only School from South India to be accredited and is one of the 14 Pilot Schools selected from over 14,500 Schools in India and Abroad. This Accreditation has paved way for permanent affiliation. Accredited status ensures that School has met prescribed Quality Standards preset by C.B.S.E.*

The School enjoys a place of pride among the prominent City Schools. It has a treasure of several commendable accolades both in Scholastic and Co-Scholastic arena. The School has also equipped students to rub shoulders with their global counterparts at the International level.

The 25th year will be etched as a year of jubilation in which every staff and student would actively participate.

with best Compliments

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री एस.के. शर्मा** सभा मंत्री द्वारा, **श्री मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**

thearyasamaj.org

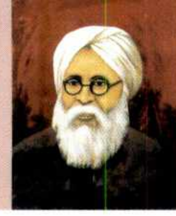

with best Compliments

DAV UNIVERSITY

Jalandhar-Pathankot National Highway-44, Sarmastpur, JALANDHAR-144 012

DAV University, the apogee of educational movement that began with the first DAV institute in 1886, is promoted by DAV College Trust and Management Society running 816 institutions in India.

COURSES OFFERED

- AGRICULTURE (B SC AGRICULTURE)
- ENGINEERING (B TECH/ M TECH)
- COMPUTER SCIENCE & APPLICATIONS (PGDCA/ BCA/ MCA/ MSC (CS)
- BASIC & APPLIED SCIENCES (B SC/ M SC)
- LANGUAGES (BA HONS ENGLISH)
- COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT (B COM/ M COM/ BBA/ MBA)
- PHYSICAL EDUCATION (B PED/ BACHELOR OF PHYSICAL EDUCATION)

Qualified & Experienced Faculty | Girls' / Boys' Hostels (AC Rooms Optional) | Wi-fi Campus
State-of-the-Art Infrastructure | Well-Equipped Labs | Rich Library | Bus Facility

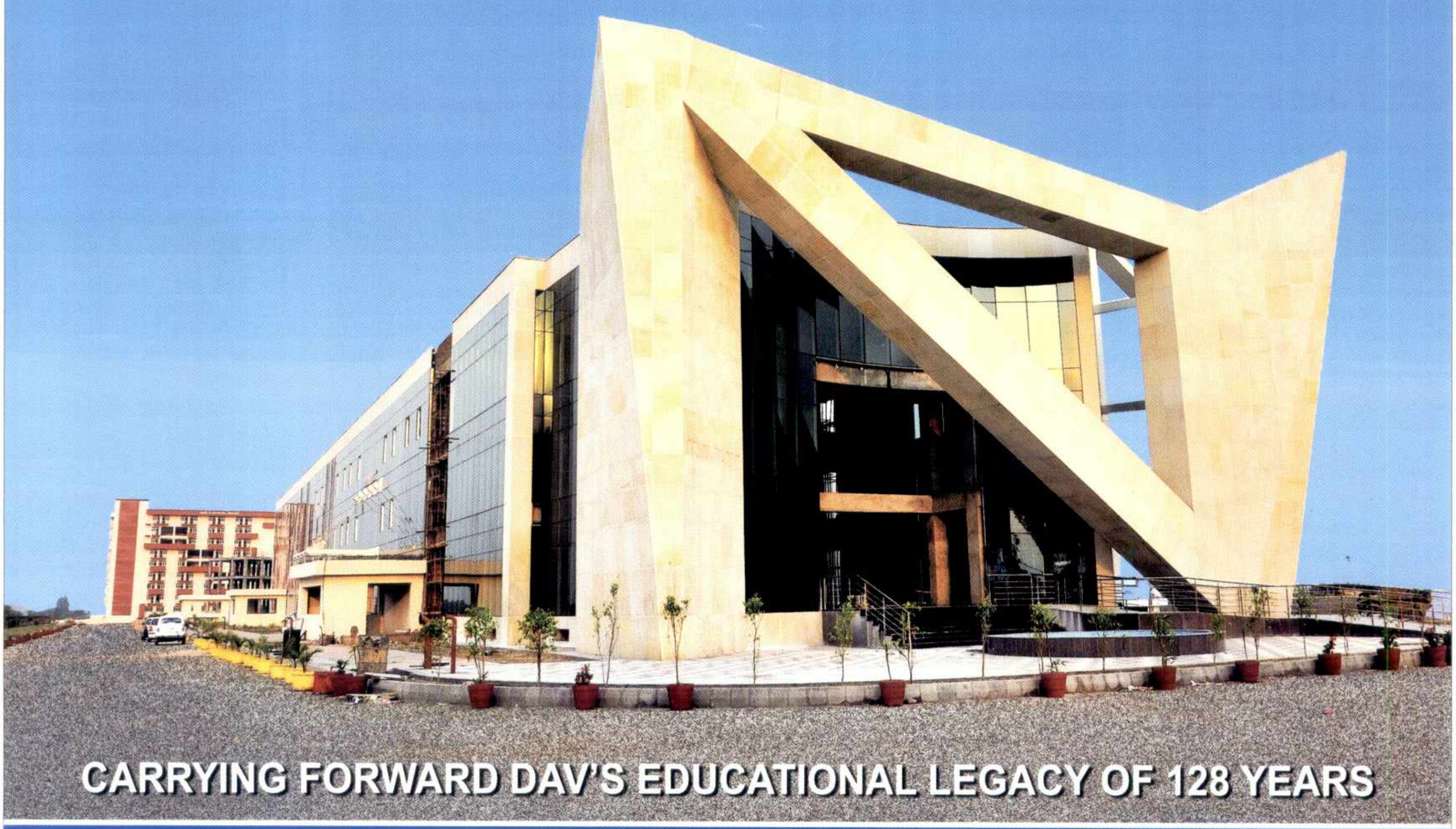

HELP DESK: 8195000352 & 0181-2708848

www.facebook.com/davuniv | www.youtube.com/davunivtv | www.twitter.com/davuniv

- Registrar